डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

तन्त्र साधनाएं

विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य और तान्त्रिक डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
की तन्त्र शास्त्र पर लिखी गई एक तार्किक एवं वैज्ञानिक रचना



तन्त्र साधनाएं

तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ और ज्योतिषाचार्य डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली की इस पुस्तक में तारा महाविद्या साधना, अन्नपूर्णा सिद्धि, श्री बटुक भैरव प्रयोग से लेकर ब्रह्मांड साधना, महाकाली साधना, वीर साधना, पारद शिवलिंग साधना, स्वप्नेश्वरी साधना, जैन तन्त्र साधना के अतिरिक्त परकाया प्रवेश, शक्तिपात एवं ब्रह्मत्वसिद्धि तथा शीघ्र सिद्धिदायक मन्त्र जैसी अनेक विधियां दी गई हैं।

तन्त्र साधनाएं साधु, संन्यासियों, योगियों, साधकों के लिए तो उपयोगी हैं ही, साथ ही जिज्ञासुओं और इस विद्या से लाभ उठाने की इच्छा रखने वालों के लिए भी बेहद उपयोगी हैं। ये विधियां एकदम प्रामाणिक एवं पूर्णतः वैज्ञानिक हैं।

सही मायनों में डॉ. श्रीमाली भारत की महान विभूति हैं और हमेशा उनकी पुस्तकों को अपार लोकप्रियता प्राप्त होती रही है।

डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली
के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

श्मशान भैरवी
हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियां
तन्त्र : गोपनीय रहस्यमय सिद्धियां
रहस्यमय अज्ञात तन्त्रों की खोज में
गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य
तन्त्र साधनाएं

सभी पुस्तकें हिन्द पॉकेट बुक्स से उपलब्ध
न मिलने पर पत्र लिखें।

तन्त्र साधनाएं

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली



हिन्द पॉकेट बुक्स



हिन्द पॉकेट बुक्स
भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स
उत्कृष्ट साहित्य का प्रतीक
सुन्दर • सुरुचिपूर्ण • सरल

तन्त्र साधनाएं (तन्त्र-शास्त्र)

नवीन संस्करण : 2006
पहला रिप्रिंट : 2007
दूसरा रिप्रिंट : 2008
तीसरा रिप्रिंट : 2009
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जे-40, जोरबाग़ लेन, नई दिल्ली-110003
लेज़र : ख़ुशी ग्राफ़िक्स, दिल्ली
मुद्रक : डॉट सिक्यूरिटी प्रेस प्रा. लि. प्रेस, नई दिल्ली-110028

TANTRA SADHNAYEN (A book of Tantra)
By Dr. Narayan Datt Shrimali

ISBN 81-216-0233-5
06/09/04/12/15/SM/AP/DSP/DSP/OP125/NP125

क्रम

पूर्वकथन

यह अद्वितीय पुस्तक पाठकों को समर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। एक प्रकार से देखा जाए तो यह साधनाओं का ख़ज़ाना है और इस पुस्तक का एक-एक शब्द साधकों के लिए वरदानस्वरूप है।

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली साधनाओं के क्षेत्र में अग्रगण्य रहे हैं। उच्च कोटि के योगियों और संन्यासियों में उनका अत्यधिक सम्मानजनक स्थान रहा है। इस पुस्तक में हिमालय की उन प्रामाणिक साधनाओं एवं सिद्धियों का समावेश किया गया है, जो अपने-आप में सर्वाधिक गोपनीय और दुर्लभ रही हैं।

इस पुस्तक में साधनाओं की सूक्ष्मता, गोपनीय विद्याओं की बारीकियां और सिद्धियों में सफलता प्राप्त करने के बारे में विस्तार से समझाया है। इसमें एक प्रकार के दुर्लभ ज्ञान को जिस सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, वह अपने-आप में सराहनीय है और इसके माध्यम से भारतीय साधक साधनाओं के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अग्रसर हो सकेंगे तथा सिद्धियां प्राप्त कर सकेंगे और अपने जीवन को पूर्णता दे सकेंगे।

भारतवर्ष में साधनात्मक साहित्य का अभाव है। यह पुस्तक उन साधकों के लिए प्रकाश-स्तम्भ का काम करेगी। इसके आलोक में साधक निर्विघ्न होकर आगे बढ़ सकेंगे और सफलता प्राप्त कर स्वयं का, समाज का और देश का कल्याण कर सकेंगे।

••

सद्‌गुरुदेव नारायणदत्त श्रीमाली की ज्ञान–यात्रा

वेद ही सभी प्रकार की विद्याओं के आदि स्रोत हैं। ऋषियों ने वेदों के आधार पर अपनी-अपनी व्याख्या उपनिषदों में स्पष्ट की और यही ज्ञान आगे चलकर पुराण संहिता आदि के रूप में स्पष्ट हुआ। जो ज्ञान हमारे प्राचीन ऋषियों ने दिया, वही ज्ञान मानव जीवन का आधार है। आज हम मानव सभ्यता के विकास की बात करते हैं। यह विकास उचित दिशा में हुआ है, लेकिन इसके साथ-ही-साथ जीवन का सार्वभौमिक सिद्धान्त —

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत ॥

अर्थात सारे व्यक्ति रोग-शोक से रहित हों, सब लोग अपने जीवन में प्रसन्नता का अनुभव करें और स्नेह में निरन्तर वृद्धि हो, दुःख का सदैव नाश होता रहे। यह सिद्धान्त वेदों में ब्रह्मा के श्रीमुख से उद्धृत है, लेकिन आज यह सिद्धान्त कहां फलित हो रहा है? उन्नति की इस अन्धी दौड़ में मनुष्य ने बाहर की यात्रा तो बहुत तेज़ी से की, नए-नए आविष्कार, दूरस्थ ग्रहों की यात्रा, विश्व में संचार सम्पर्क सब-कुछ बढ़ गया। जीवन के हर पक्ष के लिए विज्ञान ने नवीन रचनाएं कीं, लेकिन उससे भी महत्त्वपूर्ण स्थिति यह है कि क्या आधुनिक विज्ञान मनुष्य को अपने भीतर की यात्रा कराने में समर्थ हो सका? इतनी उन्नति के बावजूद संसार में असन्तोष, हिंसा, लूट-खसोट, व्यभिचार, अत्याचार, असुरक्षा की भावना बढ़ती ही जा रही है। आपसी प्रेम और सद्‌भाव क्यों कम हो रहा है? मनुष्य के जीवन में सुख के सभी उपकरण

हैं, लेकिन अन्तर्मन में आनन्द के उपकरण कहां खो गए? ये ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिनका समाधान हमारे वेदों, उपनिषदों में स्पष्ट है। ज्योतिष, आयुर्वेद, योग, साधना, तपस्या इन्हीं से निकली हुई शाखाएं हैं।

विज्ञान हमारी वैदिक संस्कृति में मूल रूप से विद्यमान रहा है, इसीलिए चरक जैसे महान चिकित्सक, सुश्रुत जैसे शल्य चिकित्सक, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे खगोलशास्त्री भी हुए हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धान्तों की स्थापना की। इन्हीं के साथ महान ज्ञानी ऋषि भी हुए हैं – शंकराचार्य, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, अत्रि, कणाद, वेद व्यास, जिन्होंने जीवन के सिद्धान्तों की व्याख्या की। उनके ज्ञान का मूल आधार यह था कि किस प्रकार मनुष्य अपने जीवन में जन्म से मृत्यु तक की यात्रा स्वस्थ चित्त के साथ कर सके। इसके लिए मन्त्रों की रचना हुई। तन्त्र विज्ञान अर्थात क्रिया विज्ञान का विकास किया गया और उसके लिए आवश्यक उपकरण यन्त्र का निर्माण हुआ। ब्रह्मांडीय शक्ति, जिसे देव शक्ति माना गया, उसके और मनुष्य के बीच तारतम्य बैठ सके, उसी हेतु साधना विज्ञान विकसित किया गया। ऋषियों का निश्चित सिद्धान्त था कि ब्रह्मांडीय शक्ति अनन्त है और इस अनन्त ऊर्जा से मनुष्य निरन्तर शक्ति प्राप्त कर सकता है। उस शक्ति को अपनी शक्ति के साथ संयोजन कर, योग कर वह जीवन के दुखों का निराकरण कर सकता है। देवी-देवता, सम्मोहन, आकर्षण, साधना, विज्ञान, मन्त्र, अनुष्ठान, यज्ञ, मुद्राएं इसी सिद्धान्त का प्रकट स्वरूप हैं। ऋषियों की परम्परा में इस साधना ज्ञान का विकास इस शताब्दी में नवीन रूप से अद्वितीय सिद्ध पुरुषों द्वारा किया गया है।

ऐसी ही विशेष दिव्यता के साथ हर युग में ईश्वरीय सत्ता का स्वरूप इस धरा पर महापुरुषों के रूप में प्रकट होता ही है, जो अपने ज्ञान, अपने जीवन चरित्र और अपनी चेतना द्वारा पूरे भूमंडल को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। ऐसे युगद्रष्टा मनुष्य के जीवन में ज्ञान की क्रान्ति लाते हैं, हमारे जीवन का यह सौभाग्य है कि इस घटाटोप अन्धकार भरे भौतिकता के आडम्बर में बंधी, अपने मूल मूल्यों से विमुख होती जा रही भारतीय संस्कृति को **सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त**

श्रीमाली जैसे महान व्यक्तित्व अवतरित हुए, जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण इस बात में व्यतीत हुआ कि किस प्रकार मानव-मूल्य उदात्त हो, व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं की इच्छा के अनुसार प्रसन्नचित्त जीवन जी सके, अपनी आत्मा का प्रकाश स्वयं देख सके और उसे हर समय यह पूर्ण विश्वास रहे कि उसके पास भौतिकता के साथ आध्यात्मिक सत्ता, ईश्वरीय शक्ति, आराध्य शक्ति, गुरु शक्ति सदैव है, जो उसे जीवन के गहरे अन्धकार भरे कुएं से बाहर निकालकर शुभ प्रकाश चेतना से आप्लावित अवश्य करेगी। उन्होंने यह मार्ग दिखाया कि भौतिकता और आध्यात्मिकता दो विपरीत ध्रुव नहीं हैं, दोनों का संगम मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है –

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुर्विद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ।।

सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली, जिनका संन्यस्त नाम **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** है, ने इस ज्ञान को जन-जन की भाषा में विस्तृत रूप से प्रदान करने हेतु अपने जीवन में संकल्प लिया। इसकी पूर्ति के लिए पूज्यश्री ने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया, उन अज्ञात रहस्यों की खोज की, जिनके कारण मानव जीवन परिष्कृत और मधुर बन सकता है। उन्होंने संसार में रहकर सांसारिक जीवन को भी पूर्णता के साथ जिया, क्योंकि उनका यह सिद्धान्त था कि गृहस्थ जीवन की समस्याओं के पूर्ण ज्ञान हेतु गृहस्थ बनना आवश्यक है। अनुभव प्राप्त कर ही शुद्ध ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित सैकड़ों ग्रन्थों में मनुष्य के जीवन में त्रास को मिटाकर सन्तोष और तृप्ति प्रदान करने की भावना निहित है। इसी क्रम में उन्होंने मन्त्र-शास्त्र, तन्त्र-शास्त्र, सम्मोहन विज्ञान, ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद आदि को वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप से स्पष्ट किया।

अपने जीवन की 65 वर्षों की यात्रा में मानव जीवन के लिए उन्होंने ज्ञान का अमूल्य भंडार खोल दिया, क्योंकि उनका कहना था कि ज्ञान ही शाश्वत है। इसी क्रम में उन्होंने सन् 1981 में 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' मासिक पत्रिका शुरू की, जिसके माध्यम से सारे रहस्यों को स्पष्ट किया। आज लाखों घरों में पहुंच रही इस ज्ञान प्रदीपिका ने भारतीय सांस्कृतिक

मूल्यों की धरोहर स्थापित कर दी है। यह पत्रिका ज्ञान का वह भंडार है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने के साथ-साथ जीवन को ऊर्ध्वमुखी गति प्रदान करने की दिशा में क्रियाशील बनाने का सार्थक प्रयास है।

अपना कार्य पूर्ण कर देने के पश्चात 3 जुलाई, 1998 को सांसारिक काया का त्याग कर वे परमात्मा के साथ अवश्य समाहित हो गए, परन्तु आशीर्वादस्वरूप उनके द्वारा स्थापित 'अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार' और 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' मासिक पत्रिका पूर्ण रूप से गतिशील है। उनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान ही इसका आधार है और ज्ञान की इस अजस्र गंगा में लाखों शिष्य सम्मिलित हैं। अपने पूज्य पिताश्री के मार्ग पर चलते हुए यह ज्ञान की गंगा निरन्तर प्रवाहित होती रहे, इसी दिशा में सदैव प्रयत्नशील हूं।

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
दूरभाष : 0291-2432209, 011-27182248

नन्दकिशोर श्रीमाली
सम्पादक
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

आसुरीकल्प साधना

उन दिनों मुझे धुन सवार थी कि मैं अज्ञात तन्त्रों की खोज करूं और उन बारह ग्रन्थों को ढूंढ़ निकालूं, जो संसार के अद्वितीय तान्त्रिक ग्रन्थ हैं, जिनका विवरण-वर्णन तो कई ग्रन्थों में आया है, पर जिन्हें देखने या पढ़ने का अवसर नहीं मिला। ऐसे ही ग्रन्थों में एक ग्रन्थ है 'आसुरी कल्प'।

इस अध्याय में उस दुर्लभ ग्रन्थ के बहुमूल्य हीरे बिखरे हैं, इन पन्नों पर, जो सौ टंच खरे प्रामाणिक और सिद्ध तन्त्र हैं। लेखक ने स्वयं इन तन्त्रों को सिद्ध किया है और अनुभव किया है, ये सभी तन्त्र स्वयंसिद्ध हैं।

अब तो कोई अभागा ही होगा, जो इन प्रयोगों को सिद्ध न करे।

जब मुझे परम पूज्य स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द ने तन्त्र दीक्षा दी थी, तब मुझे आदेश दिया था कि मैं उन तान्त्रिक ग्रन्थों को ढूंढ़ निकालूं, जो अब तक गोपनीय और दुर्लभ हैं, जिनका वर्णन तो कई ग्रन्थों में मिलता है, पर वे ग्रन्थ या तो कालकवलित हो गए या ऐसे स्थानों पर हैं, जहां पर आम साधक का पहुंचना सम्भव नहीं है। ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में एक है 'आसुरी कल्प'।

गुरु गोरखनाथ अपने समय के प्रसिद्ध आचार्य थे, जिन्होंने तन्त्र की उन ऊंचाइयों को पार किया था, जहां तक आज भी कोई नहीं पहुंच सका है। जिस प्रकार भगवत्पाद शंकराचार्य भगवान शिव के अवतार थे, ठीक उसी प्रकार त्रिजटा अघोरी गुरु गोरखनाथ के ही अवतार हैं। मुझे अपने जीवन

में एक बार अवश्य ही त्रिजटा अघोरी से मिलना था और तन्त्र के कुछ क्षेत्रों में उनका परामर्श लेना था।

इस पुस्तक की खोज में मैंने नेपाल का कोना-कोना छान मारा, तिब्बत के उन दुर्गम स्थानों पर भी गया, जहां सामान्य व्यक्ति का जाना लगभग असम्भव है। उन लामाओं से भी मिला, जो हिमालय के सुदूर क्षेत्रों में साधनाएं कर रहे हैं, पर इस पुस्तक का कहीं पता नहीं लगा, यद्यपि कई तान्त्रिकों ने इस पुस्तक की चर्चा भी की, यह भी ज्ञात हुआ कि गुरु गोरखनाथ ने अपने पूरे जीवन-रहस्यों का निचोड़ इस पुस्तक में दिया है और अपने अन्तिम काल में इस ग्रन्थ की रचना कर गोरखनाथ ने कहा था, "तन्त्र का यह अन्तिम ग्रन्थ है, जिसका एक-एक अक्षर अनुभव-सिद्ध और प्रामाणिक है। इसके आगे तन्त्र की कोई गति नहीं।"

जब मैं भटकता-भटकता थक गया, तो मर्यादा का उल्लंघन करता हुआ पूज्य श्रीमाली जी से मिला और कहा, "गुरुदेव, बिना आपकी कृपा के इस ग्रन्थ का प्राप्त होना लगभग असम्भव है। आप कोई मार्ग बताएं, जिस पर चलकर गुरु-वचनों का पालन कर सकूं और विश्व के अद्वितीय ग्रन्थों को ढूंढ़ निकालूं।"

उन्होंने मुझे योग-बल से ज्ञात कर बता दिया कि इस समय त्रिजटा अघोरी कहां पर हो सकते हैं और साधनात्मक दृष्टि से उन्हें संकेत भी दे दिया कि जब मैं वहां पहुंचूं, तो वह मुझसे मिल लें। मैं गुरुदेव की अनुमति प्राप्त कर गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ गया। अब इस बात का भरोसा ही नहीं रहा कि गुरु गोरखनाथ प्रणीत 'आसुरी कल्प' ग्रन्थ इस जीवन में प्राप्त होगा, पर मेरी यह इच्छा अवश्य पूरी होने जा रही थी कि मैं विश्वविख्यात त्रिजटा अघोरी से भेंट कर सकूंगा और कुछ क्षण उनके साथ व्यतीत कर सकूंगा।

जब मैं सत्रह दिन के दुर्गम रास्ते को पार कर मानसरोवर के रास्ते पर भारत की सीमा में हिरणाक्ष पहाड़ी पर पहुंचा, तो मैं थककर चूर हो गया था। पहाड़ी घनघोर जंगल में दुर्गम और कठिन चढ़ाई से युक्त थी। जब मैं ऊपर पहुंचा, तो मुझे भगवती काली का मन्दिर दिखाई दिया। मूर्ति के दर्शन करते ही मेरी सारी थकावट दूर हो गई। लगभग आठ फ़ीट ऊंची, काले पत्थर की

यह मूर्ति अपने-आप में भव्य और अद्वितीय थी। नरमुंड माला पहने हुए मूर्ति जीवन्त लग रही थी। उसे देखते ही सारा शरीर रोमांचित हो उठा और मेरे मुंह से शंकराचार्य प्रणीत 'काली स्तोत्र' उच्चरित हो गया।

लगभग दस मिनट बाद जब मैंने स्तोत्र समाप्त किया और पीछे मुड़ा तो देखा कि पहाड़ी की चट्टान पर त्रिजटा अघोरी बैठे हुए हैं और मेरी ओर ताक रहे हैं। वास्तव में तन्त्र की तपस्या से पूरित वह व्यक्तित्व अपने-आप में दिव्य और सुदृढ़ था। मैंने झुककर उनके चरणों में प्रणिपात किया, तो उन्होंने आशीर्वाद देते हुए मुझे बैठने के लिए कहा।

मैंने आंख उठाकर आसपास देखा, तो आठ-दस शिष्य और शिष्याएं अलग-अलग बैठे हुए थे। त्रिजटा के बाईं ओर एक बड़े से पत्थर पर भैरवी बैठी हुई थी। वह सर्वथा अनावृत्त थी। निश्चय ही वह उच्च कोटि की साधिका होगी। जीवन का एक भाग या स्तर ऐसा होता है, जब शरीर या उस पर पहने जाने वाले वस्त्रों का कोई महत्त्व नहीं होता, महावीर स्वामी भी उस स्तर तक पहुंच गए थे। इस भैरवी की आंखों में भी मैंने वैसी ही करुणा, ममत्व और स्नेह देखा।

लगभग आधे घंटे बाद गुरुदेव ने मुझे दूसरे दिन मिलने के लिए कहा और एक अत्यन्त वृद्ध तान्त्रिक योगी के साथ ठहरने के लिए मुझे आदेश दिया। उस योगी की आयु सौ वर्ष से कुछ ज़्यादा ही लग रही थी। वह मुझे लेकर अपनी कुटी की ओर बढ़ गया।

मैं जब उसकी ऊबड़-खाबड़ कुटी में पहुंचा, तो सारा कक्ष हस्तलिखित ग्रन्थों में भरा हुआ था। यहां तक कि ज़मीन पर भी ग्रन्थ बिखरे हुए थे। वह भीतर आते ही लेखन-कार्य में संलग्न हो गया था। सचमुच उसके पास संसार के दुर्लभ तान्त्रिक ग्रन्थों का संग्रह था।

दो दिन बीत गए। मैं उस कमरे में बिखरे हुए ग्रन्थों को समेटकर रखने का प्रयत्न करता रहा। तभी मेरे आनन्द और आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। भोजपत्र पर लिखित 'आसुरीकल्प' की हस्तलिखित प्रति मेरे हाथ लग गई। इसके पन्ने जर्जर हो गए थे, परन्तु भली प्रकार से पठनीय थे। लाल कपड़े

में लिपटा यह ग्रन्थ अभी तक पूर्णतः सुरक्षित था। किसी श्रेष्ठ प्रकार की रोशनाई से लिखा हुआ यह तान्त्रिक ग्रन्थ लगभग पन्द्रह सौ पृष्ठों का था और प्रत्येक पन्ने पर विविध यन्त्र उत्कीर्ण थे। मेरे लिए यह सौभाग्य था कि अपने जीवन में मुझे वह प्राप्त हो गया था, जिसकी तलाश में वर्षों से मैं भटक रहा था।

संन्यासी होते हुए भी मुझे फ़ोटोग्राफ़ी का शौक़ रहा है। हर समय बग़ल में कैमरा और हाथ में कमंडल रहता है। वृद्ध तान्त्रिक योगी की अनुमति लेकर उस दुर्लभ ग्रन्थ के प्रत्येक पन्ने का फ़ोटो ले लिया। आज इस ग्रन्थ की प्रामाणिक प्रति मेरे पास सुरक्षित है। बाद में पूज्य गुरुदेव ने भी प्रमाणित किया कि यह 'आसुरी कल्प' ग्रन्थ की प्रामाणिक प्रति है और इसका एक-एक मन्त्र या एक-एक साधना सही, स्वयंसिद्ध, अचूक एवं प्रामाणिक है।

पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से मैं उस दुर्लभ ग्रन्थ में से कुछ साधनाएं पूर्ण प्रामाणिकता के साथ आगे दे रहा हूं और इन पंक्तियों के माध्यम से चुनौती देता हूं कि कोई इन तान्त्रिक साधनाओं को असत्य सिद्ध करे।

इनमें से प्रत्येक साधना मैंने सिद्ध की है और हाथोहाथ उसका फल प्राप्त किया है। वास्तव में आज के युग में यह तन्त्र प्रत्येक साधक के लिए सौभाग्यदायक है, जिसको भी लगन है, वह इन तन्त्रों को समझने का प्रयास करेगा। जो सही दृष्टि से साधक है, वह अवश्य ही इन साधनाओं को सिद्ध करेगा और जीवन के समस्त भोग प्राप्त कर सकेगा, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपेक्षित हैं।

आसुरीकल्प : अदृश्य विद्यातन्त्रम

निशाचरं निशि ध्यात्वा जप्त्वामेन पाणिना
अदृश्यकारिणी विद्या लक्षजप्ये प्रयच्छति
रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानस्य शिवालये
अलिबत्युपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम्
अंजयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते
महाश्चर्यकारी विद्या सिद्धयोग अपाहृतः

यह साधना 'अदृश्य सिद्ध तन्त्र' है और इसे सिद्ध करने पर व्यक्ति निश्चय ही अदृश्य रूप से विचरण करने में समर्थ हो पाता है। वह सबको भली प्रकार से देख सकता है। परन्तु उसे कोई भी नहीं देख पाता। जब वह स्वयं चाहे, तभी अन्य कोई उसे देख सकता है।

किसी भी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। रात्रि को यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। यह चौदह दिन की साधना है। यह साधना श्मशान में, शिव मन्दिर में या घर के एकान्त कक्ष में की जा सकती है। चौदह दिनों में साधना कक्ष में कोई दूसरा प्रवेश न करे, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

इस साधना में 'आसुरी मन्त्र युक्त अदृश्य यन्त्र' को अपने सामने रखना चाहिए, जो कि विशेष मन्त्रों से सिद्ध हो। साथ ही दो गोमती चक्र तथा एक सियार सिंगी रखनी चाहिए और फिर हक़ीक़ माला से मन्त्र जाप सम्पन्न किया जाए। नित्य एक सौ एक मन्त्र जाप आवश्यक है। यह चौदह दिन की साधना है। चौदह दिन की साधना सम्पन्न होने पर दोनों गोमती चक्रों तथा सियार सिंगी को पूजा स्थान में ही रख दें और 'विशेष मन्त्रों से सिद्ध अदृश्य यन्त्र' को अपनी दाईं भुजा पर बांध लें। ऐसा करने पर ही साधना सिद्ध होती है।

फिर जब भी चाहें मन्त्र को मात्र ग्यारह बार उच्चारण कर अदृश्य यन्त्र को स्पर्श करें, तो अदृश्य हुआ जा सकता है। तब तक अदृश्य रहा जा सकता है, जब तक दाईं भुजा से अदृश्य यन्त्र खोलकर अलग न कर दें।

साधना काल में निम्न मन्त्र का जाप करना बताया गया है —

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं फट्–फट् स्वाहा कालि–कालि महाकालि मांसशोणित भोजने रक्तकृष्णमुखे देवी मां–मां पश्यंतु मानुष इति हुं फट् स्वाहा।

इस साधना को मैंने इसी प्रकार सिद्ध किया और मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

भूत-प्रेतों का रहस्यमय लोक

जिस प्रकार मनुष्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि जातियां होती हैं, उसी प्रकार शून्य में विचरण करने वाली आत्माओं में भी भूत-प्रेत, पिशाच, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर जातियां होती हैं। जिस प्रकार हम मासिक वेतन देकर किसी व्यक्ति को नौकर रख सकते हैं, उसी प्रकार कुछ मन्त्रों से सिद्ध कर इन भूत-प्रेतों को नौकर-चाकर के रूप में रख सकते हैं और इनसे मनोवांछित काम सम्पन्न करवा सकते हैं।

ये भूत-प्रेत अत्यधिक वफ़ादार, आज्ञाकारी तथा अपने प्राणों को भी समाप्त कर स्वामी की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहते हैं। मनुष्य तो धोखा दे सकता है या विश्वासघात कर सकता है, पर ये भूत-प्रेत एक बार मन्त्र सिद्ध होने पर कभी भी ऐसा नहीं कर सकते।

इनसे घर के छोटे-बड़े सभी कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं, अपने शरीर की सेवा या अपने साथ रक्षा के लिए चौबीस घंटे रख सकते हैं, हज़ारों मील दूर से कोई सामग्री मंगवा सकते हैं और जंगल में भी आप किसी भी प्रकार का कार्य उनसे सम्पन्न करवा सकते हैं।

इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में भूत-प्रेत सिद्धि का विशेष प्रयोग दिया गया है। गोरखनाथ के आसपास कई हज़ार भूत-प्रेत सिद्ध थे और उनसे वे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाते थे।

यह साधना किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ की जा सकती है। मात्र चौदह दिन की साधना है। इसमें निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है :

1. भूतेश्वर यन्त्र, 2. पांच हक़ीक़ पत्थर, 3. सवा किलो दूध, 4. एक तोला शहद, 5. थोड़ा-सा इत्र।

अपने सामने लाल कपड़े पर 'भूतेश्वर यन्त्र' की स्थापना कर दें और हक़ीक़ माला से मन्त्र जाप करें। यन्त्र के सामने ही इत्र, दूध एवं शहद भोग के लिए रख दें और दूसरे दिन सुबह दूध, शहद और इत्र को घर के बाहर फेंक दें। इस प्रकार चौदह दिन तक करें। चौदहवें दिन निश्चय ही भूत और

उनके चौदह अनुयायी आंखों के सामने प्रकट होंगे, तब उन्हें वह दूध पीने के लिए कहें और वचन ले लें कि — 1. जब मैं बुलाऊंगा तब आप सब हाज़िर होंगे और मेरा कहा हुआ कार्य करेंगे, 2. किसी भी विपत्ति, शत्रु-बाधा या आने वाली दुर्घटना की पहले से ही जानकारी देंगे, 3. जीवन-भर मेरी आज्ञा में रहेंगे और किसी भी कार्य के लिए मना नहीं करेंगे।

जब वे वचन दे चुके तब जाएं और भूतेश्वर यन्त्र को अपने गले में धारण कर लें। इस प्रकार करने पर भूत-समूह वश में हो जाएगा।

मन्त्र

ओऽम् श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्ये कुरु–कुरु स्वाहा ॥

इसमें नित्य एक सौ एक माला मन्त्र जाप करें। चौदह दिन में ही यह साधना सिद्ध हो जाएगी।

वशीकरण सिद्धि

इसमें वशीकरण सिद्धि से सम्बन्धित विस्तार से प्रयोग है और दावा किया गया है कि यद्यपि कई वशीकरण प्रयोग जन समाज में प्रचलित हैं, पर यही सर्वाधिक प्रभावशाली और तुरन्त असर करने वाला है, चाहे किसी में कितना ही गर्व हो और चाहे ब्रह्मा भी उसकी रक्षा करते हों, पर इस प्रयोग से उसे वश में किया जा सकता है। एक बार वश में होने पर वह जीवन-भर वश में रहेगा। वास्तव में देखा जाए, तो इसके माध्यम से पत्थर से भी सख़्त दिल को वश में किया जा सकता है। यदि वह सामने न भी हो, तो मात्र उसका फ़ोटो देखकर ही उस पर वशीकरण प्रयोग किया जा सकता है। ऐसा करने के बाद उसे जो भी आज्ञा दी जाएगी, वह करने के लिए बाध्य होगा, दुनिया की कोई ताक़त, समाज, लाज या मर्यादा उसे नहीं रोक सकती। यह ऐसा ही एक चमत्कारिक प्रयोग है।

यह प्रयोग अमावस्या से प्रारम्भ किया जा सकता है। अमावस्या की रात को अपने सामने विशेष मन्त्रों से सिद्ध वशीकरण यन्त्र रख दें तथा उसके पास ही काकतुम्बी, समुद्री कीड़ा तथा काजल की डिबिया रख दें, फिर स्वयं

पश्चिम की ओर मुंह कर तेल का दीपक जलाकर हक़ीक़ माला से मन्त्र जाप किया जाए। इस प्रकार सात दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है। वशीकरण यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लेना चाहिए, फिर जिसको भी वश में करना हो, उसके फ़ोटो पर या उसे सामने देखकर मन्त्र का मात्र ग्यारह बार उच्चारण करने से ही वह पूर्णरूपेण वश में हो जाता है और जीवन-भर वश में बना रहता है।

इस साधना से नौकर को, मालिक को, पत्नी को, प्रेमी या प्रेमिका को, अधिकारी को, शत्रु को या किसी को भी पूर्णतः जीवन-भर के लिए वश में किया जा सकता है।

मन्त्र

ओऽम् ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लू हसौ नमः।

जो काजल की डिबिया साथ में होती है, साधना करते समय नित्य उसका काजल अपनी आंखों में आंजकर फिर मन्त्र जाप करें। काकतुम्बी तथा समुद्री कीड़े को बांधकर घर में किसी स्थान पर रख दें।

सचमुच यह प्रयोग संसार का महान आश्चर्य है, मैंने इसे आजमाया है, और इसकी क्षमता देखकर कई बार चकित हुआ हूं।

मेनका मेरी प्रेमिका

इन्द्र की अप्सराओं में मेनका भी है, जो अद्वितीय सुन्दरी है और जिसके शरीर से निरन्तर मस्त कर देने वाली मादक गन्ध प्रवाहित होती रहती है। शास्त्रों के अनुसार किसी भी अप्सरा को मन्त्रों के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है और प्रेमिका-रूप में उसके साथ सभी प्रकार का आनन्द लिया जा सकता है।

विश्वामित्र ने बलपूर्वक मेनका को अपने वश में किया था और उसे जीवन-भर अपने अनुकूल बनाए रखा था। इसमें मेनका को प्रेमिका रूप में सिद्ध करने का एक सफल प्रयोग है। मैंने इस प्रयोग को आजमाया और सिद्ध होने पर चकित रह जाना पड़ा।

प्रेमिका रूप में मेनका सिद्ध होने पर अदृश्य रूप में तो सज-धजकर आपकी आंखों के सामने रहती ही है, मगर आपकी इच्छा होने पर वह वास्तविक रूप में भी आपके सामने प्रकट हो सकती है। जब तक आपकी इच्छा रहे, वह आपके पास बनी रहेगी। अट्ठारह वर्ष की इस अपूर्व सुन्दरी का साथ भी अपने-आप में एक सौभाग्य है, जीवन का चरम आनन्द और पूर्णता है। उससे कुछ भी न मांगा जाए, तब भी वह निरन्तर धन, द्रव्य, वस्त्र, स्वर्ण और अन्य भोग्य पदार्थ उपहार में बराबर प्रदान करती रहती है।

यह मात्र सात दिन की साधना है। इसमें स्फटिक माला से मन्त्र जाप होना चाहिए तथा नित्य इक्यावन माला जाप हो। किसी भी शुक्रवार की रात्रि से साधना प्रारम्भ करें। सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर 'सिद्ध मेनका मन्त्र' स्थापित करें। पास में सियार सिंगी, तीन हक़ीक़ पत्थर व इत्र रख दें।

मन्त्र

चंदनक्षीर हारेणायुतं जपेत् दिवसानि सप्त। दिवसे सप्तमे उदारपूजां कुत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते नियतमागच्छति। ईषद्धसित-रागेण पुरस्तिष्ठति आलिंगनं चुंबनं च तथा सह कर्तव्यं तूर्ष्णीभावेन कामयेत्। एवं सिद्धाभवति। यमिच्छति कामं तं ददाति। पृष्मारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति।

साधक स्नान कर, केसर का तिलक लगा, फूलों का हार पहन, कानों में इत्र के फाहे रखकर उत्तर की ओर मुंह करके आसन पर बैठ सामने दीपक रखकर मन्त्र जाप प्रारम्भ करे। कहा गया है कि नित्य इक्यावन माला मन्त्र जाप हो। इस प्रकार मात्र सातवीं रात्रि को निश्चय ही मेनका अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक वस्त्र पहनकर उपस्थित होती है और वचन देती है कि मैं जीवन-भर प्रेमिका-रूप में तुम्हारे वश में रहूंगी और तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी करूंगी। तब सातवें दिन अपने गले में पहनी हुई माला उसके गले में डाल दें। ऐसा करने पर साधना सिद्ध हो जाती है। इसके बाद वह साधक इन्द्र की तरह जीवन-भर आनन्द उठाता रहता है।

मन्त्र

ओऽम् सः मेनके आगच्छागच्छ स्वाहा ॥

यह साधना पूर्णतः प्रामाणिक है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह आज के मानव के लिए वरदानस्वरूप है। इस साधना को किसी भी आयु का साधक सिद्ध कर सकता है।

यह ग्रन्थ मानव जाति के लिए बेहद उपयोगी है। मेरे पास यह ग्रन्थ सुरक्षित है और मैं अपने गुरु को साक्षी रखकर कह रहा हूं कि मैंने उपर्युक्त सभी साधनाएं स्वयं सिद्ध की हैं और पहली बार में ही मुझे सफलता मिली है।

जैन तन्त्र साधना

जैन साहित्य में तन्त्र विद्या विस्तार से वर्णित है। जैनों के उच्चकोटि के योगी, यति और साधु तन्त्र के अद्वितीय आचार्य बने हैं। पिछले दिनों जैन साहित्य की हस्तलिखित पांडुलिपि में दुर्लभ तन्त्र प्राप्त हुए हैं, जो अपने-आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

तन्त्र का तात्पर्य है तुरन्त प्रभाव होना, और इस दृष्टि से जैन साहित्य में तन्त्र का विवरण-वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है। मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि से सम्बन्धित सैकड़ों तन्त्र जैन साहित्य में प्राप्त हैं।

पिछले दिनों अमेरिका यात्रा में एक श्रेष्ठि जैन कस्तूरीचन्द के यहां दुर्लभ हस्तलिखित प्रति देखी, जिसमें तन्त्र के कुछ विशिष्ट प्रयोग दिए हुए थे, उसमें निम्न तन्त्र का विस्तार से वर्णन दिया हुआ था और यह बताया गया था कि यह तन्त्र अपने-आप में इस प्रकार से निर्मित है कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की सारी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है। उसमें तन्त्र की विधि निम्न प्रकार से दी हुई थी –

पंच णमोकार मन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

तन्त्र प्रयोग

अठारह कार्यों में इस तन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है — 1. घर में सुख-शान्ति के लिए, 2. बीमारी दूर करने के लिए, 3. व्यापार वृद्धि के लिए, 4. पूर्ण आयु प्राप्ति के लिए, 5. दुर्घटना आदि से बचाव के लिए, 6. आर्थिक उन्नति के लिए, 7. योग्य पुत्र प्राप्ति के लिए, 8. राजद्वार में सम्मान प्राप्ति के लिए, 9. शत्रु मारण के लिए, 10. भाग्योदय के लिए, 11. प्रमोशन, मुक़दमे में सफलता आदि के लिए, 12. विदेश यात्रा के लिए, 13. धार्मिक कार्य सम्पन्नता के लिए, 14. अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के लिए, 15. कलह नाश के लिए, 16. समस्त प्रकार की उन्नति एवं मानसिक शान्ति के लिए।

दुर्लभ गोपनीय जैन तन्त्र

ओऽम् णमो अरिहंताणं णमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
अप्रतिचक्रे फट् विचकाय स्वाहा ओऽम् ह्रीं अर्हं
असि आऊ सा ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।।1।।
ओऽम् णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ।।2।।
णमो परमोहिजिणाणं ह्रां ।।3।।
णमो सध्वोहिजिणाणं ह्रां ।।4।।
णमो अणंतोहिजिणाणं ।।5।।
णमो कुट्ठबुद्धीणं ।।6।।
णमो बीजबुद्धीणं ।।7।।
णमो पदाणुसारीणं पद ।।8।।
णमो सम्भिन्नसोयाणं ।।9।।
णमो पत्तेयबुद्धाणं ।।10।।
णमो ॐ सयंबुद्धाणं ।। 11 ।।
णमो बोहिबुद्धाणं अन्तरगृहीते श्रुते एक संघो भवति ।।12।।
णमो उन्नुमईणं ।।13।।
णमो विउलमईणं बहुश्रुतत्वम् ।।14।।

दसपुव्वीणं ।।15।।
णमो चऊदसपुव्वीणं ।।16।।
णमो अट्ठंगनिमित कुसलाणं ।।17।।
णमो विउव्वणरिद्धिपत्ताणं ।।18।।

प्रयोग विधि

प्रातःकाल उठकर स्नान कर सफ़ेद धोती पहनकर तथा सफ़ेद धोती ओढ़ लें, फिर भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति के सामने दीपक व अगरबत्ती जलाकर निम्न स्तोत्र मन्त्र का पाठ बार-बार करें। पाठ से पूर्व और अन्त में तीन-तीन बार 'णमोकार मन्त्र' का उच्चारण करें। इस प्रकार यदि नित्य अपनी पूजा में यह प्रयोग शामिल कर लें, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रह सकता।

ऊपर लिखित जैन तन्त्र का पाठ जीवन की पूर्णता के लिए सौभाग्यदायक है।

आत्माओं से तन्त्र शिक्षा

ब्रह्मांड में लाखों आत्माएं घूमती रहती हैं और वे मनोवांछित गर्भ में प्रवेश कर जन्म लेने को उत्सुक हैं। इन आत्माओं में विश्वामित्र की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर मनोवांछित जानकारी पाई जा सकती है।

भारतीय दर्शन सदियों से ऐसी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित कर मनचाही जानकारी प्राप्त करता रहा है।

जिस प्रकार पृथ्वी पर हमारा अस्तित्व है, उसी प्रकार ब्रह्मांड में लाखों-लाखों आत्माओं का अस्तित्व भी विद्यमान है। कलकत्ता जैसे महानगर में भीड़-भाड़-भरे इलाक़े की कल्पना करें और यदि आप देखें, तो उस भीड़ में हज़ारों-हज़ार मनुष्यों के सिर-ही-सिर दिखाई देंगे, ठीक उसी प्रकार से वायुमंडल में भी इसी प्रकार लाखों आत्माएं एक-दूसरे से टकराती हुई घूमती रहती हैं। इसमें उच्चकोटि के वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, राजा-महाराजाओं और विद्वानों की आत्माएं हैं, तो सामान्य मनुष्यों, डाकुओं, चोरों और बदमाशों की आत्माएं भी घूमती रहती हैं। ये सभी आत्माएं सैकड़ों वर्षों से वायुमंडल में विचरण करती रहती हैं। इनका उद्देश्य या तो मुक्त वायुमंडल में विचरण करना ही होता है, क्योंकि वे पुनः गर्भ के नारकीय वातावरण में जाने को तैयार नहीं, या वे कुछ ऐसे गर्भ में जन्म लेने को उत्सुक होती हैं, जो उनका मनोवांछित है। उदाहरण के लिए, अधिकतर आत्माएं वापस जन्म लेना ही नहीं चाहतीं, क्योंकि उन्होंने गर्भ में और गर्भ के बाहर जो कुछ भोगा है, वह ज्यादा सुखकर नहीं है, अगर

वे जन्म लेना भी चाहें, तो किसी ऐसे गर्भ की खोज में रहती हैं, जो उच्चवंशीय हो, सभी दृष्टियों से सम्पन्न और सुखी हो तथा जहां उन्हें खुलकर कार्य करने का अवसर मिले — ऐसे ही गर्भ की खोज में वे आत्माएं रहती हैं। ऐसा गर्भ कभी-कभी संयोग से ही प्राप्त हो सकता है।

एक बात और, जिस प्रकार वर्तमान समय में परस्पर आपा-धापी, छीना-झपटी, लूट-खसोट और मार-काट मची हुई है, उसी प्रकार आत्माओं के मध्य भी ऐसा संघर्ष चल रहा है। यहां पर कोई भी ख़ाली जगह होती है, तो दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति उस पर क़ब्ज़ा कर लेता है। और अपना हक़ जमा लेता है, भला व्यक्ति बाहर खड़ा-खड़ा ताकता ही रहता है, ठीक उसी प्रकार से उच्चवंशीय गर्भ ख़ाली होते ही ये दुष्ट आत्माएं उस गर्भ में प्रवेश कर जाती हैं और शुद्ध एवं सात्त्विक आत्माएं खड़ी-खड़ी देखती ही रह जाती हैं, इसीलिए आज के युग में अच्छे और ऊंचे विचारों वाले नौजवान कम दिखाई देंगे। अधिकतर युवक ऐसे ही विचारों के होंगे, जो छल-कपट, झूठ, सिगरेट, शराब आदि में रुचि रखते हों।

आत्माओं की इस भीड़-भाड़ में मनोवांछित आत्मा को ढूंढ़ निकालना वैसा ही कठिन है, जिस प्रकार से मीलों लम्बे भीड़-भाड़ में, मेले में से मनोवांछित व्यक्ति को ढूंढ़ निकालना, परन्तु कुछ युक्तियां ऐसी हैं, जिनके द्वारा मनोवांछित आत्मा से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता और उनसे वे जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं, जो हमारा लक्ष्य है। यदि इन आत्माओं से सम्पर्क किया जाए, तो आश्चर्यजनक तथ्य हाथ लगते हैं। लिंकन की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर उस समय की अमरीकी पृष्ठभूमि को ज़्यादा आसानी से समझा जा सकता है। किसी भी महापुरुष आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर वे जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं, जो उनके मन में थीं और जिन्हें वह न तो व्यक्त कर पाए और न सम्पन्न कर पाए। यों ही अपने मृत माता-पिता, भाई, मित्र या प्रेमी से सम्पर्क स्थापित कर उन रहस्यों का पता लगाया जा सकता है, जो वे बता नहीं पाए। कई बार किसी स्वजन की अचानक मृत्यु हो जाती है और न तो वह अपने घर में गड़े हुए धन के बारे में बता पाते हैं और न उन काग़ज़-पत्रों के बारे में, जो उन्होंने कहीं और

कारणवश रख दिए थे। इन सारे तथ्यों की जानकारी उनकी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित कर ली जा सकती है।

क्या आत्माओं का आह्वान उचित है

सही शब्दों में कहा जाए, तो आत्माएं निरन्तर वायुमंडल में भटकती रहती हैं और वे स्वयं अपने पुत्र, पत्नी या स्वजन से बातचीत करने के लिए उत्सुक रहती हैं, परन्तु दुर्भाग्य यह है कि उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं है, जिसके द्वारा वे अपने किसी रिश्तेदार से सम्पर्क स्थापित कर सकें। यह सम्पर्क-स्थापन तो जीवित मनुष्यों के द्वारा ही सम्भव है। आत्माएं चाहकर भी सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकतीं। ज्यादा-से-ज़्यादा वे कभी-कभी स्वप्न में आ जाती हैं, पर उस समय भी वे कुछ कह नहीं पातीं, इसलिए मनुष्य चाहे तो मनोवांछित आत्मा से सम्पर्क स्थापित करता है।

वह रहस्यमय कफ़न

सैकड़ों वर्षों से एक रहस्यमय कफ़न ने दुनिया के लगभग सभी वैज्ञानिक तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को चक्कर में डाल रखा है, जिसकी गुत्थी समय के साथ-साथ बढ़ती ही जा रही है इस क़फ़न का सम्बन्ध ईसा मसीह से बताया जाता है। इसे 'ट्यूरिन का कफ़न' भी कहते हैं।

यह लिनन का कपड़ा है और सैकड़ों वैज्ञानिकों तथा चर्चों ने इसको जांचा-परखा है। इस पर एक लगभग नग्न-सी आदमकद आकृति है, जिसके एक लम्बी दाढ़ी है तथा चेहरे पर मौत की छाया स्पष्ट उभरी हुई है। इसके बारे में कहा जाता है कि सूली के बाद ईसा मसीह को इस कफ़न में लपेटा गया था। इस कफ़न पर कलाइयों पर कीलों के निशान तथा ख़ून के धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस आकृति की बनावट ईसा मसीह से हू-ब-हू मिलती है।

लगभग सर्वप्रथम चौदहवीं शताब्दी में फ्रांस के लियो शहर में एक स्थानीय सरदार जिआफ्रे डी चरनी के पास यह कफ़न था। जनता के समक्ष इसका प्रदर्शन सर्वप्रथम सन् 1389 में रखा गया और तभी से 'सैवाय' परिवार के अधिकार में यह कपड़ा है।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस कफ़न को बिल्कुल शान्त कमरे में हाथ में लेकर यदि कोई प्रश्न किया जाता है, तो तुरन्त उसका उत्तर प्राप्त हो जाता है, वह ध्वनि किस दिशा से और कहां से आती है, इसके बारे में कोई पता नहीं चलता, परन्तु प्रश्न का उत्तर बिल्कुल प्रामाणिक होता है, वह प्रश्न चाहे किसी भी देश या व्यक्ति के भूतकाल से सम्बन्धित हो या भविष्य काल से।

आत्मा-आह्वान

आत्मा के आह्वान के कई तरीक़े हैं, भारत के प्राचीन तान्त्रिक ग्रन्थों में एक विशेष मुद्रिका का वर्णन आया है, जिसमें एक विशिष्ट प्रकार का रत्न जुड़ा होता है, जिसे 'आत्म-रत्न' कहते हैं, हिलाने पर इस पत्थर की रेखाएं हिलती-डुलती-सी दिखाई देती हैं। यह रत्न सोने या चांदी की अंगूठी में जड़वाया जा सकता है और इसे हर समय या विशिष्ट अवसरों पर पहना जा सकता है।

इस रत्न की यह विशेषता है कि इस रत्न पर टकटकी लगाकर यदि आत्मा का आह्वान किया जाए, तो आत्मा का आगमन तुरन्त और निश्चित रूप से हो जाता है। कभी-कभी तो उस पत्थर में आत्मा का आगमन तुरन्त होने लगता है और प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगता है। जब प्रतिबिम्ब दिखाई दे, तो जो भी प्रश्न किया जाता है, उसका उत्तर प्रश्नकर्त्ता के मन में स्वतः उभर आता है। ऐसा लगता है, जैसे प्रश्नकर्त्ता को आत्मा ने स्पर्श किया और प्रश्न का उत्तर दे दिया। वह उत्तर पूर्णतः सत्य निकलता है।

विदेशों में तो इस प्रकार की मुद्रिका का विशेष प्रचलन है। अधिकतर लोग इस प्रकार की मुद्रिका धारण किए रहते हैं। उनको यह विश्वास होने लगता है, इस प्रकार की अंगूठी धारण करने से एक अदृश्य भली आत्मा बराबर उनकी रक्षा करती है, आने वाले ख़तरों से बचाती है और प्रश्न करने पर प्रामाणिक उत्तर देने का प्रयास करती है। इस प्रकार की मुद्रिका पर व्यय लगभग दो सौ चालीस रुपए आता है।

यह भी सही है कि वे आत्माएं अपने किसी स्वजन से बातें करने के

लिए उत्सुक रहती हैं। वे इस प्रयत्न में होती हैं कि कोई व्यक्ति उनको बुलाए, उनसे बात करे और उनकी व्यथा सुने, इसलिए जब कोई व्यक्ति इन आत्माओं का आह्वान करता है, तो वे प्रसन्नता के साथ उपस्थित होती हैं और यथा-सम्भव पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देती हैं।

कभी-कभी मनोवांछित आत्मा के स्थान पर कोई ग़लत आत्मा भी आकर जवाब देने लग जाती है, परन्तु यह भेद जल्दी ही खुल जाता है, क्योंकि हम जिस आत्मा को भी बुलाते हैं, उसके बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी तो रखते ही हैं। यदि उस जानकारी में से एक-आध पर प्रश्न करें, तो उसके उत्तर से यह ज्ञात हो सकता है कि वह आत्मा वही है या नहीं, जिसे हमने बुलाया है। उदाहरण के लिए यदि, हम अपने मृत पिता की आत्मा का आह्वान करें और जब वह उपस्थित हो तो एक-दो प्रश्न ऐसे कर लेने चाहिए, जो घर की गोपनीयता से सम्बन्धित हों; जैसे — उसकी पत्नी का क्या नाम है या अमुक कार्य किस वर्ष हुआ था आदि। ऐसे प्रश्नों के सही उत्तर से उस आत्मा की प्रामाणिकता के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक आत्मा आदर और सम्मान चाहती है। आप जब भी उनको बुलाएं, तो उन्हें पूरा सम्मान दें, शिष्ट भाषा का प्रयोग करें और नम्रतापूर्वक उनसे प्रश्न पूछें। इससे वे आत्माएं प्रसन्न होती हैं और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर प्रसन्नता के साथ देती हैं।

आत्माओं से सम्पर्क-स्थापन

इन मृत आत्माओं से सम्पर्क-स्थापन की कुछ महत्त्वपूर्ण विधियां हैं, जो पूरे विश्व में प्रचलित हैं। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

सरल अबोध बालक के द्वारा

इसमें माध्यम की ज़रूरत होती है। यह माध्यम लगभग आठ से दस वर्ष का बालक या बालिका हो सकती है, जो सरलचित्त हो तथा छल-प्रपंच से दूर हो, ऐसा हृदय सरलहृदय कहा जाता है। ऐसे बालक के शरीर में आत्मा प्रवेश कर मनोवांछित उत्तर देने के लिए तैयार हो जाती है।

इसके लिए शाम का समय ज़्यादा उपयुक्त होता है, जब धुंधलका हो, न तो तेज़ रोशनी हो, न घुप्प अंधेरा। ऐसे बालक को किसी ख़ाली कमरे में चटाई बिछाकर बिठा दें। कमरे में किसी प्रकार का सामान न हो और कोने में एक अगरबत्ती जला लें, फिर उस बालक के सामने पांच-सात व्यक्ति बैठ जाएं और उस आत्मा को बुलाएं, जिसे आप बुलाना चाहते हैं तथा बात करना चाहते हैं।

एक अलौकिक उपन्यास

फ्रांस के एलबर्ट रोच विख्यात उपन्यासकार थे। उनका प्रत्येक उपन्यास करोड़ों में बिका। वह अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'बाहि-भ्रंग' लिख रहे थे। लगभग आधा ही लिखा था कि उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद जिस-जिसने भी उस उपन्यास की पांडुलिपि पढ़ी, वह चकित रह गया। स्वीडिश अकादमी के एक सदस्य ने तो यहां तक कहा कि यदि यह उपन्यास पूरा होता, तो निश्चय ही नोबेल पुरस्कार प्राप्त करता।

उनकी विधवा पत्नी सियेल अपने पति की मृत्यु से अत्यधिक दुखी थी। पति की मृत्यु को लगभग एक वर्ष बीत चुका था। एक दिन उसने घर के एकान्त कमरे में अपने पति का चित्र रख दिया और उसके सामने अगरबत्ती जला दी, फिर उसके सामने ही घुटने मोड़कर वह स्वयं बैठ गई तथा आत्मा का आह्वान किया। कुछ ही देर में कमरे में एक कोने से उसके पति की आवाज़ आई, "मैं यहां हूं।"

पत्नी ने अचकचाकर इधर-उधर देखा, तो पति कहीं दिखाई नहीं दिए, पर आवाज़ तो उनकी ही थी। तभी पति की फिर आवाज़ आई, "तुम मुझे नहीं देख पा रही हो, पर मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं।" पत्नी की आंखों से प्रेम के आंसू बह निकले।

पत्नी ने कहा, "आप नित्य आ जाया करें और बोलते रहें। मैं चाहती हूं कि आपका अधूरा उपन्यास पूरा हो जाए।"

पति ने आने का वायदा किया। दूसरे दिन निश्चित समय पर पत्नी सियेल काग़ज़-क़लम लेकर बैठ गई। पास ही एक ख़ाली कुर्सी रख दी। थोड़ी

ही देर में उसे ऐसा एहसास हुआ कि उसके पति उस ख़ाली कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। मृत पति की आत्मा बोलती गई और सियेल लिखती रही। इस प्रकार छः महीनों में उपन्यास पूरा हुआ।

बाद में वह उपन्यास प्रकाशित हुआ और उसे विश्व स्तर का माना गया। कई पुरस्कार एवं सम्मान-पत्र उसे मिले, नोबेल कमेटी ने भी उस उपन्यास की सराहना की। उपन्यास पढ़ने पर ऐसा लगता है कि जैसे एलबर्ट रोच ने जीवित अवस्था में ही पूरा उपन्यास लिखा हो। वही भाषा-शैली और वही भाव। वास्तव में यह अपने-आप में एक अलौकिक उपन्यास बन गया।

उदाहरण के लिए, यदि आप किसी महात्मा की आत्मा को बुलाना चाहते हैं, तो हाथ जोड़कर सरल चित्त से प्रार्थना करें कि हे महात्मा, आप आकर इस बालक में प्रवेश करें और हमारे प्रश्नों का जवाब दें। ऐसा आप पांच-सात या आठ-दस बार उच्चारण करें, तो देखेंगे कि बालक के चेहरे की बनावट में अन्तर आ गया है और उसके होंठ जवाब देने के लिए फड़फड़ा रहे हैं। कभी-कभी कमरे में तेज़ हवा का झोंका भी अनुभव होता है, जिससे पता चल जाता है कि कोई आत्मा आई है, फिर आप उससे प्रश्न कर सकते हैं।

जब हत्या की गुत्थी सुलझी

उत्तर प्रदेश में विजेन्द्रगढ़ एक महत्त्वपूर्ण रियासत है, जिसके राजा हरमेन्द्रसिंह रोब-दाब वाले व्यक्ति थे। उनके इक्कीस वर्ष के जवान लड़के की किसी ने हत्या कर दी, इससे पूरा राज-परिवार शोक-सन्तप्त हो उठा।

उस समय अंग्रेज़ों का राज था और उसकी गुत्थी सुलझाने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किए, पर हत्यारों का कोई पता नहीं चला, महाराजा ने इसके लिए स्कॉटलैंड के विश्वविख्यात जासूसों को भी बुलाया, पर वे भी हत्यारों का पता नहीं लगा सके।

महाराजा पुत्र वियोग की आग में दहक रहे थे। एक दिन बनारस का एक फ़क़ीर उनके यहां आकर टिका। महाराजा ने अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। रात्रि को उस फ़क़ीर ने घर के सभी सदस्यों को एक बड़े कमरे में बैठाया और मृत राजकुमार की आत्मा का आह्वान किया। तभी घर के एक छोटे से बालक

के शरीर में उस मृत आत्मा ने प्रवेश किया और वे सारी परिस्थितियां बता दीं, जिस प्रकार से उनकी हत्या हुई थी। उसने हत्यारों के नाम और जगह भी बता दी। यह भी बता दिया कि मारने के बाद लाश को कहां गाड़ा गया है।

उनके बताए हुए स्थान पर खोज की गई, तो लाश और वह अस्त्र भी प्राप्त हो गया, जिससे हत्या की गई थी। उसी के आधार पर हत्यारों को पकड़ लिया गया और थोड़े से प्रयत्न से ही उन्होंने हत्या स्वीकार कर ली। इस प्रकार एक मृत आत्मा ने अपनी हत्या की गुत्थी सुलझा दी।

तन्त्रमय वनस्पतियां

कुछ वनस्पतियां आश्चर्यजनक रूप से स्वतः तन्त्रमय होती हैं और उसके उपयोग से आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते हैं।

निद्रामुखी

यह वनस्पति कठिनाई से पाई जाती है। चौंसठ दिव्य औषधियों में इसका नाम है। सुदूर पहाड़ी प्रदेश में इसके पौधे प्राप्त होते हैं। इस वनस्पति को तकिए में भरकर यदि व्यक्ति रात को वह तकिया सिरहाने रखकर सोए, तो उसे मधुर एवं आनन्ददायक नींद आ जाती है। अनिद्रा के रोगियों के लिए तो यह वरदानस्वरूप है।

विदेशों में भी इस वनस्पति पर परीक्षण हुए हैं और उन्होंने अनुभव किया है कि वास्तव में ही इस वनस्पति में नींद लाने का अद्भुत गुण है, इस पर व्यय लगभग 300 रुपए आ जाता है।

शृंगाटिका आसन

यह एक दुर्लभ तन्त्रमय वनस्पति है, जिसको साधकों ने कई प्रकार से प्रयोग किया है, उर्वशी रति-क्रिया साधना सिद्धि में इसको सूती कपड़े में भरकर आसन की तरह बना दिया जाता है, जिस पर बैठने से ही विशिष्ट दिव्य शरीर बनकर साधना में अनुकूलता प्राप्त होती है। इस प्रकार के आसन पर व्यय 210 रुपए आता है।

यौवन भृंगा

जम्मू के आसपास यह वनस्पति प्राप्त होती है, इसका रस अपने-आप में अद्वितीय माना गया है। उर्वशी साधना या अन्य धनदा साधनाओं में इसके रस से प्रयोग कर यदि धोती पहनी जाए एवं ओढ़ी जाए, तो विशिष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। ऐसी दो विशिष्ट धोतियों पर व्यय 200 रुपए आ जाता है।

उर्वशी माला

इसके मनके स्फटिक के समान होते हैं और यह सैकड़ों साधनाओं में प्रयुक्त होता है। मन्त्रसिद्ध ऐसी माला पर व्यय मात्र 150 रुपए आता है। यह माला भी शंखपुष्पी के रस में डुबोकर मन्त्र सिद्ध की जाती है।

वास्तव में ये वनस्पतियां साधनाओं की सिद्धि में अद्वितीय रूप में सहायक हैं।

कांसे की कटोरी

किसी चिकने लकड़ी के फट्टे पर सफ़ेद सनमाइका लगा हो, उस पर एक गोल घेरा खींच लें, और उस घेरे के बाहर चारों ओर अंग्रेज़ी के ए से जेड तक के अक्षर लिख लें, फिर मध्य में कांसे की कटोरी उलटी रख दें। इसके बाद आप उस आत्मा का आह्वान करें, जिसे बुलाना चाहते हैं। चार-पांच व्यक्ति मिलकर उस कांसे की कटोरी पर अपनी एक-एक उंगली हल्के दबाव से रखें, फिर आत्मा का आह्वान करें, तो आप अनुभव करेंगे कि वह कटोरी हिलने लगी है, फिर आप उससे प्रश्न करें और प्रश्न करने पर कटोरी एक अक्षर से दूसरे तक फिसलती रहेगी और इन अक्षरों से जो शब्द बनेंगे, वह आपका उत्तर होगा। उदाहरण के लिए, यदि आपने प्रश्न किया कि आपका नाम क्या है, तो वह कटोरी पहले एम पर इस प्रकार बाद में ए पर, एन पर, जी पर और आई पर जाकर मांगीलाल शब्द बनाएंगी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह कौन आत्मा है।

बाद में आप जो भी प्रश्न करेंगे उसका समुचित उत्तर भी वह कटोरी फिसलते हुए तैयार कर देगी।

यह प्रयोग लगभग छः या सात बजे शाम को करना चाहिए, जब थोड़ा अंधेरा घिरने लग जाए; तेज़ रोशनी में आत्मा नहीं आती। यदि कमरे में अंधेरा हो तो हल्की-सी मोमबत्ती जला सकते हैं। कमरे में पांच-सात व्यक्तियों से ज़्यादा लोग न हों और फिर ऊपर बताए हुए तरीक़े से यदि आप आत्मा को बुलाकर प्रश्न करें, तो उनकी तरफ़ से बराबर जवाब प्राप्त होता रहेगा।

जब आपके सारे प्रश्न समाप्त हो जाएं, तब आप हाथ जोड़कर निवेदन करें कि अब आप जा सकते हैं। आपने जो कष्ट किया उसके लिए हम आपके आभारी हैं। ऐसा करने पर उस कटोरी की थिरकन स्वतः बन्द हो जाएगी। तब आप अनुमान लगा लें कि वह आत्मा चली गई।

इसके अलावा विदेशों में एम्परचर पद्धति, क्रिसिंग पद्धति आदि भी प्रचलित हैं, जिनके माध्यम से आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया जाता है, और उनसे मनोवांछित उत्तर प्राप्त किया जाता है।

भारतवर्ष में ऐसे सैकड़ों जानकार हैं, जो आत्मा को बुलाते हैं और उनसे बात कर आपके प्रश्न का उत्तर दे देते हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट साधनों के द्वारा भी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। और उनसे उसी प्रकार बातचीत की जा सकती है, जिस प्रकार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से बातचीत करता है, यद्यपि इसमें सामने वाली आत्मा दिखाई नहीं देती, पर उसका आभास बराबर होता है और वह आत्मा शून्य में उपस्थित होकर उन सारे प्रश्नों के जवाब देती है, जोकि हम चाहते हैं। इसमें 'आत्म-सिद्धि' प्रयोग अत्यधिक महत्त्वपूर्ण और प्रचलित है। पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में लगभग दस-बारह शिष्य इस साधना में सिद्ध हुए हैं और उन्होंने सफलताएं पाई हैं। इसमें हैदराबाद के चारमीनार के पास रहने वाले ज्ञानेन्द्र सूर्यवंशी, गुजरात के मेरूमा, पटना के आलोक शर्मा, जयपुर के रामकिशन और दिल्ली के अरुण जी आदि विख्यात हैं, जिन्होंने कई बार वांछित आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया है और लोगों की समस्याओं को सुलझाया है।

मृत पूर्वजों से बातें यूं की जा सकती हैं

ताम्बे से बना हुआ महत्त्वपूर्ण 'आत्म यन्त्र' किसी एकान्त कमरे में सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर रख दीजिए और सामने अगरबत्ती जला लीजिए, फिर आप

स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर शान्त चित्त से बैठ जाएं और अपने मृत पति, पत्नी, पुत्र या किसी अन्य पूर्वज का नाम लेकर आह्वान कीजिए, हाथ जोड़कर निवेदन करें कि वे आकर इस 'आत्म यन्त्र' के मध्य में सूक्ष्म रूप से उपस्थित हों। चार-पांच बार ऐसा कहने पर दीपक की लौ तेज़ी से हिलकर इस बात का संकेत दे देगी कि मनोवांछित आत्मा आ गई है, तब आप उससे जो भी प्रश्न करना चाहें, प्रश्न पूछ सकते हैं।

लाभ ही लाभ

यह विद्या अपने-आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा परिवार के सदस्यों को और छानबीन कर रहे व्यक्तियों को महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अचानक मर जाता है या उसका मर्डर हो जाता है, तो ऐसी आत्मा से सम्पर्क स्थापित करने पर यह भली भांति पता चल जाता है कि उसकी हत्या किसने और कहां पर की। यह हत्या किन परिस्थितियों में हुई तथा उसकी लाश किस जगह पड़ी हुई है। यह जानकारी हत्या की गुत्थी को सुलझाने में विशेष रूप से सहायक हो सकती है, या अपने किसी स्वजन की अचानक मृत्यु हो जाने पर उससे सम्पर्क स्थापित कर यह पता लगाया जा सकता है कि घर की चाबियां कहां पर रखी हैं, किन-किन को धनराशि उधार दी हुई है, या गोपनीय धन कहां पर गाड़ा हुआ है, अथवा उसकी क्या इच्छा है, जिसे पूरी की जा सके आदि ऐसी सैकड़ों बातें हैं, जिनके द्वारा रहस्यों का पता लगाया जा सकता है।

आत्म-साधना सिद्धि

ऊपर आत्म-साधना सिद्धि के बारे में बताया है। यह साधना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और कोई भी स्त्री-पुरुष इस साधना को सिद्ध कर सकता है। इसमें किसी प्रकार के लम्बे-चौड़े उपकरणों की ज़रूरत नहीं होती और मात्र 21 दिनों में मन्त्र जाप कर इस साधना को सिद्ध किया जा सकता है। ऐसी साधना करने पर स्वयं का किसी भी प्रकार से कोई अहित नहीं होता और यह सिद्धि जीवन-भर उसके पास बनी रहती है।

सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इस साधना को सिद्ध करने की ओर अग्रसर होते हैं। जोधपुर आकर पूज्य गुरुदेव से अनुमति लेकर उनके निर्देशन में यह साधना सिद्ध की जा सकती है। ऐसी साधना सिद्ध होने पर वह हज़ारों लोगों का कल्याण कर सकता है और इसके द्वारा खोए हुए बालक का पता लगाना, हत्या के कारणों की जानकारी प्राप्त कर लेना, गड़े हुए धन के बारे में मालूम कर लेना, मरते समय किसी मनुष्य की क्या इच्छा थी और अब उसकी क्या इच्छा है, जिसे पूरा करने पर उसे सुख और सन्तोष मिले इनके बारे में इस विधि के द्वारा राहत दिलाई जा सकती है तथा उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

यह साधना दो प्रकार की है। एक साधना तो पांच दिनों में ही सिद्ध हो जाती है और दूसरी लगभग 21 दिनों में। इन दोनों ही प्रकार की साधनाओं को व्यक्ति जानकर पूरे भारतवर्ष में सम्मान प्राप्त कर सकता है।

जब विश्वामित्र की आत्मा से सम्पर्क स्थापित किया

यह मेरा सौभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी का शिष्य हूं। और उनसे मैंने तन्त्र की कुछ विशिष्ट क्रियाएं सीखी हैं। मेरी इच्छा इस आत्म-साधना को सीखने की थी और इसे मैंने मात्र पांच दिनों में ही सिद्ध कर लिया। जब मैंने मनोवांछित आत्माओं को बुलाने और उनसे बात करने की कला सीख ली, तो मुझे पल-पल रोमांच हो आता। कभी मैं डाकू मानसिंह की आत्मा से बात करता था और डाकू जीवन की उन घटनाओं को सुनता था, जो उसके जीवन की गोपनीय घटनाएं थीं। एक-एक घटना आश्चर्यजनक, रहस्यमय और रोमांचकारी थीं। कभी मैं हॉलीवुड की श्रेष्ठतम हीरोइन सरलैक से बात करता था, जिसने मात्र 22 वर्ष की उम्र में ही नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर ली थी। मैं उसके द्वारा आत्मघात की कहानी सुनकर रोमांचित हो उठा। मैंने अपने पिता जी की आत्मा से भी सम्पर्क स्थापित किया और जब मैंने उनकी व्यथा और इच्छा सुनी तो रोमांचित हो उठा। इसके बाद मैंने उनकी इच्छा को पूरा किया। जिस प्रकार से उन्होंने हरिद्वार जाकर धार्मिक क्रिया सम्पन्न करने की आज्ञा दी, उसी प्रकार वह कार्य सम्पन्न किया, जिससे

कि उनकी मृत आत्मा को शान्ति मिल सकी और वह आत्मा मुक्ति पा सकी। एक पुत्र के नाते यह मेरा महत्त्वपूर्ण कार्य था।

मेरी रुचि तन्त्र में रही है। तन्त्र के द्वारा ही मैं उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता था, जो कि जीवन का लक्ष्य है। तन्त्र के क्षेत्र में विश्वामित्र से ऊंचा अन्य कोई व्यक्तित्व नहीं हुआ। गोरखनाथ, स्वामी शंकराचार्य और त्रिजटा अघोरी आदि उनके सामने बौने थे।

मेरी इच्छा ऐसे ही महान व्यक्तित्व विश्वामित्र से सम्पर्क स्थापित कर उनसे तन्त्र की उन क्रियाओं को सीखने की थी, जो अपने आप में अद्वितीय और गोपनीय हैं।

इस सम्बन्ध में मैंने पूज्य गुरुदेव से निवेदन किया, तो उन्होंने विश्वामित्र की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर तन्त्र की कठिन और गूढ़ क्रियाएं सीखने की अनुमति दे दी और एक दिन महत्त्वपूर्ण अवसर पर मैंने इसी साधना के द्वारा उनसे सम्पर्क स्थापित कर लिया।

मैं सांझ के धुंधलके में अपने कमरे में बैठा था और पूर्ण पवित्रता के साथ उस मन्त्र का जाप कर रहा था, जिसके द्वारा उच्चकोटि की आत्मा का आह्वान होता है। मैंने अचानक अपने सामने अद्वितीय व्यक्तित्व-सम्पन्न योगीराज को देखा। लम्बी सफ़ेद दाढ़ी, नीचे तक लटकती लम्बी जटाएं, चौड़ा और समुद्रवत विशाल वक्षस्थल, बड़ी-बड़ी तेजस्वी आंखें और साधना से सिद्ध तपोमय गौरवर्ण शरीर। ऐसा लगा, जैसे कोई साक्षात सिद्ध पुरुष मेरे सामने उपस्थित हुआ हो। मैंने सामने व्याघ्रचर्म बिछा दिया था और उस पर आकर वह सिद्ध आत्मा बैठ गई। पुराणों में मैंने विश्वामित्र के शरीर की जिस प्रकार से बनावट पढ़ी थी, ठीक वैसा ही शरीर मेरे सामने विद्यमान था। मैंने भक्ति-भाव से उन्हें विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया।

मैंने निवेदन किया कि मैं आपको कष्ट नहीं देता, परन्तु तन्त्र के क्षेत्र में आप अद्वितीय हैं और आपसे मैं कोई ऐसा तन्त्र सीखना चाहता हूं, जो अपने-आप में अद्वितीय हो।

महर्षि विश्वामित्र दो क्षण मुझे ताकते रहे, फिर बोले, "यद्यपि यह तुम्हारी अनधिकार चेष्टा है, परन्तु मैं तुम्हें वह तन्त्र सिखा देता हूं, जो अब तक सर्वथा गोपनीय रहा है, इसे 'उर्वशी रति क्रिया साधना सिद्धि' कहते हैं। यह अब तक गोपनीय विषय रहा है। इसे सिद्ध करने पर उर्वशी जीवन-भर प्रेमिका के रूप में साधक के साथ रहती है और मर्यादा के अनुसार उसका किसी प्रकार से सम्भोग करना अनुचित नहीं। सिद्ध होने पर वह नित्य विविध द्रव्य प्रदान करती है। एक विशेष बात यह है कि इसे सिद्ध करने पर अन्य आठों अप्सराएं स्वतः सिद्ध हो जाती हैं। जिनके नाम हैं — 1. त्रिपुरसुन्दरी, 2. धनदा रति, 3. तिलोत्तमा, 4. कांचनमाला, 5. मेनका, 6. रम्भा, 7. विशालनेत्रा और 8. मंजुघोषा। ये आठों अप्सराएं भी साधक के चारों ओर पूर्ण यौवन के साथ चौबीसों घंटे उपस्थित रहती हैं और साधक उनके बीच इन्द्र की तरह पूर्ण भोग एवं भौतिक सुख प्राप्त करता है।"

फिर थोड़ा रुककर विश्वामित्र बोले, "इस साधना की एक और विशेषता है कि इससे वह व्यक्ति भी पूर्ण यौवनमय, सुन्दर एवं आकर्षक बन जाता है। एक प्रकार से देखा जाए, तो उसका पूरी तरह से कायाकल्प हो जाता है और सारा शरीर आकर्षक यौवन वेग से उत्तप्त हो जाता है। इसके साथ ही वे आठों अप्सराएं उसे प्रेमी रूप में स्वीकार करती हैं। फलस्वरूप वे बेतहाशा धन, द्रव्य एवं सुखोपभोग की सामग्री प्रदान करती रहती हैं।"

इस साधना को मैंने अत्यधिक परिश्रम से पूर्ण किया है और मैं अपने कुछ शिष्यों के अलावा आज पहली बार यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

फिर विश्वामित्र ने साधना रहस्य को समझाते हुए कहा कि कुछ वनस्पतियां भी तन्त्रमय होती हैं। अतः इस साधना में 'शृंगाटिका' वनस्पति को भरकर एक आसन बना लेना चाहिए, जिस पर साधक को पूर्णमासी की रात्रि में एकान्त कक्ष में बैठना चाहिए। इसके बाद 'यौवन भृंगा' वनस्पति के रस में धुली हुई धोती पहने और सामने 'अष्ट किन्नरी यन्त्र' रख दे, 'उर्वशी-माला' से मन्त्र जाप करे। उर्वशी-माला में विशेष मनके होते हैं, जो स्फटिक के समतुल्य होते हैं। इस माला से नित्य 21 माला मन्त्र जाप होना आवश्यक है। यह 21 दिन की साधना है। नित्य करने पर 21वें दिन निश्चय ही 18 वर्ष

की पूर्ण यौवनमय सुन्दर श्रृंगार किए उर्वशी साधक के सामने उपस्थित होती है। उस समय पहले से ही दो गुलाब मालाएं साधक को 21वें दिन पूजा स्थल में रख देनी चाहिए। उर्वशी उनमें से एक माला उठाकर साधक के गले में पहनाकर उसे प्रिय रूप में स्वीकार कर लेती है। तब साधक को भी दूसरी माला उसके गले में पहना देनी चाहिए। ऐसा करने पर उर्वशी और उसकी सहायिकाएं आठ अन्य अप्सराएं उसके वश में हो जाती हैं और जीवन-भर उसे अतुल धन, द्रव्य एवं सुखभोग की सामग्री प्रदान करती रहती हैं।

मैंने दूसरे दिन पूर्णमासी से यह साधना प्रारम्भ की और पहली बार में ही मुझे निश्चित सफलता प्राप्त हो गई। आज जो मैं पूर्ण यौवनमय एवं अतुलनीय सम्पत्ति का स्वामी हूं, उसका कारण यह साधना ही है। पूज्य गुरुदेव से मैंने इसमें अत्यधिक आवश्यक श्रृंगाटिका वनस्पति से युक्त आसन प्राप्त कर लिया था और उसी प्रकार से धोती भी तैयार कर पहन ली थी।

इस साधना में पूज्य विश्वामित्र ने जो मन्त्र बताया था, वह इस प्रकार है —

मन्त्र

ओऽम् अनंग मन्मथायै ऐं क्लीं नित्य क्लिन्न मदद्रवे स्वाहा।

वास्तव में कभी-कभी कोई साधना या मन्त्र अचानक प्राप्त हो जाता है और वह अपने-आप में ऐसा अद्भुत और आश्चर्यजनक होता है कि सहसा विश्वास नहीं होता, परन्तु मैंने ही नहीं कुछ और साधकों ने भी इस प्रयोग को किया है और प्रत्येक साधक को इसमें सफलता मिली है। इससे जीवन में बेतहाशा धन प्राप्त होता रहता है और पूर्ण शरीर यौवन रस से आप्लावित रहता है। मनुष्य एक अजीब ही खुमारी और आनन्दमयी जीवन में बना रहता है।

तारा महाविद्या साधना

वैदिक काल से आज तक समस्त ऋषियों, साधुओं और संन्यासियों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि संसार की सर्वोत्कृष्ट महाविद्याएं साधनाएं हैं। इसमें भी 'तारा महाविद्या साधना' सर्वश्रेष्ठ महत्त्वपूर्ण एवं सौभाग्यदायक कही गई है। अन्य साधनाएं तो साधक कभी भी कर सकता है, पर तारा महाविद्या साधना तो गुरु के सान्निध्य में सीखते हुए पूर्ण न्यास, ध्यान विनियोग, यन्त्र-अंकन के साथ सिद्ध करने से जीवन में अद्वितीय धन-लाभ, व्यापार-वृद्धि और घर में स्वर्ण-वर्षा होने लगती है।

तारा महाविद्या साधना जीवन का सौभाग्य माना गया है। वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषियों ने भी एक स्वर में स्वीकार किया है कि संसार में लक्ष्मी प्राप्ति से सम्बन्धित सैकड़ों प्रयोग हैं, परन्तु तारा प्रयोग जैसी साधना जीवन में अन्यत्र नहीं :

सर्ववागीश्वरो मर्त्यौ लोकवश्यो धनेश्वरः
रणे द्यूते विवादे च जयस्तस्य भवेद्ध्रुवम्
पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यौ विलासो सर्वयोषिताम्
शत्रावो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्व्वाणी वक्त्रो वसेद्ध्रुवम्
तस्य सर्व्वार्त्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते

अर्थात तारा साधना से निश्चय ही व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने वाली शक्ति प्राप्त करता है। उसकी वाणी में ऐसा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है कि वह बातचीत से पूरी दुनिया को वश में करने की सामर्थ्य रखता है। उसकी मुक़दमे, जुए, घुड़-दौड़ या अन्य सभी स्थानों पर निश्चय ही विजय होती है। पुत्र, पौत्र होते हैं। घर में इतना अधिक धन आने लगता है कि विलासी जीवन सम्पन्न होने लगता है। सारे शत्रु दास और नौकर की तरह वश में हो जाते हैं और पारिवारिक ऋण दूर होकर सुख-शान्ति बढ़ती है।

उसके घर में स्थायी लक्ष्मी निवास करने लगती है और उसे समस्त प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होने से वह समाज में पूर्ण यश, धन, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

प्रभाव

वास्तव में शास्त्रों की वाणी मिथ्या नहीं होती और हमने स्वयं अनुभव किया है कि तारा साधना से आर्थिक दृष्टि से समस्त प्रकार की परेशानियां दूर हो जाती हैं। यदि बेकार हो, तो नौकरी लग जाती है। व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है और आकस्मिक धन प्राप्ति होने से वह ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने लगता है।

दो साल पहले जोधपुर तारा साधना में शिविर लगाया था। साधकों ने मात्र छः दिनों में ही पूर्णता के साथ साधनाएं सम्पन्न की थीं। बाद में 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका के पाठकों और भाग लेने वाले साधकों ने स्वीकार किया था कि तारा महाविद्या साधना उनके जीवन का सौभाग्य था, क्योंकि साधना शिविर में भाग लेने से उनको ज्ञान हुआ कि साधना किस प्रकार से की जाती है, कैसे न्यास, ध्यान, विनियोग आदि होता है और किस तरह मन्त्र जाप सम्पन्न किया जाता है।

भाग लेने वाले सभी साधक गवाह हैं कि उन्होंने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि साधना के बाद उनके जीवन का स्तर काफ़ी ऊंचा उठ गया, मनोवांछित पद प्राप्त हो सका, मुक़दमे में तुरन्त सफलता मिली और आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त हुई।

नवरात्रि पर्व

तारा तन्त्र में लिखा है –

मघायां श्रवणायां वा रेवत्यांच विशेषतः
पूर्ण सिद्धिर्भवेत्तस्य तारा साधना वपु

अर्थात यदि नवरात्रि रेवती नक्षत्र से प्रारम्भ हो और उसमें साधक तारा साधना करे, तो उसे निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है और वह जो कुछ चाहता है, उसमें सफलता मिलती है।

यही नहीं, अपितु इस समय ग्रहों की स्थिति भी साधकों के लिए पूर्ण मनोयोगपूर्ण होती है। इस समय गुरु मीन राशि में तथा शनि वृश्चिक राशि में होता है। 'शक्ति-प्रमोद' जैसे ग्रन्थ में लिखा है –

मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थै शनैश्चरै
तारा सिद्धिर्भवेत्तस्य सिद्धिर्भवति पूर्णतः

अर्थात यदि प्रारब्धवश जीवन में नवरात्रि के दिनों में गुरु मीन राशि और शनि वृश्चिक राशि में हो और यदि ऐसे समय में तारा साधना सिद्ध की जाए, तो निश्चित ही उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है और वह जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त कर पाता है।

नवरात्रि पर्व तारा साधना के लिए श्रेष्ठ है। उच्चकोटि के योगी और साधक कई वर्ष प्रतीक्षा करते रहते हैं कि वे ऐसे शुभ योगों से युक्त नवरात्रि में तारा साधना सम्पन्न कर पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सकें।

गोपनीय रहस्य तारा सिद्धि

कोई भी साधना इतनी आसानी से नहीं होती, जितनी दिखाई देती है। प्रत्येक साधना की कुछ गुप्त कुंजियां और रहस्य होते हैं, जिनका प्रयोग करने पर ही साधना में सिद्धि मिलती है और फिर तारा तो महाविद्या है। संसार की दस महाविद्याओं में तारा का स्थान सर्वोपरि है। कहते हैं, जो अपने जीवन में तारा महाविद्या सिद्ध कर लेता है, तो बाक़ी नौ महाविद्याएं स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

यह साधना घर पर बैठकर शायद ही सिद्ध हो, क्योंकि कुछ ऐसी क्रियाएं और रहस्य होते हैं, जो अनुभवी गुरु ही समझा सकते हैं, सिखा सकते हैं, सम्पन्न करा सकते हैं। जिस प्रकार घर में बैठकर तैरना नहीं सीखा जा सकता, उसके लिए तो तैराक के साथ नदी या तालाब में उतरना ही पड़ता है, उसी प्रकार तारा सिद्धि भी घर पर बिना गुरु सहायता से सम्पन्न नहीं हो सकती।

तारा साधना सिद्धि के आठ गोपनीय रहस्य हैं, जिनको सीखकर इनका प्रयोग करके ही तारा सिद्धि में सफलता पाई जा सकती है। ये आठ रहस्य हैं —

1. तारा मुद्राएं : तारा सिद्धि के लिए इन मुद्राओं को सीखकर उनका प्रयोग अनुष्ठान में नित्य सम्पन्न होता है।

2. तारा मन्त्र : कीलन-उत्कीलन-तारा मन्त्र भगवान शिव से कीलित है तथा बंधा हुआ है और बंधे मन्त्र के जाप करने से सफलता सम्भव नहीं होती। इनका 'उत्कीलन' अर्थात बंधे हुए मन्त्र को खोल देने की क्रिया सीखकर तब मन्त्र जाप सम्पन्न करने से सफलता प्राप्त होती है।

3. तारा मन्त्र बीज : तारा मन्त्र के प्रत्येक बीज को समझने की ज़रूरत है और उसको समझकर फिर प्रयोग किया जाए, तभी सफलता प्राप्त होती है।

4. तारा सपर्या : तारा का एक विशेष सपर्या प्रयोग है, जिसके सम्पन्न करने पर ही तारा महाविद्या का साधक से पारस्परिक सम्बन्ध बनता है, और ऐसा बनने पर ही सिद्धि प्राप्त होती है।

5. न्यास, विनियोग : विनियोग के सम्पन्न करने से अनुष्ठान क्रिया प्रारम्भ होती है और न्यास के द्वारा महाविद्या का तेजस्वी स्वरूप साधक के शरीर में समाहित होता है, जिससे उसे सिद्धि एवं सफलता प्राप्त हो पाती है।

6. आत्म सामीप्यकरण : तारा यन्त्र अपने-आप में पेचीदा है, मगर तारा महाविद्या की अवस्थिति तो तारा यन्त्र में ही होती है और फिर साधक एक विशेष क्रिया के द्वारा उस यन्त्र को अपनी आत्मा साधना से सम्बन्ध स्थापित

करता है। यह क्रिया पेचीदा तो है, पर आवश्यक है, जिसे गुरु ही सम्पन्न करवा सकता है।

7. तारा यन्त्र लेखन : तारा सिद्धि के लिए एक विशेष तरीक़े से अष्टयन्त्र के द्वारा तारा यन्त्र लेखन सम्पन्न किया जाता है और ऐसा होने पर ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

लिखित्वा धारयेद्यस्तु कंठे वा मस्तके भुजे
तस्य सव्वार्थत्र्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते

8. तारा मन्त्र जप-पूजन-अर्चन आदि : और भी आवश्यक होता है। मन्त्र का शुद्ध उच्चारण, मन्त्र का प्रयोग और सम्पूर्ण पूजन पद्धति।

यह व्यक्तिगत रूप से बिना ज्ञान सम्पन्न हुए नहीं हो सकता, इसलिए अनुभवी गुरु की नितान्त आवश्यकता होती है और वही इन क्रियाओं को सम्पन्न कराकर साधक को सिद्धि की ओर अग्रसर कर सकता है।

फलदायक तन्त्र साधना

तन्त्र शब्द से घबराने या विचलित होने की ज़रूरत नहीं है। सही अर्थ में देखा जाए, तो कलियुग में तन्त्र ही ऐसी विद्या बची है, जिसके द्वारा हम अपने जीवन की समस्याओं को दूर कर सकते हैं और पूरी ज़िन्दगी आनन्द और मधुरता से गुजार सकते हैं।

तन्त्र का प्रयोग हमारे पूर्वजों ने पूर्णता के साथ सम्पन्न किया था और उनका जीवन सभी दृष्टियों से ज़्यादा सुखमय, आनन्ददायक और तनावरहित था। तन्त्र में न तो शराब की आवश्यकता होती है और न मांस, मछली आदि की। तन्त्र में न तो सम्भोग की आवश्यकता होती है और न गन्दे उपायों की। तन्त्र सही शब्दों में जीवन का सौन्दर्य है, जीवन की पूर्णता के लिए सहायक है और आनन्दमय जीवन की प्राप्ति का एक मात्र साधन है।

तन्त्र ही क्यों

यद्यपि भारतवर्ष में विविध साधना पद्धतियां प्रचलित हैं। उन साधनाओं द्वारा जीवन में अनुकूलता लाई जा सकती है, परन्तु वे सभी लम्बी और जटिल क्रियाएं हैं। उनकी अपेक्षा 'तन्त्र' सीधा, सरल और तुरन्त प्रभाव देने में सहायक विद्या है, जिसका प्रयोग भारत में सैकड़ों-हज़ारों वर्षों से होता आया है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सँम्पन्न कर सकता है। तन्त्र साधना के द्वारा तुरन्त प्रभाव प्राप्त किया जा सकता है और इसके द्वारा हम अपने जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाकर सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

कलियुग में जीवन बहुत ज़्यादा जटिल और पेचीदा बन गया है। झूठ, छल-कपट, असत्य आचरण, धोखाधड़ी, विश्वासघात, मुक़दमेबाज़ी आदि से जीवन हर समय असुरक्षित-सा अनुभव होने लगा है। ऐसी स्थिति में आदमी के लिए जीवन की पूर्णता प्राप्त करने का एकमात्र साधन तन्त्र ही बचा है, जिसके द्वारा वह उन समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सफलताओं को अपने जीवन में स्थान दे सकता है।

यह भी समाज में भ्रम फैला हुआ है कि यदि तन्त्र-प्रयोग सही ढंग से न हो, या किसी कारण से साधना में कमी रह जाए, तो उसका विपरीत असर होने लगता है। यह बात सरासर ग़लत है। यह भी अन्य साधना पद्धतियों की तरह एक पद्धति है। इसमें भी असफलता मिल सकती है, पर साधना में न्यूनता या साधना खंडित हो जाने पर जीवन पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता और न किसी को कोई तकलीफ़ ही होती है।

तन्त्र के अचूक प्रयोग

यूं तो जीवन में प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए तन्त्र का सहारा लिया जा सकता है, परन्तु मूल रूप से बारह कार्यों के लिए तन्त्र सर्वाधिक उपयोगी और तुरन्त फलदायक है। यदि अन्य साधनाओं द्वारा निम्न कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न किया जाए, तो उसमें लम्बा समय लगता है, पर तन्त्र के द्वारा इन कार्यों को तुरन्त सम्पन्न किया जा सकता है और अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

'तन्त्र सार' ग्रन्थ से उन बारह कार्यों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनके द्वारा तुरन्त और निश्चित सिद्धि प्राप्त कर सफलता पाई जा सकती है। इनसे आप अपने जीवन की समस्याओं को तो सुलझा ही सकते हैं, पास-पड़ोस के लोगों, सगे-सम्बन्धियों, मित्रों और हितैषियों के जीवन में आने वाली समस्याओं को भी इन मन्त्रों या साधनाओं के द्वारा दूर कर उन्हें सफलता दिला सकते हैं, जिससे वे आपके प्रति आभार मानेंगे और आपके प्रति उनके मन में ज़रूरत से ज्यादा सम्मान आएगा। एक प्रकार से देखा जाए, तो इसके माध्यम से व्यक्ति बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर सकता है।

तन्त्र सिद्धि के 12 कार्य इस प्रकार हैं –

1. दरिद्रता दूर करने व ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने के लिए।
2. शरीर के समस्त रोगों को दूर करने व पूर्ण आरोग्य प्राप्त करने के लिए।
3. किसी को भी तुरन्त अपने वश में करने और उससे इच्छानुसार कार्य कराने के लिए।
4. पारिवारिक कलह दूर करने, पति-पत्नी में घनिष्ठता और पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्ति के लिए।
5. भूतों को वश में करने व उनसे मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराने के लिए।
6. किसी को देखते ही उसका भूत, भविष्य और वर्तमान तुरन्त जानने के लिए।
7. भूमि में गड़े हुए धन का पता लगाने, उसे प्राप्त करने व आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए।
8. शत्रुओं को समाप्त करने व मुक़दमों में तुरन्त सफलता प्राप्ति के लिए।
9. शून्य में से किसी भी प्रकार का पदार्थ प्राप्त करने व उसका उपयोग करने के लिए।
10. राज्य में प्रसिद्धि प्राप्त करने, व्यापार वृद्धि, नौकरी में उन्नति एवं राजनीति में सफलता प्राप्त करने के लिए।
11. महाविद्या को सिद्ध कर सिद्ध योगी बनने के लिए।
12. संसार के समस्त कार्यों को तुरन्त सम्पन्न करने व प्रकृति को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए।

ये कुछ विद्याएं स्पष्ट की हैं, जो तन्त्र के माध्यम से सम्भव हैं, पर इसके अलावा भी तन्त्र द्वारा जीवन की अन्य समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्धि कैसे

मगर तन्त्र साधना घर में बैठकर सम्पन्न नहीं की जा सकती। किसी भी विद्या को सीखने के लिए ऐसे गुरु या मार्गदर्शक की आवश्यकता होती ही है, जो इस क्षेत्र में पूर्णतः सिद्धहस्त हो। उसके द्वारा तन्त्र की प्रारम्भिक क्रियाएं सीखनी आवश्यक है। यह जानना आवश्यक है कि तन्त्र साधना कैसे की जानी चाहिए, मन्त्र का उच्चारण किस प्रकार से हो, आसन, नियम, दिशा और अन्य मुद्राएं किस तरह की जाती हैं। यह भी पंता चलता है कि तन्त्र प्रयोग प्रारम्भ करते समय साधना काल में किस प्रकार के अनुभव और रोमांच आते हैं। कोई जब तन्त्र पूरी तरह से सीख ले, तो उसका प्रयोग कैसे किया जा सकता है, इसमें भी सिद्धहस्त हो जाता है।

इन सब तथ्यों की जानकारी किसी साधना शिविर में भाग लेने पर ही सम्भव है, क्योंकि उस समय साधक इतनी महान विद्याओं को पूर्णता के साथ प्राप्त करता है, समझता है, सीखता है और प्रयोग करता है। इसके साथ-ही-साथ साधना काल में गुरु की निगाह बराबर उस पर बनी रहती है और वह बता देता है कि तुमने आज कहां पर ग़लती की और इस ग़लती को कैसे सुधारा जाना चाहिए। इस अवधि में वह तन्त्र की मूलभूत क्रियाओं को तो सीखता ही है, अपने-आप में इतना होशियार और परिपक्व हो जाता है कि उस शिविर में बताई जाने वाली साधनाओं को तो सम्पन्न करता ही है, इसके अलावा भी अन्य तान्त्रिक साधनाओं को भी बाद में अपने घर में बैठकर सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि उसे यह अनुभव हो जाता है कि तन्त्र प्रयोग और तन्त्र साधना किस प्रकार सम्पन्न की जानी चाहिए और यह भी जान जाता है कि अपने शरीर पर रक्षा कवच बना देना चाहिए, जिससे किसी प्रकार की हानि न हो।

साधना शिविर

साधना शिविर के माध्यम से उन सारी क्रियाओं और विद्याओं को भली प्रकार से समझाया जाता है, जिससे कि आदमी साधना क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सके। शिविर में पुरुष या स्त्री, वृद्ध या युवक कोई भी भाग लेकर सफलंता की ओर अग्रसर हो सकता है।

कनकावती साधना

तन्त्र की यह एक महत्त्वपूर्ण साधना है, जिसके द्वारा कनकावती अप्सरा को विशेष मन्त्रों के द्वारा अपने वश में किया जा सकता है और वश में करने के बाद उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है। 'मन्त्र महोदधि' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में कनकावती के बारे में लिखा है।

सहस्र मन्त्र जपेत् एवं सप्तदिनां कुर्यात्
अष्टमरात्रौ सा सर्वालंकारसंयुता आगच्छति
साधकस्य भार्या भवति। द्वादशजनानां
वस्त्रालंकारभूषणानि ददाति॥

अर्थात यदि सही तरीक़े से गुरु के सान्निध्य में नित्य एक हज़ार मन्त्र जाप करें और यह सात दिन तक किया जाए, तो आठवीं रात्रि को कनकावती सुन्दरी अप्सरा समस्त अलंकारों एवं गहनों से सज-धजकर आती है और साधक की प्रेमिका बनकर जीवन-भर उसके साथ रहती है। उसे जीवन-भर धन, द्रव्य आदि निरन्तर देती ही रहती है।

इन साधनाओं को कई गृहस्थ साधकों ने सम्पन्न किया है और इसमें सफलता पाई है। देखने में आया है कि मामूली व्यक्ति ने भी ऐसी महत्त्वपूर्ण साधना सम्पन्न कर अपने पूरे जीवन को सुख, सौभाग्य और ऐश्वर्य में बदल दिया।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा।

इसके साथ-ही-साथ कुछ विशेष मुद्राओं, न्यास, ध्यान और क्रियाओं को भी सम्पन्न करना पड़ता है। यह साथ-ही-साथ किया जाता है। उसी से इस साधना में सफलता प्राप्त होती है। ये क्रियाएं लिखकर समझाई नहीं जा सकतीं। इन्हें तो साधक गुरु के चरणों में बैठकर ही कोई समझ सकता है, अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है।

कर्ण पिशाचिनी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना जीवन की महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय साधना है, जिसे बड़े से बड़ा साधक भी सम्पन्न करने का प्रयत्न करता है। यह साधना सिद्ध होने पर पिशाचिनी सुन्दर शृंगार किए अदृश्य रूप से निरन्तर साधक के साथ रहती है और साधक जब भी कोई प्रश्न करता है, तो वह कान में उसका उत्तर दे देती है। खासतौर से किसी के भी भूतकाल को जानने की यह श्रेष्ठतम साधना है। किसी अधिकारी या किसी व्यक्ति को देखते ही वह पिशाचिनी आपके कान में कह देती है कि इस व्यक्ति का क्या नाम है, कहां रहता है, इसने जीवन में कौन-कौन से ग़लत काम किए हैं। एक प्रकार से उसका पूरा कच्चा चिट्ठा साधक की आंखों के सामने स्पष्ट हो जाता है। जब साधक ये गोपनीय बातें उसके सामने रखता है, तो वह आदमी चमत्कृत हो उठता है और उसके पांवों में गिर पड़ता है।

इस साधना के द्वारा किसी भी स्त्री की पिछली ज़िन्दगी के राज मालूम किए जा सकते हैं, झूठ बोलने वाले पति को पकड़ा जा सकता है और व्यापारी, मित्र, सम्बन्धी आदि के मन में क्या विचार हैं, इसके बारे में पूरी जानकारी तुरन्त ही प्राप्त की जा सकती है, इसीलिए तो कहा जाता है कि जिसने कर्ण पिशाचिनी साधना सम्पन्न कर ली, उसने एक दृष्टि से आधे संसार को जीत लिया।

वशीकरण सिद्धि

आज के युग में जो वशीकरण सिद्धि प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में बाक़ी बचता ही क्या है। ऐसी स्थिति प्राप्त करने के बाद वह अपने अधिकारी, अपने मित्र, अपनी प्रेमिका, प्रेमी या किसी भी व्यक्ति को कुछ ही क्षणों में तन्त्र के द्वारा अपने वश में करके उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा सकता है और यह निश्चित है कि जब तन्त्र के द्वारा किसी को वश में किया जाता है, तो वह जीवन-भर उसके संकेतों पर काम करता रहता है।

इस प्रयोग के भी बारह भेद हैं —

1. स्त्री वशीकरण, 2. राज्यवर्गीय वशीकरण, 3. इलायची मोहिनी वशीकरण, 4. समावशीकरण, 5. शत्रु वशीकरण, 6. मन्त्री वशीकरण, 7. पति वशीकरण, 8. आकर्षण सिद्धि, 9. विश्व वशीकरण, 10. लक्ष्य पुरुष समावशीकरण, 11. पत्थर से भी कठोर व्यक्ति वशीकरण, 12. सर्वजन वशीकरण।

अन्नपूर्णा सिद्धि

गढ़वाल का एक महत्त्वपूर्ण शहर है 'टिहरी' और इससे थोड़ी ही दूर पर एक महत्त्वपूर्ण आश्रम है 'शिवानन्द आश्रम', जिसमें लगभग तीस-चालीस शिष्य और एक सौ पन्द्रह वर्ष के स्वामी शिवानन्द जी रहते हैं। वह सिद्ध योगी हैं और पूरे गढ़वाल में उनकी चर्चा है। इतनी अधिक आयु प्राप्त होने पर भी वह नित्य दस-बारह मील पहाड़ों में पैदल विचरण करते हैं। आंखों पर चश्मा लगाने की ज़रूरत नहीं। सिर के बाल काले हैं और मुंह में पूरे दांत हैं। पिछले 90 साल से वे विविध साधनाओं में लीन हैं, जिसकी वजह से सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, वह है उन्हें प्राप्त अन्नपूर्णा साधना सिद्धि।

गढ़वाल में शायद ही कोई व्यक्ति बचा होगा, जिसने शिवानन्द आश्रम की यात्रा नहीं की होगी और वहां भोजन नहीं किया होगा। सभी शिष्य अत्यन्त विनम्र आग्रह करके भोजन कराते हैं, जब कि दूसरे आश्रम में किसी प्रकार का कोई खाद्य पदार्थ नहीं है।

जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण की रट लगाए हुए हैं, जो पश्चिम की टेक्नोलॉजी के बुख़ार से पीड़ित हैं, जो रह-रहकर चमत्कार आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनके लिए यह आश्रम चुनौती है, आंखें खोलने वाला है और आश्वस्त करने वाला है कि वे वहां जाएं, अपनी आंखों से देखें, अपने पास जितनी भी गुप्तचरी, चालाकी और होशियारी है, उन्हें इस्तेमाल करें और फिर विश्वास करें कि हमारी साधना पद्धतियां पूर्णतः प्रामाणिक हैं। आवश्यकता है सही और कर्मठ व्यक्तियों की, ज़रूरत है समर्पित शिष्यों की, जो पूरी तरह से

साधना की ओर बढ़ें और सफलता प्राप्त करें। स्वामी शिवानन्द का पता है — शिवानन्द आश्रम, ग्राम- चिरैया मानुवा, ज़िला - टिहरी।

स्वामी शिवानन्द जी पूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य रहे हैं और कई वर्षों तक उनके साथ रहकर उनकी सेवा करते हुए कुछ विविध साधनाएं सम्पन्न की हैं। उनके द्वारा ही स्वामी शिवानन्द जी को अन्नपूर्णा साधना प्राप्त हुई थी और सिद्ध होने पर आज्ञा दी थी कि तुम्हें गढ़वाल में ही कहीं पर आश्रम स्थापित करना है और ग़रीब लोगों के लिए अन्न, धन जुटाना है, उनके बच्चों को शिक्षा की व्यवस्था करनी है और साथ आध्यात्मिक चेतना जाग्रत करनी है।

वास्तव में उन्होंने पूरी क्षमता के साथ गुरु-आज्ञा शिरोधार्य कर गुरु-दक्षिणा दी है। आज आश्रम की तरफ़ से आसपास के गांवों को समय-समय पर मुफ़्त भोजन, दवाइयां और उनके बच्चों को शिक्षा आदि देने की व्यवस्था है। पिछले वर्ष जब गुरुदेव गढ़वाल की ओर गए थे, तब मैं और कुछ शिष्य साथ में थे, तब तक हमें पता नहीं था कि स्वामी शिवानन्द जी पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के शिष्य हैं, जब आश्रम के निकट गाड़ी पहुंची, तो पहले तो शिवानन्द जी को विश्वास ही नहीं हुआ कि इतने वर्षों बाद गुरुदेव अचानक आ सकते हैं। वह जड़वत खड़े-खड़े ताकते ही रह गए और फिर उनकी आंखों से प्रेम के आंसू प्रवाहित होने लगे और 115 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति बालक की तरह दौड़कर गुरुदेव के चरणों में लोट-पोट हो गया और जिस प्रकार कोई बेल पेड़ से लिपट जाती है, ठीक उसी प्रकार शिवानन्द गुरुदेव के चरणों से लिपट गए।

अन्नपूर्णा साधना विश्वविख्यात साधना है और प्रत्येक साधक, योगी या संन्यासी के मन में यह भावना बराबर रहती है कि वह अपने जीवन में एक बार अन्नपूर्णा साधना अवश्य ही सिद्ध करे। यह साधना सिद्ध होने पर उसके जीवन में सभी भोग्य पदार्थों को अन्नपूर्णा स्वयं अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहकर प्रदान करती है। विश्वामित्रप्रणीत 'तन्त्रसार' में अन्नपूर्णा साधना के सात लाभ स्पष्ट किए हैं —

1. इस साधना के सिद्ध करने से व्यक्ति सिद्ध योगी बन जाता है और महत्त्वपूर्ण सिद्धियां उसे स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। साथ ही ऐसी महादेवियों के दर्शन उसे प्रत्यक्षतः होते रहते हैं, जिससे उसका साधना स्तर निरन्तर ऊंचा उठता रहता है।
2. ऐसा साधक सिद्ध योगी कहलाता है और अन्नपूर्णा साधना सिद्ध करने से कई सिद्धियां अनायास ही सिद्ध हो जाती हैं। इससे वह साधना क्षेत्र में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन जाता है।
3. अन्नपूर्णा साधना सिद्ध करने पर सर्वशक्तिमान विश्वविजयी अन्नपूर्णा हमेशा उसके सामने रहती है और वह जब भी उसका नाम उच्चारण कर जिस पदार्थ की जितनी मात्रा कहता है, वायुमार्ग से ही वह पदार्थ प्राप्त होता है और उसे आते हुए कोई देख नहीं पाता।
4. ऐसा पदार्थ पूर्ण शुद्ध, पवित्र, असली, स्वादिष्ट और रुचिकर होता है।
5. अन्नपूर्णा सिद्ध करने वाला व्यक्ति बीस-पच्चीस विविध प्रकार के व्यंजन एक साथ मंगा सकता है और एक घंटे में एक लाख व्यक्तियों को भोजन कराने की सामर्थ्य रखता है।
6. ऐसा साधक चाहे अपने घर में हो या पराये घर में, चाहे जंगल में हो या पर्वत शिखर पर, इससे उसे कोई बाधा नहीं आती और अन्नपूर्णा के माध्यम से वह प्रत्येक पदार्थ प्राप्त करता रहता है।
7. अन्नपूर्णा साधना सिद्ध करने के बाद साधक के लिए सिद्धाश्रम के रास्ते खुल जाते हैं और वहां जाने में उसे विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है।

इस संसार में अन्नपूर्णा साधना से महत्त्वपूर्ण साधना और कोई नहीं है। पिछले कुम्भ में योगी निर्मलदेव चैतन्य ने दो लाख साधुओं को छत्तीसों व्यंजन खिलाकर चकित कर दिया था। जब कि यह सामग्री एक छोटे से टेंट से बाहर उनके शिष्य ला रहे थे और वह टेंट मुश्किल से पांच फ़ीट लम्बा और पांच फ़ीट चौड़ा था। स्वामी जी इस साधना के सिद्धहस्त योगी हैं और उन्होंने कई बार इस साधना को प्रत्यक्ष कर दिखाया है। गढ़वाल में तो बच्चे-बच्चे की

ज़बान पर उनका नाम 'अन्नदाता बाबा' है। उन्होंने कई वर्ष पूर्व हिमालय में महायोगी स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से अन्नपूर्णा साधना सीखी थी, सफलतापूर्वक सिद्ध की थी और गुरुदेव की आज्ञा से ही वह इस क्षेत्र में रम गए थे।

उस दिन भी जब हम पहुंचे, तो शाम के लगभग चार बज रहे थे। घंटे-भर बाद हमने देखा कि आसपास से कई ग्रामीण पुरुष, स्त्रियां, बालक और वृद्ध आश्रम में आ रहे हैं और शिवानन्द जी के चरण छूकर एक तरफ़ बैठ रहे हैं। लगभग पांच बजे शिष्यों ने उन सबको भोजन कराया। उस दिन बेसन के लड्डू, खीर, पूड़ी और अन्य विविध खाद्य पदार्थ थे। शिवानन्द जहां बैठते हैं, उसके पास एक छोटी-सी कुटिया मुश्किल से दस फ़ीट लम्बी और दस फ़ीट चौड़ी होगी। इस कुटिया में जाने का एक छोटा-सा दरवाज़ा है। शिष्य लोग इसी कुटिया में से जाकर खाद्य पदार्थ से भरे थाल बाहर लाते और उन लोगों को परोसते, फिर ख़ाली थाल उसी कुटिया में जाकर रख देते। मैं खड़ा-खड़ा यह देख रहा था। गांव वालों के जाने के बाद हम सब लोगों को भोजन कराया गया। इस भोजन में बिल्कुल दूसरे प्रकार के भोज्य पदार्थ थे और ये सब उसी कुटिया में से बाहर आ रहे थे।

जब हम भोजन कर रहे थे, तो स्वामी शिवानन्द जी स्वयं हमारी भोजन व्यवस्था देखने के लिए बाहर आए, जिससे उन्हें सन्तोष हो सके कि गुरुभाइयों को बराबर भोजन परोसने की व्यवस्था हो रही है, किसी प्रकार की कमी नहीं है। मैं तब तक भोजन कर चुका था। स्वामी शिवानन्द हम लोगों के लिए लगभग आधा घंटा खड़े रहे। जब हम सब लोग भोजन कर चुके, तो मैंने वहीं खड़े-खड़े स्वामी शिवानन्द जी को प्रणाम कर कहा, "क्या मैं इसी समय उस कुटिया में जा सकता हूं, जहां से खाद्य पदार्थ लाए जा रहे हैं?"

शिवानन्द जी ने कहा, "अवश्य-अवश्य, इसमें पूछने की क्या बात है।"

मैं सीधा उस कुटिया के अन्दर घुस गया, पर अन्दर जाकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। कुटिया में न तो किसी प्रकार का कोई बर्तन था और न कोई खाद्य पदार्थ। गोबर से लीपी हुई वह कुटिया अन्दर से स्वच्छ और पवित्र बनी हुई थी।

तभी एक शिष्य कुटिया के अन्दर आया, ज़मीन पर हाथ रखा और बोला, "खीर पात्र!" और दूसरे ही क्षण उसके हाथों के पास ही स्वादिष्ट खीर का बर्तन उपस्थित था। वह शिष्य उस खीर को लेकर परोसने के लिए बाहर निकल गया।

मैं लगभग पन्द्रह मिनट तक कुटिया में खड़ा रहा। शिष्य आते, ज़मीन पर हाथ रखते और जिस खाद्य पदार्थ की कामना करते, उससे सम्बन्धित पात्र उनके हाथों के आगे उपस्थित होता और वह शिष्य उस पात्र को परोसने के लिए चला जाता।

अब मेरे मन का संशय पूरी तरह से दूर हो गया और यह पक्का विश्वास हो गया था कि स्वामी शिवानन्द जी को पूर्णता के साथ अन्नपूर्णा साधना सिद्ध है। इस साधना द्वारा वह कहीं भी कुछ भी मंगा सकते हैं। इससे पहले इलाहाबाद में कुम्भ मेले में उन्होंने इसी साधना द्वारा एक लाख संन्यासियों को भोजन कराया था।

हम यहां तीन दिन रहे। दूसरे दिन मैंने एकान्त पाकर स्वामी शिवानन्द जी से विनम्रता के साथ निवेदन किया कि मैं आपसे अन्नपूर्णा साधना विधि सीखना चाहता हूं, मुस्कुराए और बोले, "तुम तो अत्यन्त विस्तृत सागरवत सरोवर के निकट हो, जहां हज़ारों साधनाएं हाथ बांधे खड़ी हुई हैं, फिर इस छोटे से पोखर के पास जल की कामना कर रहे हो, यह तो आश्चर्य है।"

मैंने कहा, "आप ठीक कह रहे हैं, परन्तु यहां पर मैंने जो कुछ देखा, वह अपने-आप में चकित कर देने वाला है। गुरुदेव तो प्रदर्शन या चमत्कार में विश्वास नहीं करते और न हमारी हिम्मत इस प्रकार से कहने की होती है। आप हमारे ज्येष्ठ गुरुभ्राता हैं और आप से तो अपने मन की बात कह ही सकते हैं।"

उन्होंने दो क्षण के लिए आंखें बन्द कीं — जैसे उन्होंने पूज्य गुरुदेव से अनुमति प्राप्त की हो और फिर मुझे अन्नपूर्णा साधना सम्पन्न करने की अनुमति दी। साथ ही पूर्ण साधना विधि भी समझा दी।

साधना विधि

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। इसे पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करना चाहिए। यह एक महीने की साधना है। पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ कर, अगले पुष्य नक्षत्र में ही इस साधना को समाप्त किया जाता है। नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र-जाप होना आवश्यक है। इस कार्य में नित्य ज़्यादा-से-ज़्यादा तीन घंटे लगते हैं। साधक स्नान कर पीली धोती पहन ले और कन्धों पर पीली धोती डाल ले। रेशम की धोती होनी चाहिए। सामने घी का दीपक जला ले और अगरबत्ती प्रज्वलित कर ले। इस साधना में निम्न वस्तुओं की अनिवार्यता होती है, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए — 1. अन्नपूर्णा सपर्या चित्र, 2. अन्नपूर्णा विग्रह यन्त्र, 3. मयूर शिखा, 4. दक्षिणेश्वरी हृदय तन्त्र, 5. शतपुष्पा, 6. धीरकुच्ची माला, 7. आजीवन अन्नपूर्णा सामीप्य सिद्धि विग्रह।

पुष्य नक्षत्र की रात्रि को उत्तर की ओर मुंह कर पीले रेशम के बने हुए आसन पर बैठ जाएं। सामने एक लम्बा-चौड़ा, पीला रेशम वस्त्र बिछा दें और सामने ही अन्नपूर्णा के चित्र को स्थापित कर लें, फिर बाक़ी यन्त्रों को भी उसके सामने ही स्थापित कर दें। इसके बाद सात जायफल रख दें और पास में जल-पात्र, दीपक, अगरबत्ती, केसर, कुंकुम, अक्षत तथा नारियल रख दें।

इसके बाद कुंकुम या केसर से अन्नपूर्णा के चित्र का पूजन करें। सभी यन्त्रों को जल से धो-पोंछकर कुंकुम की बिंदिया लगावें। अगरबत्ती, दीपक जला लें और प्रत्येक जायफल के सामने एक बादाम, एक लौंग तथा एक इलायची का भोग लगावें और फिर इक्यावन माला मन्त्र जाप करें। मन्त्र जाप से पूर्व विनियोग और न्यास कर दें। विनियोग का तात्पर्य उस कार्य को अनुष्ठानपूर्वक सम्पन्न करने की अनुज्ञा है और न्यास का तात्पर्य अपने शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करने की प्रक्रिया है।

विनियोग

ओऽम् अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय
स्तोत्र महा मन्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषि

उष्णिक् छन्दः महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल
सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, ह्रीं बीजं, हूं
शक्तिः क्रीं कीलकं, श्रीं अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात्
समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः

हाथ में जल लेकर उच्चारण करते हुए जल ज़मीन पर गिराएं।

इसके बाद न्यास करें और उच्चारण करते हुए पूरे शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए सम्पूर्ण शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करें।

न्यास

श्री महाकाल भैरव ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक् छन्दसेनमः मुखे। महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि श्रीं। अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः लिंगे। ह्रीं शक्तये नमः नाभिः। क्रीं कीलकाय नमः पादपौ। समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थ मन्त्र जपे विनियोगाय मनः सर्वांगे।

मन्त्र

ओं क्रीं क्रूं क्रों हूं हूं हूं ह्रीं नीं
ओऽम् ओऽम् ओऽम् ओऽम् अन्नपूर्णायै नमः

पूरी साधना में तीन बातों का पालन आवश्यक है — 1. पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें। 2. मध्याह्न में एक समय भोजन करें, पर उसमें स्वादिष्ट एवं विविध व्यंजन तथा खाद्य पदार्थ हो। 3. बीच में व्यवधान या अनियमितता न रखते हुए, अगले पुष्य नक्षत्र तक नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र जाप चैतन्य स्फटिक माला से करें।

अगले पुष्य नक्षत्र को मन्त्र पूरा होने पर अन्नपूर्णा सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाती है। दूसरे दिन सुबह सात कन्याओं को भोजन करवा दें। और इन सभी यन्त्रों और चित्रों को अपने पूजा-स्थान में या किसी एकान्त स्थान में स्थापित कर दें।

शक्तिपात एवं ब्रह्मत्वसिद्धि

मानव जीवन का महत्त्व सर्वोपरि है। शास्त्रों में कथन है कि जो मानव जीवन पाकर भी जीवन का आनन्द और पूर्णता प्राप्त नहीं करता, उसका जीवन अकारथ ही चला जाता है। जीवन का उद्देश्य खाना-पीना, सोना या सन्तान पैदा करना ही नहीं है, अपितु प्रकृति के उन रहस्यों को भी जानना है, जिससे यह सृष्टि संचालित है। जीवन के उन तथ्यों को भी समझना है, जिनके लिए प्रभु ने हमें जीवन दिया है और उस ब्रह्मत्व को प्राप्त करना है, जिसे वेदों ने 'पूर्णमदः पूर्णमिदं' कहा है। बहुत ही सौभाग्यशाली व्यक्ति इन रहस्यों को प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं।

जैसा कि बताया गया है कि जीवन का उद्देश्य खाना-पीना और मल-मूत्र-भरी ज़िन्दगी जीना ही नहीं है, अपितु ब्रह्म से साक्षात्कार कर प्रकृति के साथ अपने को एकाकार करना है, इसी उद्देश्य के लिए प्रत्येक मानव को ब्रह्मत्व साधना सम्पन्न करने के लिए शास्त्रों ने कहा है और जब ब्रह्मत्व साधना सिद्ध हो जाती है, तो वह जीवन के उन रहस्यों का पता लगा लेता है, जो मानव के मूलभूत तथ्य हैं।

कठोपनिषद के अनुसार ब्रह्मत्व साधना के द्वारा ही जीवन के मूलभूत तथ्यों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। साथ ही ब्रह्मत्व साधना से निम्न तथ्य एवं उपलब्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं।

1. यह ज्ञात हो जाता है कि मेरे जीवन का निर्माण किस उद्देश्य के लिए हुआ है। मैं अपने जीवन को किस प्रकार से ऊंचा उठा सकता हूं।

2. उसे यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है कि वह अपने भूतकाल को टेलीविज़न पर फ़िल्म देखने की तरह देख सकता है कि वह इससे पहले के जीवन में कहां पैदा हुआ था और उस जीवन में किन कार्यों का फल भुगतना पड़ रहा है।
3. वर्तमान में जो पत्नी या पुत्र है, क्या पूर्व जन्म में भी यही पत्नी थी, अगर नहीं, तो उस जीवन में कौन-सी स्त्री उसकी पत्नी थी, कौन पुत्र थे और अब वे कहां पर हैं?
4. मेरे जीवन की यह दुख, दरिद्रता, अभाव, कष्ट और बाधाएं किस वजह से हैं और किन युक्तियों से इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है।
5. शरीर के कौन-कौन से चक्र हैं और उन चक्रों को सिद्ध कर किस प्रकार से रोगमुक्त बना जा सकता है।
6. किन तरीक़ों से साधक सौ साल से ज़्यादा आयु प्राप्त करता हुआ अपने इष्ट के साक्षात दर्शन कर सकता है।
7. किन युक्तियों से लक्ष्मी, गणपति, शिव आदि के दर्शन कर जीवन को पूर्णत्व दिया जा सकता है।
8. सहस्रार जागरण किस प्रकार से हो सकता है और किस प्रकार से संसार में घटित घटनाओं को पहले से ही जाना जा सकता है।
9. किन तरीक़ों से सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया जा सकता है और सैकड़ों वर्षों की आयु प्राप्त योगियों के साथ बैठकर उनसे ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
10. सभी प्रकार की कमियों, परेशानियों, दरिद्रता और अभावों को दूर कर किस प्रकार से अखंड आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।
11. किस प्रकार से साधक सिद्ध योगी बन पूरे संसार का कल्याण करने में समर्थ हो सकता है।

ये सब उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं — ब्रह्मत्व साधना सिद्धि से। शास्त्रों में मानव जीवन को पूर्णता प्राप्ति ही माना है और इस ब्रह्मत्व प्राप्ति

से हम अपने जीवन को पूर्णता, सुन्दरता और श्रेष्ठता दे सकते हैं। हम अपनी आंखों से वसिष्ठ और विश्वामित्र को देख सकते हैं। यह जान सकते हैं कि उनके आश्रम किस प्रकार के थे, उनका जीवन कैसा था। साथ ही हम यह भी जान सकते हैं कि भविष्य में हमारा जन्म कहां होगा। यही नहीं, अपितु इस साधना के द्वारा किसी भी व्यक्ति का पूर्व जीवन और भावी जीवन भली प्रकार से देखा जा सकता है। यह जाना जा सकता है कि सामने वाला व्यक्ति या स्त्री जन्म से पहले कहां थे, किस जगह जन्म लिया था और किस प्रकार से जीवन व्यतीत किया था, साथ ही एक क्षण में यह भी जाना जा सकता है कि कोई व्यक्ति या स्त्री मृत्यु के बाद किस जगह जन्म लेगी और क्या सम्बन्ध रहेंगे।

वास्तव में ब्रह्मत्व साधना जीवन की सर्वोच्च और दुर्लभ साधना है। हज़ारों रुपए ख़र्च करने के बाद भी ऐसा गुरु नहीं मिल सकता, जो ब्रह्मत्व सिद्ध हो और इस साधना के बारे में समझा सके, प्रस्तुत कर सके, सिखा सके और सफलता की ओर अग्रसर कर सके।

कठोपनिषद में बताया गया है कि सैकड़ों वर्षों की तपस्या और गुरु सेवा करने के बाद गुरु की तरफ़ से उसे संकेत मिलता था कि वह ब्रह्मत्व साधना में भाग ले सकता है और जिस दिन उस शिष्य को सूचना मिलती कि गुरुदेव उसे ब्रह्मत्व साधना में अग्रसर कर रहे हैं, तो वह दिन उसके लिए अत्यन्त सौभाग्यदायक और स्वर्णिम होता, क्योंकि वह इसके द्वारा जीवन के सम्पूर्ण सत्यों और तथ्यों का पता लगाने में समर्थ हो पाता।

शक्तिपात

भारत में ही नहीं, अपितु पश्चिम में ख़ासतौर से अमेरिका में हर व्यक्ति को 'क्रेज' है कि वह भारत जाए और किसी योग्य गुरु के सान्निध्य में साधना सम्पन्न कर शक्तिपात प्राप्त करे।

यहां भी प्रत्येक साधक और व्यक्ति यह जानता है कि शक्तिपात जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। जिस व्यक्ति के भाग्य उदय होते हैं, जिस व्यक्ति पर विशेष कृपा होती है, उसे ही अपने जीवन में योग्य गुरु के द्वारा शक्तिपात प्राप्त होता है।

प्रश्न यह उठता है कि शक्तिपात है क्या? इसका उत्तर सरल शब्दों में इस प्रकार से दिया जा सकता है कि जब गुरु यह अनुभव करता है कि शिष्य निरन्तर सेवा के द्वारा साधना में सफलता पाना चाहता है और उसने एक-दो बार साधनाएं की भी हैं, पर किसी वजह से साधना में सफलता मिल नहीं पा रही है।

इसका कारण पूर्व जन्म के दोष या न्यूनताएं हो सकती हैं, या यह भी हो सकता है कि साधना काल में कुछ न्यूनता रह जाती हो, अथवा मन को उतना एकाग्र नहीं कर पाता हो, जितना होना चाहिए। तात्पर्य यह कि किसी-न-किसी वजह से वह साधना में असफलता प्राप्त कर रहा है और शरीर में साधनात्मक शक्ति उतनी प्राप्त नहीं कर पाता, जितनी कि होनी चाहिए, जिससे उसे पूर्ण सिद्धि और सफलता मिल जाए। तब गुरुदेव अत्यधिक कृपा करते हुए अपने शरीर में स्थित विशेष तपस्यात्मक और साधनात्मक शक्ति से कुछ विशेष शक्ति उस शिष्य को प्रदान कर देते हैं, जिससे वह साधना के क्षेत्र में पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

इस शक्ति की रूपान्तरण क्रिया को ही शक्तिपात कहते हैं। यह क्रिया इतनी आसान नहीं है। गुरु भी साधनात्मक शक्ति को बहुत कठिनाई से प्राप्त करता है और अपने आत्म में संचय करता है। उस संचय-युक्त साधना शक्ति में से वही गुरु शक्ति अपने शिष्य को प्रदान करता है, जो स्वयं सक्षम होता है, जो दयालु और शिष्य के ऊपर कृपा करने वाला होता है, जिसके मन में यह चिन्तन होता है कि प्रत्येक दृष्टि से शिष्य को ऊंचा उठाना है, उसे पूर्णत्व प्रदान करना है और ऐसी सिद्धि देना ही है, जिससे कि वह अपनी साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सके; वह यह अनुभव कर सके कि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र सही और प्रामाणिक हैं; इन साधनाओं की सिद्धि से वह अपने जीवन की न्यूनताओं को दूर कर सके और अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता दे सके।

शक्तिपात की उपलब्धियां

गुरु अपने शिष्य को सामने बैठाकर अपने शरीर को पूरी तरह से ओजयुक्त बना और शक्ति को केन्द्रीभूत कर मन्त्रों के माध्यम से शिष्य के शरीर में

उस साधनात्मक शक्ति को रूपान्तरित कर देता है और ज्यों ही यह क्रिया होती है, त्यों ही शिष्य को अद्भुत अनिर्वचनीय उपलब्धियों का अहसास होने लगता है। ख़ासतौर से निम्न बारह घटनाएं तो उसके जीवन में तुरन्त घटित होने लगती हैं —

1. उसका सारा शरीर दिव्य, पवित्र और प्रभावयुक्त हो जाता है।
2. उसकी वाणी में कुछ ऐसी ताक़त और क्षमता आ जाती है कि वह जो भी बोलता है, उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है और उस वाणी के द्वारा वह प्रशंसनीय बन जाता है।
3. उसके शरीर में अचानक आकर्षण क्षमता बढ़ जाती है। सारा शरीर सम्मोहक हो जाता है और देखने वाला उस व्यक्तित्व को देखकर ठगा-सा रह जाता है।
4. अचानक उसका ध्यान लग जाता है और वह अखंड आनन्द में लीन हो जाता है।
5. उसे ध्यान में विभिन्न देवताओं के साक्षात दर्शन होने लगते हैं और उसका सारा शरीर गद्‌गद हो जाता है।
6. किसी भी व्यक्ति को देखते ही स्वतः उसके मस्तिष्क में चिन्तन आता है कि यह व्यक्ति पूर्व जन्म में कहां था और क्या था, इसका-मेरा पूर्व जीवन में क्या सम्बन्ध रहा था?
7. साधक को अपने स्वयं के पूर्व जीवन के बारे में पूरा-पूरा ज्ञान हो जाता है कि उसका जन्म कहां हुआ था और पूरा जीवन कहां पर किस प्रकार से व्यतीत हुआ था, वर्तमान में जो दुख और परेशानियां हैं, वे पूर्व जीवन के किन कारणों या कृत्यों से हैं।
8. उसी क्षण साधक को हिमालय के विभिन्न दृश्य, योगियों और साधुओं के दर्शन और सिद्धाश्रम का ज्ञान होने लगता है। उसे यह चिन्तन स्पष्ट हो जाता है कि पूर्वजन्म में वह हिमालय में किन-किन स्थानों पर रह चुका है और क्या साधनाएं सम्पन्न की हुई हैं?

9. किसी भी पुरुष या स्त्री को देखते ही उसका भूतकाल और वर्तमान आंखों के सामने साकार हो जाता है। उसे यह भी ज्ञात हो जाता है कि इस व्यक्ति की ज़िन्दगी में निकट भविष्य में क्या-क्या घटनाएं घटित होने वाली हैं और उन दुर्घटनाओं से कैसे बचा जा सकता है।
10. शक्तिपात होते ही उसका सारा शरीर रोगमुक्त होकर गुलाब के पुष्प की तरह हल्का हो जाता है और वह भ्रमर की तरह नृत्य करने लग जाता है, उसे ऐसा आनन्द अनुभव होने लगता है, जैसा उसने पूरे जीवन में सोचा भी नहीं होगा।
11. शक्तिपात होते ही सारा शरीर पवित्र और दिव्य हो जाता है तथा विभिन्न साधनाओं में तुरन्त सफलताएं मिलने लग जाती हैं।
12. शक्तिपात से साधक तीव्रता के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सफल हो पाता है और वह सभी दृष्टियों से तनावमुक्त होकर जीवन का असली आनन्द प्राप्त करने लगता है।

शक्तिपात तो जीवन का सौन्दर्य है। कोई अभागा व्यक्ति ही होगा, जिसे गुरु की तरफ़ से शक्तिपात का निमन्त्रण मिले और वह भाग न ले सके, क्योंकि ऐसा सौभाग्य तो जीवन में कभी-कभी ही प्राप्त होता है।

श्री बटुक भैरव प्रयोग

तन्त्र-मन्त्र केवल उच्चकोटि के तान्त्रिकों की ही बपौती नहीं रही है। और यह भी आवश्यक नहीं है कि मन्त्र में गहन पूजा पद्धति या तन्त्र चर्चा हो। कुछ साधनाएं ऐसी हैं, जो अपने-आप में सिद्धिदायक एवं सफलतादायक हैं, जिसके लिए न तो किसी प्रकार के विधि-विधान की ज़रूरत है, न पूजा पद्धति की। न आंख बन्द कर मन्त्र जाप करने की आवश्यकता है और न लम्बे-चौड़े आसन-प्राणायाम आदि की।

बटुक भैरव साधना ऐसी ही तेजस्वी, शीघ्र सिद्धिदायक और महत्त्वपूर्ण है। इसे पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना सरल है और शीघ्र सफलतादायक भी।

कुछ वर्षों पहले मैं जब हिमालय में घूम रहा था, तो मुझे उत्तरकाशी के पास एक बाबा मिले। उनकी चर्चा आसपास बहुत थी और वे निःस्वार्थ भाव से लोगों का कल्याण करने में सहायक थे। ख़ासतौर से पांच प्रकार के कार्यों में उनकी चर्चा विशेष रूप से थी —

1. **खोए बालकों या पुरुषों का पता लगाना :** बालक खो जाते हैं या उनका अपहरण कर लिया जाता है। इससे उनके माता-पिता के मन में कितना दुख होता है, इसे तो कोई भुक्तभोगी ही समझ सकता है। औघड़ बाबा अपने कमरे में जाते और पांच मिनट बाद आकर ही बता देते कि खोया हुआ बालक, पुरुष या स्त्री इस समय कहां पर, किसके साथ है और किस स्थिति में है।

2. **किसी भी प्रकार की रोग समाप्ति के लिए :** इस कार्य के लिए भी औघड़ बाबा की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी। कोई भी पुरुष या स्त्री उनके आश्रम में आता — वह चाहे बुख़ार से पीड़ित हो या अन्य रोग से — बाबा पानी का गिलास मंगवाते और अपने हाथ पर बंधा हुआ यन्त्र उस गिलास में डालकर कुछ हिलाते और इसके बाद वह पानी रोगी को पीने के लिए दे दिया जाता। आगन्तुक पुरुष या स्त्री का अधिकतर पहली बार में ही रोग समाप्त हो जाता, अन्यथा कोई गम्भीर बीमारी होती, तो उसमें चार-पांच बार ऐसा प्रयोग करने पर वह काफ़ी राहत अनुभव करता और बाबा के प्रति उसके मन में असीम श्रद्धा पैदा हो जाती।
3. **चोरी का पता लगाना :** कई बार घर के सदस्य या नौकर-चाकर चोरी कर लेते हैं या बाहर के व्यक्ति रात को चोरी कर चले जाते हैं, फिर उन चोरों का पता नहीं चलता। इससे उस आदमी का धन तो बरबाद होता ही है, समाज में भी अपमानित होना पड़ता है। इसके अलावा उसे मानसिक सन्ताप और परेशानियां इतनी अधिक होती हैं कि वह ज़रूरत से ज़्यादा कमज़ोर, दुबला और एक तरह से मृतवत हो जाता है। ऐसी स्थिति में भी बाबा अपनी कुटिया में जाते और चार-पांच मिनट के बाद ही आकर बता देते कि चोरी गई वस्तु इस समय कहां पर है।
4. **वशीकरण प्रयोग :** कई बार पुत्र कुपुत्र हो जाता है या पुत्री के क़दम बहक जाते हैं। समझाने पर भी उन्हें समझाया नहीं जाता, अथवा पति-पत्नी में मतभेद हो जाते हैं, प्रेमी या प्रेमिका रूठ जाती है, ऐसी किसी भी स्थिति में वशीकरण प्रयोग पूर्ण रूप से सहायक होता है। बाबा जी के सामने भी ऐसी कई स्थितियां आती हैं, तब बाबा जी पूछ लेते हैं कि किसका किससे वशीकरण करना है। यदि पुत्री के क़दम बहक गए हैं, तो उस पुत्री का उसकी मां से वशीकरण कर दिया जाता, जिससे वह अपनी मां के कहने में चलने लगती है, या पुत्र का पिता से वशीकरण कर दिया जाता, जिससे वह पुत्र अपने पिता की आज्ञा

मानने के लिए तत्पर हो जाता है तथा उसका ग़लत रास्ता सही हो जाता है। इसी प्रकार अन्य कार्यों में भी इसका प्रयोग होता है। बाबा जी अपनी कुटिया जाकर पांच-दस मिनट के लिए बाहर आते और कहते हैं कि मैंने प्रयोग कर दिया है। अब आप निश्चिन्त होकर घर जाएं। आपका काम हो जाएगा।

5. **शत्रु मर्दन प्रयोग :** समाज में यदि मित्र या स्वजन हैं, तो अकारण शत्रु भी बहुत होते हैं। और ये शत्रु किसी-न-किसी प्रकार से परेशान करते हैं। शत्रुओं में सगा भाई हो सकता है, पड़ोसी हो सकता है, अन्य कोई व्यक्ति हो सकता है, व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धी हो सकता है, पुरुष या अन्य राज्य पक्ष से सम्बन्धित हो सकते हैं। तात्पर्य यह कि कोई भी व्यक्ति शत्रु भाव रखता है, तो इस प्रयोग को करने से उसकी मनोवृत्ति बदल जाती है और वह शत्रुता भूलकर उसका सहायक बन जाता है।

ये पांचों प्रयोग आज के युग में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हैं, या यह कहा जाए कि इनकी आवश्यकता आज के समाज में बहुत अधिक बढ़ गई है। प्रत्येक व्यक्ति को पग-पग पर इन समस्याओं से जूझना पड़ता है और यदि कोई साधक या व्यक्ति इस प्रकार की कोई युक्ति या साधना सीख ले, तो वह हज़ारों लोगों का कल्याण कर सकता है।

मैं औघड़ बाबा के सम्पर्क में लगभग छह साल रहा और तन-मन से उनकी सेवा की। मैं उस साधना को सम्पन्न करता हूं, जिसके बल पर औघड़ बाबा उपर्युक्त पांचों प्रयोग सम्पन्न करते हैं और हज़ारों-लाखों लोगों का कल्याण करते हैं। इससे उन्हें अद्वितीय सफलता, यश और सम्मान तो मिलता ही है, धन और सुख भी ज़रूरत से ज्यादा प्राप्त होता है।

कुछ वर्षों बाद मुझे बाबा जी से ही ज्ञात हुआ कि बटुक भैरव साधना से ये पांचों सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। बाद में मेरी सेवा से अनुप्राणित होकर उन्होंने कृपा कर बटुक भैरव साधना मुझे सिखा दी और उसकी पूर्ण प्रामाणिक विधि भी स्पष्ट कर दी, जिसे मैंने आगे चलकर सिद्ध किया तथा सफलता प्राप्त की।

इसके नियम और साधना विधि इस प्रकार हैं —

1. इसके लिए सिद्ध बटुक भैरव यन्त्र की आवश्यकता होती है, जो तावीज़ के आकार का होता है तथा जो बटुक भैरव चेतना से पुष्ट एवं प्राण क्रिया से सम्पन्न होता है।
2. निम्न मन्त्र जाप नित्य करें और चौदह दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, जिससे वह उपर्युक्त पांचों स्थितियों में दूसरों का कल्याण करने में समर्थ हो जाता है।
3. यह दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है। लाल आसन बिछा दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करें, स्वयं लाल धोती या स्त्री हो तो लाल साड़ी पहन लें। सामने बटुक भैरव यन्त्र को रख दें और मूंगे की माला से मन्त्र जाप करें। इसके अलावा अन्य किसी विधि-विधान की आवश्यकता नहीं।

प्रयोग

जब चौदह दिन का प्रयोग सिद्ध हो जाता है, तो यह तावीज़ अपनी बांह पर बांध लेनी चाहिए और फिर उपर्युक्त पांचों समस्याओं में कोई समस्या आती है, तो अपनी मुट्ठी में यह यन्त्र लेकर आंख बन्द कर केवल पांच बार मन्त्र उच्चारण करने से उसे दिखाई देने लग जाता है कि खोया हुआ बालक कहां है, या चोरी किसने की है और धन कहां पर है, अथवा यन्त्र मुट्ठी में लेकर कहा जाय कि अमुक लड़की का मां से वशीकरण हो जाए और फिर पांच बार उच्चारण करे, तो वशीकरण हो जाता है। यह इसी प्रकार किया जाता है। रोग मुक्ति हेतु पानी के गिलास में उपर्युक्त यन्त्र घुमाकर पानी पिला देने से रोग मुक्ति में सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ओऽम्।

यह मन्त्र दिखने में अत्यन्त सरल प्रतीत होता है, परन्तु इसका प्रभाव तुरन्त और निश्चित होता है, ऐसा मेरा अनुभव रहा है। आप स्वयं अनुभव कर लाभ उठा सकते हैं।

परकाया प्रवेश

जो साधना के बारे में थोड़ी-बहुत भी जानकारी रखते हैं, जिनको अपनी प्राचीन क्रियाओं पर गर्व है, वे परकाया प्रवेश को और उसके अर्थ को भली भांति समझते हैं। परकाया प्रवेश का तात्पर्य कुछ विशेष क्रिया से अपने शरीर को मृतवत बना देना और अपने शरीर स्थित प्राणों को निकालकर दूसरे मुर्दा शरीर में प्रवेश कराकर उसे जीवित बना देना है।

भारतीय दर्शन इस बात को स्वीकार करता है कि देह अपने-आप में अलग है, और प्राणों का अस्तित्व सर्वथा अलग है, इसीलिए कई बार स्वस्थ शरीर को छोड़कर प्राण कहीं दूर निकल जाते हैं। यदि देह से प्राण बंधे होते, तो ऐसा सम्भव नहीं होता।

प्राण ही को भारतीय दर्शन में 'मन' कहा गया है और हमारी देह तो एक जगह पड़ी रहती है, हमारा मन बहुत दूर-दूर बिचरण कर लेता है। एक क्षण में यहां बैठे-बैठे अमेरिका का विचार करते ही हमारा मन वहां जा पहुंचता है। और यदि वहां कोई घर या दृश्य देखा हुआ होता है, तो हम आंखें बन्द कर उस दृश्य को बख़ूबी देख लेते हैं। यह क्रिया प्रत्येक मनुष्य के साथ सैकड़ों बार घटित होती है। लोगों को तो कई बार कहते हुए सुना है कि हमारे मन पर हमारा नियन्त्रण नहीं है। चाहते हुए भी हम अपने को रोक नहीं पाते। इन तथ्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि देह से सर्वथा अलग प्राण या मन का अपना अलग अस्तित्व होता है और उस पर सामान्यतः हमारा कोई नियन्त्रण नहीं होता।

परन्तु योग साधना के माध्यम से हम मन या प्राणों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर सकते हैं और जिस प्रकार से चाहें, उसका उपयोग कर सकते हैं। जब ऐसा नियन्त्रण स्थापित हो जाता है, तो मन से या प्राणों से जो भी कार्य करने को कहते हैं, कर लेते हैं।

परकाया प्रवेश भी साधक का अपने प्राणों पर पूर्णतः नियन्त्रण होना ही है। ऐसा साधक अपने प्राणों को आज्ञा देता है कि उसे अमुक मुर्दा शरीर में जाकर स्थित होना है और इतनी निश्चित अवधि के बाद उस देह को छोड़कर वापस इसी शरीर में आना है।

शंकराचार्य और परकाया प्रवेश

आज से कुछ सौ वर्ष पहले शंकराचार्य ने प्रामाणिक रूप से इस प्रयोग को सम्भव कर दिखाया था। राजा की मृत्यु हो जाने पर शंकराचार्य ने अपने प्राणों को देह से अलग कर राजा की मृत देह में प्रवेश ले लिया था। फलस्वरूप मृत राजा कुछ ही सेकेंडों में जीवित हो उठा और राजा के शरीर में रहकर शंकराचार्य ने राज्य कार्य के विभिन्न अनुभवों को तो प्राप्त किया ही, साथ ही गृहस्थ जीवन की उन युक्तियों का भी अनुभव किया, जिसके माध्यम से वंश गतिशील होता है या सन्तान उत्पन्न होती है।

इस प्रकार लगभग छः महीने तक शंकराचार्य का शरीर मृतवत पड़ा रहा और उनके प्राण राजा की मृत देह में रहकर राज्य कार्य करते रहे, इसके बाद निश्चित अवधि बीतने पर उन प्राणों ने राजा की देह को छोड़ दिया और वापस अपनी मूल देह में आ गए। इस प्रकार शंकराचार्य की देह छः महीने बाद वापस जीवित होकर क्रियाशील हो उठी।

इस घटना से यह भली भांति स्पष्ट होता है कि यदि साधक चाहे, तो कुछ विशेष युक्तियों के माध्यम से अपनी देह से प्राणों को अलग कर किसी मृत शरीर में अपने प्राणों का संचार कर सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में पहले वाली देह के अंगूठे में मात्र स्पन्दन बना रहता है, जिससे शरीर चैतन्य रहता है। और जब वापस प्राण उस शरीर में प्रवेश करते हैं, तो वह क्रियाशील होकर कार्य करने लगता है।

पिछले कुछ सौ वर्षों में इस विद्या का लगभग लोप-सा हो गया था, या यूं कहा जाए कि बहुत ही कम भारतीय साधक या योगी बचे थे, जिनको इस विद्या की प्रामाणिक जानकारी थी, परन्तु अब यह विद्या कोई गोपनीय नहीं रही। योगियों ने और इससे सम्बन्धित अध्येताओं ने प्राचीन ग्रन्थों को ढूंढ़ निकाला है और इस साधना का सम्यक अध्ययन किया है। इसके माध्यम से परकाया परिवर्तन किया जा सकता है, इस तथ्य को उन्होंने प्रमाणित कर दिया है।

परकाया प्रवेश से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य

1. मृत्यु विज्ञान (काकचंडी कृत)
2. मृत्यु विज्ञान और परम पद (भैरवानन्द कृत)
3. देह तत्त्व (मन्थान ऋषि कृत)
4. योग और परकाया प्रवेश (स्वामी विद्यार्णव कृत)
5. परकाया प्रवेश सिद्धि (गोरक्षनाथ रचित)
6. देह सिद्धि (स्वामी भैरवानन्द कृत)
7. परकाया प्रवेश दीक्षा रहस्य (स्वामी सदन कृत)
8. मनुष्य देह और कर्म (स्वामी सोमदेव कृत)
9. एक अलौकिक साधना : परकाया (स्वामी ज्ञानदेव कृत)
10. मृत्यु सिद्धि और परकाया प्रवेश (स्वामी त्रिगुणानन्द कृत)
11. विदेह आत्मा (मां योगमाया कृत)
12. परकाया प्रवेश सिद्धि (आदि गुरु दत्तात्रेय कृत)
13. परकाया प्रवेश और तन्त्र सिद्धि (योगी अद्वैतानन्द कृत)
14. परकाया एवं सूर्य सिद्धि (स्वामी प्रणवानन्द कृत)
15. परकाया प्रवेश उपासना रहस्य (मां आश्रमिका कृत)
16. परकाया सिद्धि (स्वामी यशोधर कृत)
17. परकाया रहस्य (तैलंग स्वामी कृत)
18. भाव साधना एवं परकाया प्रवेश (योगी वेदानन्द कृत)

इन ग्रन्थों के माध्यम से साधक प्रयत्न करने पर इस क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ये लगभग सभी ग्रन्थ प्रकाशित हैं और प्रयत्न करने पर प्राप्त हो सकते हैं।

परकाया प्रवेश सिद्धि

परकाया प्रवेश की दो विधियां प्रचलित हैं, एक तो योग द्वारा और दूसरी साधना द्वारा। योग द्वारा तो साधक अपने प्राणों का उत्थापन करके उसे जीवात्मा से सम्बन्धित करता है और उसे अपने नियन्त्रण में लेकर मनोवांछित स्थान पर पहुंचाने की सामर्थ्य प्राप्त करता है। इसके लिए योग्य गुरु के निर्देशन में कुछ विशेष आसन मुद्राएं और क्रियाओं का परिपालन करना होता है। ऐसा करने पर उसे अपनी जीवात्मा पर नियन्त्रण हो जाता है और अपने प्राणों का सूक्ष्म रूप से अंश छोड़ता हुआ पूर्ण प्राणों का निश्चित देह में संचार कर सकता है। ऐसा करके वह उस मृत देह को जीवित कर देता है।

जिस समय वह अपने प्राणों को विसर्जित करता है, तब उसे एक निश्चित अवधि का संकेत भी दे दिया जाता है और निश्चित अवधि के बाद बिना सेकंड का भी विलम्ब किए प्राण अपनी मूल देह में आ जाते हैं। इस अवधि तक सूक्ष्म पिंड धड़कता रहता है। इस वजह से हृदय की धड़कन, रक्त संचार और सूक्ष्म चेतना बराबर बनी रहती है। इस क्रिया के माध्यम से भी कई योगियों ने अद्‌भुत सफलता प्राप्त की है, जिनमें स्वामी पूर्णानन्द, योगी ज्ञानानन्द, स्वामी निर्मलदेव चैतन्य तथा योगिराज अरविन्द आदि मुख्य हैं।

परकाया प्रवेश और तन्त्र सिद्धि

यद्यपि यह कार्य पेचीदा है, अतः यदि किसी का मार्गदर्शन मिल जाय, तो ज़्यादा उत्तम रहता है, अन्यथा साधक व्यक्तिगत रूप से प्रयत्न करके भी परकाया प्रवेश सिद्धि प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

परकाया प्रवेश से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है। साधक स्नान कर किसी भी पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ करे। अपने सामने परकाया प्रवेश सिद्धि यन्त्र स्थापित कर दे। इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार की सामग्री, चित्र आदि की आवश्यकता नहीं होती।

सर्वप्रथम गुरु पूजन कर यन्त्र की पूजा करें। उस पर कुंकुम, अक्षत चढ़ाएं और शुद्ध घृत का अखंड दीपक प्रज्वलित करें, तत्पश्चात् विनियोग करें।

विनियोग

ओऽम् ऐं ह्रीं श्रीं अं सत्ये, हं शवले हस्ख्फ्रे खर्वे, क्लीं रामे, हस्ख्फ्रे महापरिवृतो, शून्यं परकाया सिद्धि नारद ऋषिः गायत्री छन्दः श्री गुरु देवता, गुं बीज ह्रीं शक्तिः ओऽम् कीलकं परकाया प्रवेश सिद्धि प्रीत्यर्थ मन्त्र जपे विनियोगः।

मानस पूजन

लं	पृथिव्यात्मकं	गन्धं-समर्पयामि
हैं	आकाशात्मकं	पुष्पं-समर्पयामि
यं	वायव्यात्मकं	धूपं-समर्पयामि
रं	दहनात्मकं	दीपं-दर्शयामि
वं	अमृतात्मकं	नैवेद्यं-निवेदयामि
सं	सर्वात्मकं	ताम्बूलं-समर्पयामि

मूल मन्त्र

ओऽम् परात्परायै, विनिर्मुक्तायै परकायै ह्रीं कुलैश्वर्यै फट्।

यह मन्त्र मात्र पांच लाख उस यन्त्र के सामने जपना होता है और मन्त्र जाप समाप्ति के बाद जब सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तो योंगसिद्धि शवासन लगाकर परकाया प्रवेश किया जा सकता है।

यह श्रेष्ठ और गोपनीय साधना रहस्य है। योग्य साधकों को इसमें भाग लेकर सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

वीर साधना

यूं तो संसार में हज़ारों साधनाएं हैं, परन्तु उन सबमें वीर साधना अपने-आप में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ है। जो लोग साधना क्षेत्र में हैं, वे इस बात के महत्त्व और गोपनीयता को जानते हैं। इसी कारण उच्च कोटि के साधक अपना सब-कुछ दांव पर लगाकर भी वीर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखते हैं।

वीर साधना का तात्पर्य ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर वीर आपके वश में हो जाता है। ऐसा बलिष्ठ पुरुष, जो जीवन-भर वश में रहकर काम करने वाला बन जाए। तो फिर चिन्ता ही किस बात की।

वीर विक्रमादित्य की कहानी सर्वविदित है कि उन्होंने एक वीर वश में कर रखा था और वह हमेशा उनके नियन्त्रण में रहते हुए उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहता था। जब जो भी आज्ञा विक्रमादित्य देते, वह एक पल में ही उस कार्य को पूरा कर देता। विक्रमादित्य ने उस वीर की सहायता से ही अपने सारे शत्रुओं को क़ाबू में किया। उसकी सहायता से ही जब राज्य पर पड़ोस की फौजें चढ़ आईं, तो पूरी फ़ौज का सफाया किया। वीर की सहायता से ही विक्रमादित्य ने अपने राज्य में अपार धन-सम्पत्ति जोड़ ली और उसी की सहायता से वह सारे संसार में विख्यात हुए।

रामभक्त हनुमान ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, इसीलिए उनको 'महावीर' हनुमान कहते हैं। उस वीर की सहायता से वह चार सौ योजन का समुद्र एक ही छलांग में पार कर सके थे। ऐसे वीर की सहायता

से ही वह लंका के अशोक वन को तहस-नहस कर अपनी धाक जमा सके और उस वीर की सहायता से ही बड़े-से-बड़े पर्वत को गेंद की तरह हथेली में लेकर कहीं पर भी फेंक सकते थे।

शंकराचार्य ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी। जिसकी वजह से चौबीसों घंटे उनकी सुरक्षा बनी रहती थी। वीर की सहायता से ही जब वह जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते, वीर उनका सही मार्गदर्शन करता, जंगल के हिंसक पशुओं से भी रक्षा वही करता। वीर की सहायता से ही शंकराचार्य ने अकेले ही पूरे भारतवर्ष में बौद्ध धर्म की बढ़त को रोका और हिन्दू धर्म को पुनः स्थापित करने में सफलता पाई। वह स्वयं इस बात को स्वीकार करते थे कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं सम्पन्न की हैं, परन्तु वीर साधना के द्वारा ही मैंने जीवन की पूर्णता, यश, सम्मान और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

गुरु गोरखनाथ वीर साधना के तो आचार्य ही थे और उनके शिष्यों को इस बात का गर्व था कि गुरु गोरखनाथ ने वीर को सिद्ध किया है, जिसकी वजह से वह तन्त्र के क्षेत्र में पूर्ण सफलता पा सके हैं। यद्यपि कई लोगों ने मिलकर गुरु गोरखनाथ को मारने की चेष्टा की, परन्तु अकेले गुरु गोरखनाथ सैकड़ों लोगों से मुक़ाबला कर सके और विजय प्राप्त कर पाए।

वीर

जिस प्रकार 'भूत साधना' या 'शून्य साधना' सम्पन्न कर जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है, उसी प्रकार 'वीर साधना' के द्वारा भी संसार का कठिन-से-कठिन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। वीर का तात्पर्य भूत से ज़्यादा मज़बूत, हनुमान से भी ज़्यादा बलवान, राम से भी ज़्यादा क्षमाशील और कृष्ण से भी ज़्यादा चतुर व्यक्तित्व से है। 'वीर' का तात्पर्य एक ऐसे महान व्यक्तित्व से है, जो अत्यधिक सरल, भलाई करने वाला, प्रत्येक प्रकार की मुसीबत में सहयोग देने वाला और अपने मालिक के कठिन-से-कठिन कार्य को भी चुटकियों में हल करने वाला है।

यह साधना वास्तव में अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, क्योंकि कोई भी गुरु इस प्रकार की साधना को प्रकट करना नहीं चाहता, अपने अन्तिम समय में गुरु अपने शिष्य को ही यह महत्त्वपूर्ण साधना समझाते और उसे पूर्ण सिद्ध योगी बना देते हैं।

आज के युग में भी, जहां कई योगी और संन्यासी इस साधना में सिद्ध हैं, वहीं कई गृहस्थ भी इस साधना को सम्पन्न करें सफलता पा सके हैं। नेपाल के रणवीर थापा, गोरखपुर के बालकृष्ण आचार्य, दिल्ली के कृष्ण यादव, देहरादून की सरोजिनी बहन आदि ऐसे ही गृहस्थ साधक-साधिकाएं हैं, जिन्होंने सफलतापूर्वक इस साधना को सिद्ध किया है और पूर्ण सफलता पाई है। इनमें से सभी से मुझे मिलने का अवसर मिला है और सभी ने एक स्वर में कहा है कि वास्तव में यह अद्वितीय साधना है। इस साधना को सम्पन्न करने पर किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती और न साधना काल में किसी प्रकार का कोई भय ही पैदा होता है। गायत्री उपासक और सरल सौम्य गृहस्थ साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना विधि

मैं नहीं चाहता कि कोई भी विद्या गोपनीय रहे। अतः इस देवदुर्लभ साधना को भी प्रस्तुत कर रहा हूं और मुझे विश्वास है कि आप इस साधना को सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

यह साधना मात्र 14 दिन की है और इसे हक़ीक़ माला से ही मन्त्र जाप सम्पन्न करना चाहिए। इस साधना को सम्पन्न करने के लिए निम्न पांच नियम हैं –

1. किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें। रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर लाल धोती पहनकर बैठ जाएं। आधा किलो गेहूं के आटे से मनुष्य की आकृति का पुतला बनाएं और उसे सिन्दूर से रंग दें। इसे ही वीर कहते हैं। अब पास में तेल का दीपक जलाएं और वीर के पास 'वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यन्त्र' स्थापित करें।

2. नित्य रात्रि को हक़ीक़ माला से 15 माला मन्त्र जाप करें। इसमें एक घंटे से ज़्यादा समय नहीं लगता। मन्त्र जाप कर वीर को 'वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यन्त्र' के सामने करें। इसमें यन्त्र का ही सर्वाधिक महत्त्व है।
3. साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य का पालन करें, एक समय भोजन करें और मन्त्र जाप करें। यदि बीच में कोई अनुभव हो, तो भी नहीं बताएं।
4. जब साधना सम्पन्न हो जाए, तो 15वें दिन उस वीर को जंगल में दक्षिण दिशा की ओर रख दें और कहें कि मैं जब भी तुझे आज्ञा दूं, तू उपस्थित होगा और आज्ञा पालन करेगा। इसके अलावा हर क्षण अदृश्य रूप से मेरे सामने उपस्थित रहना तथा मेरी रक्षा करना। उस यन्त्र को लाल धागे से अपनी दाहिनी भुजा पर बांध लें।
5. साधना सम्पन्न होने के बाद जब पांच बार मन्त्र का उच्चारण कर वीर को आवाज़ दी जाएगी, तो आंखों के सामने वीर प्रत्यक्ष होगा और उस समय आप उसे जो भी आज्ञा देंगे, वह तुरन्त आज्ञा का पालन करेगा।

गोपनीय वीर मन्त्र

ओऽम् ह्लीं ह्लीं वीराय प्रत्यक्षं भव ह्लीं हलाम् फट्

यह अद्वितीय और गोपनीय साधना वरदानस्वरूप है और साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इसे सम्पन्न करें।

मुद्रा और प्रणिपात

मुद्रा : प्रवक्षयामि मादन्ते सर्वदेवता

शारदा तिलकतन्त्र (23/106) की इस सूक्ति के अनुसार साधना जगत में मुद्राओं का माहात्म्य सर्वविदित है। विश्व में प्रचलित प्रायः सभी धर्मों में मुद्रा का अपना विशेष स्थान रहा है, किन्तु भारतीय सनातन धर्म के अन्तर्गत 'आगमशस्त्र' अर्थात तन्त्रों में मुद्राओं का वर्णन जितने वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से विस्तार के साथ मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं। पूजा एवं साधना में मुद्रा प्रदर्शित करने से सभी देवता आनन्दित होते हैं, पापों का क्षय हो जाता है और देवताओं का सान्निध्य मिलना आरम्भ हो जाता है।

मुद्रा प्रदर्शन द्वारा साधक भौतिक संसार में उत्तरोत्तर ऊपर उठकर व्यापक अनन्त की भावना प्राप्त करने में समर्थ और सफल होती है, इसलिए मुद्रा आध्यात्मिकता का सशक्त माध्यम है। हाथ की उंगलियों और मुट्ठियों के जोड़ने, मोड़ने और खोलने से सम्पूर्ण मुद्राएं बनती हैं। अतएव हाथ, उंगली और मुट्ठी के भेद जानना आवश्यक है।

हाथ का मुद्राभेद

मणिबन्ध या कलाई, जहां राखी या घड़ी बांधते हैं, वहां से कनिष्ठा तक का अंग हाथ कहलाता है। इसका अग्र भाग पंचशाख, शम और पाणि कहलाते हैं। इसमें जो उंगलियां हैं, वे कर-पल्लव या शाख हैं।

उंगलियां 5 होती हैं — उनमें पहली को अंगुष्ठ (अंगूठा), दूसरी को तर्जनी, तीसरी को मध्यमा अथवा जपकरणी, चौथी को अनामिका और पांचवीं को कनिष्ठा कहते हैं। इन सबको बन्द करने से मुष्टि या मुट्ठी बनती है और खोल देने से करतल हो जाती है। करतल की पीठ को करपृष्ठ कहते हैं।

तीर्थ और देवता

हाथ में देवता और तीर्थ भी प्रतिष्ठित हैं। हाथ के आरम्भ में अंगूठे के कुछ नीचे आत्मतीर्थ, हाथ के अन्त में उंगलियों के ऊपर होकर परमार्थ तीर्थ, हाथ के ऊपरी भाग में कनिष्ठा से कुछ नीचे देव तीर्थ और हाथ की दक्षिण तर्जनी और अंगूठे के बीच में पितृ तीर्थ है।

पंच महाभूत

हाथों की उंगलियों में पांचों महाभूत प्रतिष्ठित हैं। 'प्राण-तोषिणी मन्त्र' के अर्थ कांड के प्रथम परिच्छेद में नील तन्त्र के वचनानुसार 1. कनिष्ठा में पृथ्वी तत्त्व, 2. अनामिका में जल तत्त्व, 3. मध्यमा में अग्नि तत्त्व, 4. तर्जनी में वायु तत्त्व और 5. अंगुष्ठ में आकाश तत्त्व विद्यमान है।

परम लक्ष्य प्राप्ति में सहायक

मुद्राभिरेव तृप्यन्ति न पुष्पादिक पूजनैः।
महापूजा कृतांतेन येन मुद्राष्टकं कृतं।

मेरु तन्त्र की इस उक्ति के अनुसार महापूजा में मुद्रा प्रदर्शन का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है। मुद्रा दिखाने वाले भक्त-साधक पर देवता द्रवित होकर दया करते हैं। राक्षस भी मुद्रा के प्रभाव से अनुकूल हो जाते हैं। मुद्रा प्रदर्शन से पूजा महापूजा के स्तर को प्राप्त कर लेते हैं। राघव भट्ट साफ़ शब्दों में स्पष्ट करता है कि मुद्रा से विषादि द्वारा मूर्च्छित व्यक्ति भी स्वस्थ होता है। व्याधि और मृत्यु का निवारण मुद्राओं द्वारा हो जाता है। यही नहीं मानव जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष' तक पहुंचने में मुद्रा विशेष सहायक होती है। इन मुद्राओं का अभ्यास योग गुरु के निर्देशन में ही करना चाहिए।

विविध मुद्राओं की तालिका

विविध देवताओं की प्रमुख मुद्राओं के निम्न विवरण से वांछित मुद्रा को सहज ही जाना जा सकता है —

विष्णु : शंख, चक्र, गदा, पद्म, वेणु, जीवत्स, कौस्तुभ, वनमाला, ज्ञान, विलव, गरुड़, नृसिंह, वराह, हयग्रीव, धनुष, बाण, परशु, जगन्मोहिनी, काम।

शिव : लिंग, योनि, त्रिशूल, अक्ष, वर, अभय, मृग, खट्वांग, कपाल, डमरू।

गणेश : दन्त, पाश, अंकुश, विघ्न, परशु, मोदक, बीजपूर।

सूर्य : पद्म।

शक्ति : पाश, अंकुश, वर, अभय, धनुष, बाण, खड्ग, चर्म, मूसल, दुर्ग।

महाकाली : महायोनि, मुंड, भूतिनी।

महालक्ष्मी : लक्ष्मी, चक्र।

तारा : योनि, भूतिनी, बीज, धूमिनी, लोलिहा।

त्रिपुरसुन्दरी : सर्व संक्षोभिणी, सर्व विद्राविणी, सर्व कर्षपाणि, सर्व वश्यकरी, सर्वोन्मादिनी, महाकुशा, खेचरी, बीज योनि।

पंचदेवों की मुद्राएं और प्रणिपात

शंख : बाएं हाथ के अंगूठे को दाहिने हाथ की मुट्ठी में लेकर बाएं हाथ की चारों उंगलियां सीधी करके दाहिने हाथ की मुट्ठी को दबाएं और दाहिने हाथ के अंगूठे का अग्रभाग बाएं हाथ की तर्जनी के अग्र भाग में लगाएं, तो शंख मुद्रा सम्पन्न होती है।

चक्र : दोनों हाथों को परस्पर देखते हुए भली भांति फैला दें और कनिष्ठाओं को अंगूठों से लगाएं, तो चक्र मुद्रा बनती है।

गदा : दोनों हाथ आपस में सम्मुख करके उंगलियां गूंथ दें और बीच में फैले हुए अंगूठे उनमें लगा दें, तो गदा मुद्रा होती है।

पद्म : दोनों हाथों को परस्पर मिलाकर फूल की डोडी या कली के समान खड़ी कर दें और दोनों अंगूठे उनके भीतर तल भाग में लगा दें, तो पद्म मुद्रा होती है।

कौस्तुभ : दाहिनी कनिष्ठा को उसी के पास की अनामिका की पीठ पर लगाएं। बाईं कनिष्ठा से तर्जनी और अनामिका को आबद्ध करें। दाहिने अंगूठे के मूल में बाईं अनामिका बांधें और बाएं अंगूठे से शेष अंगुलियां सीधी लगाएं, तो कौस्तुभ मुद्रा होती है।

ज्ञान : तर्जनी और अंगूठे के अग्र भाग को हृदय पर लगाकर बाएं हस्त कमल को दाएं मोड़कर रखें, तो इष्ट को प्रसन्न करने वाली ज्ञान मुद्रा होती है।

गरुड़ : दोनों हाथों को विमुख करके अर्थात दोनों की पीठ परस्पर मिला दें। कनिष्ठाओं को गूंथ दें। दोनों तर्जनियों को इसी प्रकार आपस में मिला दें। दोनों अंगूठों को भी मिला दें। मध्य की अनामिका को पंखों की भांति हिलाएं तो विष्णुप्रिय गरुड़ मुद्रा होती है।

नारसिंही : दोनों हाथों को पैरों के बीच में देकर उकडूं बैठें। ठोडी और होंठ समान बना लें। दोनों हथेलियां ज़मीन में लगावें। मुख की आकृति डरावनी बना लें और जीभ को बाहर निकालकर हिलाएं, तो नृसिंह की प्रिय नारसिंही मुद्रा होती है।

धनुष : बाएं हाथ की मध्यमा के अग्र भाग को तर्जनी के अग्र भाग में जोड़ें और अनामिका तथा कनिष्ठा को अंगूठे से दबाकर बाएं हाथ के कन्धे के समीप ले जाएं, तो धनुष मुद्रा होती है।

बाण : दाहिने हाथ को सीधा करके मुट्ठी बांध लें और उसकी तर्जनी को लम्बा करें।

परशु : दोनों हाथों के करतल मिलाकर उंगलियों को फैलाने से फरसे के आकार की परशु मुद्रा होती है।

जगन्मोहन : दोनों हाथ की मुट्ठियों पर अंगूठा रखने से यह मुद्रा होती है।

काम : हाथों को सम्पुटित करके उंगलियों को फैला दें। तर्जनियों और मध्यमाओं को पीठ पर लगा दें और अंगूठे को मध्यमाओं से जोड़ दें, तो काम मुद्रा होती है।

मत्स्य : दाहिने हाथ की पीठ पर बाएं हाथ की हथेली रखकर अंगूठों को हिलाते रहें, तो मत्स्य मुद्रा होती है।

लिंग : दाहिने हाथ के अंगूठे को उठाकर बाएं हाथ की उंगलियों पर और बाएं हाथ के अंगूठे को दाहिने हाथ की उंगलियों से चिपका दें, तो लिंग मुद्रा होती है।

योनि : कनिष्ठाओं को आपस में बांधें, ऊंची उठी अनामिकाओं से तर्जनी को लगाएं, दोनों मध्यमाओं को फैला दें और अंगूठे को उनके समीप से कनिष्ठाओं के समीप कर दें, तो योनि मुद्रा होती है।

त्रिशूल : अंगूठे से कनिष्ठा को दबाकर शेष तीनों उंगलियां — तर्जनी, मध्यमा और अनामिका — को सीधी करने से त्रिशूल मुद्रा होती है।

अभय : बाएं हाथ को ऊर्ध्वमुख फैला देने से अभय मुद्रा होती है।

वर : अधः स्थित दाहिने हाथ को आगे पसारने से वर मुद्रा होती है।

शीघ्र सिद्धिदायक मन्त्र

आज का आदमी बहुत अधिक व्यस्त हो गया है और उसे इतना अवकाश नहीं रहा है कि लम्बी साधनाएं सम्पन्न करे या जटिल पूजा पद्धति अथवा क्रियाकलापों में संलग्न हो। ऐसी स्थिति में उन साधकों के लिए वे मन्त्र ज़्यादा उपयोगी होते हैं, जो सरल हों, शीघ्र सिद्धिदायक हों और निश्चित सफलता देने में समर्थ हों।

मैंने अनुभव किया है कि इस प्रकार के छोटे-छोटे सरल मन्त्र देने से साधकों का मनोबल बढ़ा है और उन्होंने समाज में कई लोगों का हित सम्पन्न किया है। यह भी प्रसन्नता की बात है कि उन्हें इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

कुछ ऐसे ही अनुकूल मन्त्र हैं, जो साधकों के लिए पूर्ण उपयोगी हैं। इन मन्त्रों में न तो जटिल विधि-विधान है, न लम्बा मन्त्र जाप है और न किसी प्रकार की विशेष पूजा पद्धति है।

लक्ष्मी प्राप्ति का मन्त्र

बुधवार के दिन किसी एकान्त स्थान पर ज़मीन को गोबर से लीप लें और लकड़ी का फट्टा बिछा दें। उसके ऊपर सिन्दूर से 'श्री' लिख लें और उस पर लाल वस्त्र बिछा दें तथा फट्टे के मध्य में एक नारियल रख दें, जो बजता हो, फिर उसके ऊपर सिन्दूर से तीन तिलक करें और नारियल के मध्य में **ओऽम् मणिभद्राय नमः** लिख लें। अब इसके सामने घी का दीपक जला लें। स्वयं पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाएं और मन्त्र जाप करें। नित्य ग्यारह माला मन्त्र जाप अनिवार्य है।

मन्त्र

ओऽम् नमो मणि भद्राय आयुध–धराय मम लक्ष्मी
वांछितं पूरय ऐं ह्रीं क्लीं सौं मणिभद्राय नमः।

इस प्रकार 21 दिन करें, तो निश्चय ही लक्ष्मी सिद्धि होती है, और मणिभद्र देवता स्वयं स्वप्न में या प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित होकर लाटरी का नम्बर अथवा धन प्राप्ति का उपाय बता देते हैं।

ऐसे प्रयोग से जीवन में आर्थिक उन्नति और आकस्मिक धन प्राप्ति होती है।

रोग निवारण मन्त्र

घर में या अन्य किसी को भी किसी भी प्रकार का रोग हो अथवा ज्योतिषियों ने अकाल मृत्यु बताई हो अथवा मृत्यु-भय की आशंका हो, चारों तरफ़ शत्रु बढ़ गए हों, किसी भी क्षण मृत्यु होने की सम्भावना हो, तो ऐसी किसी भी स्थिति में यह प्रयोग तुरन्त प्रभाव देता है और उस पर आई हुई विपत्ति को दूर कर देता है।

सफ़ेद आक के बने हुए गणपति या जिन्हें श्वेतार्क गणपति कहते हैं, उन्हें बुधवार के दिन लाल वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दें और उस पर सिन्दूर का तिलक करें। अपने ललाट पर भी सिन्दूर का ही तिलक करें। इसके बाद **गं गणपतयै नमः** मन्त्र से गणपति को भोग चढ़ाएं, दीपक जलाएं और पूजन करें। इसके बाद स्फटिक या पारे से बने हुए शिवलिंग को स्थापित करें और **ओऽम् नमः शिवाय** मन्त्र से उनका पूर्णरूपेण पूजन करें। ऐसा करने के बाद हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग करें –

विनियोग

अस्य श्री अमृत–मृत्युंजय कहोल ऋषिः।
विराट् छन्दः मृत्युंजय सदाशिवो देवता
अमुक गोत्रोत्पन्नो, अमुक शर्मणो समस्त रोग,
अपमृत्यु निवारणार्थं जपे विनियोगः॥

विनियोग के बाद निम्न मन्त्र का पांच हज़ार मन्त्र जाप करें।

मन्त्र

ओऽम् अमृत मृत्युंजयायै नमः।

कुल सवा लाख मन्त्र जाप करने पर पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, पर इस मन्त्र की विशेषता यह है कि जिस दिन से मन्त्र जाप प्रारम्भ होता है, उसी दिन से रोगी के रोग में सुधार होना शुरू हो जाता है और सवा लाख मन्त्र जाप सम्पन्न होते-होते उसका रोग पूर्णतया समाप्त हो जाता है।

यह एक चमत्कारिक मन्त्र है और स्वयं के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

भूत-प्रेत बाधा का मन्त्र

कभी-कभी कुछ व्यक्ति अजीब-सी हरकत करने लग जाते हैं और उनकी हरकतें या उनका रोग समझ में नहीं आता। घर वाले इधर-उधर भागते हैं, इलाज करवाते हैं, परन्तु किसी को भी समझ में नहीं आता कि यह व्यक्ति ऐसा क्यों कर रहा है।

ऐसे अधिकांश मामलों का आधार भूत-प्रेत बाधा ही होता है और इस प्रकार की बाधा को दूर करने का यह सर्वोत्तम प्रयोग है।

जिसको भूत-प्रेत चढ़ा हो, उसको अपने सामने बैठा लें और लोहे के चिमटे से उसके चारों ओर लकीर खींच लें, फिर काली मिर्च के दाने मुट्ठी-भर अपने हाथ में लेकर 108 बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए काली मिर्च पर हाथ फेरते रहें।

मन्त्र

ओऽम् ऐं ह्रीं श्रीं ओऽम् ह्रीं क्लीं खं भूतेश ह्रीं।
ह्रां खड्ग–रावणाय नमः॥

जब 108 बार मन्त्र पढ़ लें, तब पुनः इसी मन्त्र को पढ़ते हुए काली मिर्च के दाने सामने बैठे हुए व्यक्ति पर डालते जाएं और मन्त्र पढ़ते जाएं।

इस प्रकार ग्यारह बार करें, तो निश्चय ही सामने बैठा हुआ व्यक्ति चिल्लाने लग जाता है और अपने असली रूप में आ जाता है। यह भी बता देता है कि वह कौन है और इसके शरीर में क्यों आकर बैठा है। यही नहीं, वह कुछ इच्छाओं की मांग भी करता है। ऐसी स्थिति में जहां तक हो सके उसकी इच्छाओं की पूर्ति कर देनी चाहिए। ऐसा होने पर वह सन्तुष्ट होकर उस देह को छोड़कर चला जाता है।

यदि वह ज़्यादा उपद्रव करने लगे, तो तब तक मन्त्र पढ़ते हुए काली मिर्च के दाने उस पर फेंकते रहने चाहिए, जब तक कि वह पूर्ण समर्पण न कर दे। समर्पण करने के बाद जब घिघियाकर माफ़ी मांग ले, तब उसकी इच्छापूर्ति कर उसे छोड़ देना चाहिए।

मुझसे एक साधु ने और भी एक प्रयोग करवाया था कि किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी को भोजपत्र पर रक्त चन्दन से उपर्युक्त मन्त्र लिखकर तावीज़ में भरकर यदि भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति के गले में पहना दिया जाए, तो वह इस प्रकार की बाधा से निवृत हो जाता है और जब तक वह तावीज़ उसके गले में रहता है, तब तक बाधा व्याप्त नहीं होती।

बैताल साधक मन्त्र

यह बड़ा उग्र मन्त्र है और जिसमें दम-खम हो या जो हिम्मत वाला हो, उसी को इस मन्त्र के प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

बैताल साधना प्रयोग किसी भी महीने की कृष्ण अष्टमी या चतुर्दशी से प्रारम्भ करना चाहिए। इस साधना में न तो घबराएं और न किसी को कुछ बताएं।

जो साहसी साधक हैं, वे श्मशान में जाकर बैताल साधना सम्पन्न कर सकते हैं, पर यदि ऐसा नहीं कर सकें, तो किसी मन्दिर में आसन बिछाकर उसके नीचे श्मशान से लाकर राख रख दें और उस पर काला आसन बिछा लें, फिर स्वयं काली धोती पहनकर सिर पर सिन्दूर का तिलक कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्प अस्थियों की माला से निम्न मन्त्र का जाप करें। इससे नित्य 51 माला मन्त्र जाप करने का विधान है और 21 दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग करते समय सामने तेल का दीपक जलाए रखें और एकाग्रचित्त हो मन्त्र जाप करते रहें।

मन्त्र

ओऽम् वशो मे भव देवेश मम वीर सिद्धि देहि महाभाग व्रताश्रम।

जब 21वें दिन वीर सिद्धि हो जाती है, तो ज़ोर से गर्जना होती है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश और धरती फट जाएगी और अचानक दीपक बुझ जाता है तथा एकदम से अंधेरा हो जाता है। ऐसे ही क्षणों में वीर बैताल सामने आकर उपस्थित हो जाता है। उस समय किसी भी प्रकार से विचलित न हों और उसे गुड़ और गेहूं के हलवे का बना हुआ भोग लगा दें। यह सामग्री इक्कीसवें दिन से ही लाकर रख देनी चाहिए।

ऐसा करने पर वीर बैताल सिद्ध हो जाता है और जीवन-भर साधक की रक्षा करता रहता है। भविष्य में साधक के असम्भव से असम्भव कार्य को भी सम्भव करता है। वास्तव में यह अत्यधिक सिद्धिदायक प्रयोग है। यद्यपि यह प्रयोग उग्र है, परन्तु साहसी साधक ऐसे प्रयोग को सम्पन्न करने की क्षमता रखते हैं।

रक्षा प्रयोग मन्त्र

कभी-कभी साधना काल में भय या बाधाएं आती हैं और साधक बराबर चिन्तातुर रहता है कि यदि प्रयोग विपरीत हो गया तो या किसी साधना में असफल होने पर प्रतिक्रिया मुझ पर ही न आ जाए।

अथवा कभी-कभी भूत-प्रेत बाधा दूर करते समय सामने वाले का भूत या प्रेत साधक पर ही आक्रमण कर बैठता है और उसे परेशान कर देता है। इसके अलावा कभी-कभी साधक को श्मशान में जाकर साधना सम्पन्न करनी होती है। ऐसी किसी भी प्रकार की स्थिति में साधक के लिए यह ज़रूरी होता है कि वह देह का बन्धन कर दे और साथ ही दसों दिशाओं का बन्धन कर दे।

ऐसा करने पर किसी भी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं होती और न साधक के शरीर को हानि पहुंचती है। यदि साधक नित्य केवल पांच बार ही

इस मन्त्र का उच्चारण कर ले, तब भी दिन-भर भगवान भैरव उसकी रक्षा करते हैं।

रक्षा प्रयोग के लिए साधक को चाहिए कि वह पीले वस्त्र के आसन पर बैठ जाए। यदि उसके घर में व्याघ्रचर्म हो, तो उसे बिछा दे और वीरासन में बैठे, फिर सरसों के दाने मुट्ठी में लेकर दसों दिशाओं में फेंकते हुए निम्न मन्त्र का पांच बार उच्चारण करे —

मन्त्र

हूं हूं ह्रीं ह्रीं कालिके घोर दंष्ट्रे प्रचंड चंडनायिके।
दानवान् दारय हन हन शरीरे महाविघ्न छेदय छेदय स्वाहा हूं फट्॥

यह मन्त्र अत्यन्त तेजस्वी और शीघ्र सिद्धिदायक है। यदि कभी साधना में या श्मशान में बैठ गया हो और साधना प्रारम्भ कर दी हो, पर साधना काल में भय व्याप्त हो गया हो, अथवा उसे विचित्र दृश्य देखने को मिल रहे हों, तो साधक के साथ में जो मित्र या परिवार का व्यक्ति हो पांच बार इस मन्त्र का उच्चारण कर यदि सरसों के दाने उसके चारों ओर उसके शरीर पर फेंके, तो शरीर की रक्षा हो जाती है और साथ ही भय आदि की समाप्ति हो जाती है। ऐसी स्थिति आने पर किसी प्रकार की भूत-प्रेत बाधा भी नहीं रहती।

यदि इस प्रकार का प्रयोग करके साधक साधना में बैठे, तो निश्चय ही उसकी देह रक्षा होती है और साधना काल में किसी प्रकार से आपत्ति अथवा बाधा व्याप्त नहीं होती।

जिह्वा-कीलन मन्त्र

यह प्रयोग भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शत्रु को गूंगा कर देने या उसकी बुद्धि को भ्रष्ट करने के लिए यह मन्त्र उपयोगी है। शत्रु की ओर से परेशानी देने वाला व्यक्ति अथवा विपरीत पार्टी के वकील का जीभ-कीलन किया जा सकता है, जिससे कि समय आने पर वह सही प्रकार से बहस नहीं कर सके और हमें मुक़दमे में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

रविवार के दिन आक के 21 पत्ते ले आएं। प्रत्येक पत्ते पर लोहे की कील से निम्न मन्त्र रक्त चन्दन के द्वारा लिखें –

मन्त्र

ओऽम् नमो आकाश पूरिणि मधु–मास भक्षिणि
अमुकस्य जिह्वा कीलय–कीलय स्वाहा॥

इसमें 'अमुकस्य' शब्द जहां आया है, वहां पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जिसका जीभ-कीलन करना हो। ऐसा करने पर तुरन्त प्रभाव होता है।

21 आक के पत्तों पर यह मन्त्र लिखकर एक के ऊपर एक पत्ता रख दें और फिर लोहे की कील के साथ ही ये सभी आक के पत्ते दक्षिण दिशा की ओर जाकर फेंक दें।

यह प्रयोग रविवार से प्रारम्भ करें और अगले रविवार तक अर्थात आठ दिनों तक करें, तो निश्चय ही सामने वाले की जिह्वा का कीलन हो जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह सही प्रकार से विचारने लायक नहीं रहता।

त्रिपुरसुन्दरी प्रयोग

उच्च कोटि के और संसार में सफल साधक वे कहे जाते हैं, जो सही समय पर सही निर्णय लेते हैं। वे व्यक्ति ही इस विश्व में सफल हो सकते हैं, जो जीवन में महत्त्वपूर्ण साधनाओं में भाग लेते हैं और उनमें पूर्णता प्राप्त करते हैं।

त्रिपुरसुन्दरी साधना जीवन की अद्वितीय और श्रेष्ठ साधना है, क्योंकि इस साधना को 'पूर्ण मनोकामना पूर्ति साधना' कहा गया है। उच्च कोटि के ऋषियों ने भी इसे अद्वितीय साधना कहा है।

(क) वास्तव में वे नर धन्य हैं, जो अपने जीवन में त्रिपुरसुन्दरी साधना की पूर्ण विधि ज्ञात कर इस साधना में भाग लेते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं।

– महर्षि वसिष्ठ

(ख) ऐसे मनुष्य अभागे ही कहे जा सकते हैं, जो छोटी साधनाएं तो कर लेते हैं, परन्तु त्रिपुरसुन्दरी साधना में भाग नहीं लेते, और फिर बिना सौभाग्य के ऐसे अद्वितीय साधना प्राप्त हो ही नहीं सकती।

– महर्षि विश्वामित्र

(ग) मैंने जीवन में लगभग सभी साधनाओं का अनुभव किया है, पर त्रिपुरसुन्दरी साधना के समान जीवन में पूर्ण मनोरथ करने वाली अन्य कोई साधना नहीं है।

– महर्षि याज्ञवल्क्य

(घ) वे साधक धन्य हैं, जो अपने जीवन में त्रिपुरसुन्दरी साधना सम्पन्न कर पूर्ण धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा अर्जित कर लेते हैं।

— **योगिराज विज्ञानानन्द**

(ङ) मेरा जीवन अधूरा और अपूर्ण ही रह जाता, यदि मैं अपने जीवन में तन्त्रोक्त रूप से त्रिपुरसुन्दरी साधना सम्पन्न नहीं कर लेता।

— **गुरु गोरखनाथ**

(च) मेरे पूरे साधना जीवन का निचोड़ यह है कि संसार की समस्त साधनाओं में मनोवांछासिद्धि त्रिपुरसुन्दरी साधना अपने-आप में पूर्ण है, अलौकिक है, अद्वितीय है और आश्चर्यजनक रूप से सिद्धि प्रदान करने वाली है।

— **भगवत्पाद शंकराचार्य**

एक नहीं हज़ारों योगियों, साधुओं, संन्यासियों, ऋषियों और गृहस्थ साधकों ने इस बात को स्वीकार किया है कि मनोवांछासिद्धि त्रिपुरसुन्दरी साधना कलियुग में अमृत कलश की तरह है। यह एक ऐसी साधना है, जो निश्चित रूप से सिद्ध होती ही है। यह जीवन में पूर्ण धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा दिलाने में समर्थ है। यह एक ऐसी साधना है, जो मानव जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

साधना के अन्वय

इस साधना के योगियों और ऋषियों ने बारह लाभ बताए हैं, जो कि निम्न हैं —

1. यह साधना जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता देने में समर्थ है।
2. इस साधना से गृहस्थ जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है।

3. व्यापार वृद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति और आर्थिक उन्नति के लिए तो यह साधना अपने-आप में अद्वितीय है।
4. शरीर के समस्त रोगों को मिटाने और अकाल मृत्यु निवारण के लिए यह साधना सर्वोपरि है।
5. इस साधना से वैभव, घर, ज़मीन, जायदाद, आभूषण एवं भौतिक जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निश्चित रूप से होती है।
6. सन्तान प्राप्ति, सन्तान सुख एवं पूर्ण सौन्दर्य के लिए यह साधना महत्त्वपूर्ण है।
7. शत्रुओं के लिए यह प्रचंड वज्र की तरह है, जो शत्रुओं का संहार करने और उन पर विजय प्राप्त करने में सफल है।
8. शीघ्र विवाह होने, पति सुख, पत्नी सुख, अखंड सौभाग्य एवं आनन्ददायक गृहस्थ जीवन के लिए एक मात्र साधना त्रिपुरसुन्दरी साधना ही है।
9. किसी भी प्रकार की भाग्य बाधा हो, तो उन सभी बाधाओं को दूर कर श्रेष्ठतम भाग्योदय के लिए यह साधना सर्वोपरि है।
10. यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा राज्य सम्मान, राज्य वैभव और राज्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और राज्यभय हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।
11. इस साधना से कई आर्थिक स्रोत प्रारम्भ होते हैं और चारों तरफ से धन की वर्षा होने लगती है, जिससे वह सही अर्थों में ऐश्वर्यवान बनने में समर्थ-सफल हो जाता है।
12. इस साधना से ब्रह्मग्रन्थि खुल जाती है। कुंडलिनी जागरण, सहस्रार जागृति आदि त्रिकालदर्शिता प्राप्त करने में यह साधना सर्वोपरि है।

यदि हम उपर्युक्त बिन्दुओं का अध्ययन करें, तो अनुभव करेंगे कि जीवन की समस्त इच्छाएं इस एक साधना से ही सम्पन्न हो जाती हैं। यह साधना पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध कोई भी कर सकता है और अपने घर में बैठकर भी इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना का अद्वितीय मुहूर्त योग

शास्त्रों में कहा गया है कि –

> **भाद्रौ कृष्णे पंचम्यां गुरौ उत्तरभाद्रपदे।**
> **मीने चन्द्र स्थितो यस्य त्रिपुरसुन्दरी सिद्धयते॥**

अर्थात त्रिपुरसुन्दरी साधना का श्रेष्ठतम मुहूर्त तब होता है, जब भाद्रपद महीना हो, कृष्ण पक्ष हो, पंचमी तिथि हो, गुरुवार हो, उत्तर भाद्रपद नक्षत्र हो और मीन राशि का चन्द्रमा हो, तो यह अपने-आप में अद्वितीय योग होता है, और ऐसे योग में यह साधना प्रारम्भ करने पर निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है।

ज्योतिष गणना के अनुसार ये सभी योग और नक्षत्र ग्रह गणना के अनुसार 144 वर्ष बाद आते हैं।

पूरे विश्व में हलचल

जो सही अर्थों में साधक हैं और जिन्होंने शास्त्रों का अनुशीलन किया है, वे इस बात का महत्त्व समझ सकते हैं कि यह समय कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है। जो शक्ति के उपासक हैं उनके लिए तो यह समय वरदानस्वरूप है।

विदेशों में भी जो धर्मगुरु हैं, जिनके आश्रम हैं, जिनके विदेशी शिष्य और शिष्याएं हैं, वे भी इस साधना के महत्त्व और प्रभाव को जानते हैं। इस साधना की प्रामाणिकता, पूर्णता और सूक्ष्मता समझाई जानी चाहिए जिससे इसको सम्पन्न कर पूर्ण सिद्धि प्राप्त की जा सके। यही नहीं, अपितु विदेशी शिष्यों को भी यह साधना सम्पन्न करवाकर उन्हें चमत्कृत कर दें कि मन्त्रों में कितनी अधिक ताक़त होती है और किस प्रकार एक ही बार प्रयत्न करने पर सफलता मिल जाती है।

त्रिपुरसुन्दरी साधना प्रयोग

भाद्रपद महीने में इससे सम्बन्धित चार महत्त्वपूर्ण अवसर आते हैं, जब इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। ये चारों अवसर त्रिपुरसुन्दरी पर्व कहे

जाते हैं, जो आपस में अद्वितीय योगों से सम्पन्न होते हैं। ज्योतिष की दृष्टि से ऐसा बहुत कम हुआ है कि इस साधना से सम्बन्धित चारों अवसर आने-आप में महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ योगों से सम्पन्न हों। इससे साधना का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

(क) त्रिपुरसुन्दरी प्रथम पर्व

भाद्रपद कृष्ण पक्ष पंचमी गुरुवार को मीन राशि और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र से सम्पन्न यह गुरुवार अपने-आप में अद्वितीय दिवस और सिद्धि योग होता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण योग में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग सम्पन्न किया जाता है –

1. भगवती त्रिपुरसुन्दरी के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए,
2. पूर्ण अन्नपूर्णा सिद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति और अर्थ लक्ष्मी सिद्धि के लिए,
3. ऋण दूर करने और पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिए,
4. व्यापार वृद्धि, व्यावसायिक सफलता और अद्वितीय व्यापार प्राप्ति, प्रमोशन और बेरोजगारी दूर करने, नौकरी प्राप्त करने और सम्पूर्ण सफलता के लिए,
5. निरन्तर आर्थिक उन्नति और मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए,
6. स्वयं के मकान की प्राप्ति, भूमि सुख और वाहन सुख के लिए,
7. आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए।

शास्त्रों की दृष्टि से इन समस्त प्रयोगों की सफलता के लिए इस दिन का अवश्य ही उपयोग करना चाहिए।

(ख) त्रिपुरसुन्दरी द्वितीय पर्व

भाद्रपद कृष्ण पक्ष त्रयोदशी शनिवार और पुष्य नक्षत्र के संयोग से यह योग बनता है। कर्क राशि स्थित चन्द्रमा होने से यह योग अपने-आप में अद्वितीय बन गया है। ऐसे योगों से सम्पन्न होने की वजह से यह दिन अपने-आप में

अद्वितीय बन जाता है। अतः ऐसे महत्त्वपूर्ण योग में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

1. शीघ्र विवाह के लिए एवं मनोवांछित पति या पत्नी के लिए,
2. प्रेमी या प्रेमिका को जीवन-भर वश में करने के लिए,
3. भगवती त्रिपुरसुन्दरी का नित्य दर्शन करने के लिए और अपने हृदय में स्थापित करने के लिए,
4. पूर्ण गृहस्थ जीवन प्राप्त करने और पारिवारिक कलह दूर करने के लिए,
5. घर के समस्त प्रकार के दोषों — पितृ दोष, ग्रह दोष, तान्त्रिक दोष आदि के निराकरण के लिए,
6. भगवती त्रिपुरसुन्दरी साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के लिए,
7. त्रिपुरसुन्दरी को इष्ट रूप में प्राप्त कर हमेशा के लिए हृदय में स्थापित करने के लिए।

उपर्युक्त कार्यों की सिद्धि के लिए यह अद्वितीय पर्व अपने-आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन जाता है और प्रत्येक साधक को इस अवसर का विशिष्ट तरीक़े से प्रयोग सम्पन्न कर लाभ उठाना चाहिए।

(ग) त्रिपुरसुन्दरी तृतीय पर्व

भाद्रपद शुक्ल पक्ष पंचमी शनिवार को चित्रा नक्षत्र और तुला राशि स्थित चन्द्रमा की वजह से यह अद्वितीय और दुर्लभ पर्व प्राप्त होता है। अद्वितीय योग से सम्पन्न होने के कारण इस पर्व के दिन जो भी प्रयोग किया जाता है, वह अपने-आप में सिद्धिदायक होता है।

निम्न कार्यों की पूर्ति के लिए और जीवन में सभी दृष्टियों से सफलता के लिए इस पर्व का प्रयोग करना चाहिए :

1. सन्तान प्राप्ति और पूर्ण पुत्र सुख के लिए,

2. पौत्र प्राप्ति और उन सबकी दीर्घायु के लिए,
3. अखंड सौभाग्य प्राप्ति के लिए,
4. घर में कन्या के शीघ्र विवाह और योग्य वर की प्राप्ति के लिए,
5. प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लिए,
6. पूर्ण सौन्दर्य एवं यौवन प्राप्ति के लिए,
7. अकाल-मृत्यु निवारण एवं सभी प्रकार की रोग निवृत्ति के लिए।

उपर्युक्त सभी कार्यों की सिद्धि के लिए इस पर्व का अवश्य ही उपयोग करना चाहिए, जिससे कि जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

(घ) त्रिपुरसुन्दरी चतुर्थ पर्व

भाद्रपद शुक्ल पक्ष पूर्णिमा चन्द्रवार शतभिषा नक्षत्र और कुम्भ राशि पर चन्द्रमा होने पर यह अद्वितीय पर्व उपस्थित होता है। इस पर्व का प्रयोग करना समस्त बाधाओं को मिटाना है।

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस पर्व का प्रयोग करना चाहिए :

1. भगवती दुर्गा के साक्षात दर्शन के लिए,
2. समस्त प्रकार की साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने के लिए,
3. सिद्धाश्रम में सुगमता से प्रवेश करने के लिए,
4. गुरु को पूर्ण रूप से सिद्ध करने के लिए,
5. जीवन में समस्त शत्रुओं का नाश करने और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए,
6. वाद-विवाद, मुक़दमों आदि में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए,
7. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा, राज्य संकट, अकारण भय और पूर्ण मानसिक सुख प्राप्ति के लिए।

ये चारों पर्व अपने-आप में अद्वितीय हैं और इनके दिन विशिष्ट त्रिपुरसुन्दरी साधना सम्पन्न कर प्रत्येक साधक मनोवांछित उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।

इन पर्वों की साधना सम्पन्न करने के लिए एक ही प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जाता है।

यह सामग्री अपने-आप में विशिष्ट शास्त्रसम्मत शुद्ध मन्त्र से चैतन्य, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त एवं दिव्य मन्त्रों से आपूरित होनी चाहिए, जिससे उन्हें पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो सके।

विशिष्ट साधना सामग्री

1. **अद्वितीय सर्व कामना सिद्धि युक्त त्रिपुरसुन्दरी यन्त्र** : जो चैतन्य एवं सिद्धि मन्त्र से सम्पूरित हो।
2. **स्वर्णावती यन्त्र** : जो अखंड एवं अनायास प्राप्तियुक्त सिद्ध विग्रह हो।
3. **वरदायक गृहस्थ सुख यन्त्र** : जो सभी प्रकार से पूर्ण गृहस्थ सुख में उपयोगी हो।
4. **मृत्युंजयी शिव रुद्राक्ष** : जो अकाल मृत्यु निवारण एवं पूर्ण आयु प्रदान करने से सम्बन्धित आपूरित हो।
5. **नव दुर्गायुक्त त्रिभुवनमोहिनी माला** : जो कि गले में पहनने के लिए और पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।
6. **कल्पवृक्ष साफल्य** : जो प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ति के लिए रावणकृत प्रयोग से सिद्ध हो।
7. **अद्वितीय त्रिपुरसुन्दरी पारद गुटिका** : जो भगवती त्रिपुरसुन्दरी के प्रत्यक्ष दर्शन कराने में समर्थ हो।
8. **ऋद्धि-सिद्धि युक्त दुर्लभ तन्त्रोक्त सियार सिंगी** : जो जीवन के समस्त विघ्नों को नाश कर पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।
9. **मनोवांछा सिद्धि यन्त्र** : जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में तुरन्त सहायक हो।

उपर्युक्त चारों पर्वों को भली प्रकार से प्रयोग करने के लिए यही सामग्री काम में लाई जाती है। ऊपर अलग-अलग पर्वों में जिन-जिन कामनाओं की बातें लिखी हैं, उनमें से चारों पर्व इस सामग्री द्वारा सम्पन्न किए जा सकते

हैं या इससे एक-दो पर्व सम्पन्न किए जा सकते हैं। आप चाहें तो चारों पर्वों में भाग ले सकते हैं।

साधना कौन करे

इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका कोई भी कर सकता है, इसलिए किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

अन्य सामग्री

निम्न सामग्री की पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए। यह ज़रूरी नहीं कि सारी सामग्री हो ही, जितनी भी सामग्री सुलभ हो सके, तैयार करके रखनी चाहिए।

आसन, किसी भी रंग का हो; जलपात्र, गंगाजल यदि हो तो; चांदी या स्टील की प्लेट, कुंकुम (रोली), चावल, केसर, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्प-माला, दूध, दही, घी, चीनी, शहद अनुमान से; नारियल, रक्त सूत्र या मौली अथवा कलावा, यज्ञोपवीत, अबीर-गुलाल, अगरबत्ती, कपूर, घी का दीपक, नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, पांच फल, इलायची।

इसके अलावा यदि घर में तांबे का पांच पात्र, अर्घ्य पात्र, घंटीशंख-अगरबत्तीदान आदि हो तो उसकी व्यवस्था करें।

साधना प्रयोग

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध सफ़ेद धोती पहनकर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं। यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी दाहिने हाथ की ओर आसन पर बैठा दें और हाथ में जल लेकर अपने शरीर पर छिड़कें, जिससे शरीर पवित्र हो जाए।

फिर सामने अगरबत्ती और दीपक जला लें और दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं त्रिपुरसुन्दरी से सम्बन्धित समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, जिससे कि मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

इसके पश्चात गणपति को स्थापित कर या एक सुपारी को पात्र में रखकर उसे गणपति मानकर उसकी पूजा करें। केसर-तिलक लगा लें, नैवेद्य और फल समर्पित करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें —

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

गणपति पूजन के बाद एक अलग पात्र में त्रिपुरसुन्दरी यन्त्र को सामने स्थापित कर दें और बाक़ी सारी सामग्री भी उसके सामने ही पात्र में रख दें। मूल पूजन त्रिपुरसुन्दरी यन्त्र का होगा। इसके साथ ही अन्य सभी यन्त्रों — पारद गुटिका, सियार सिंगी, रुद्राक्ष आदि — का पूजन भी हो जाएगा।

त्रिपुरसुन्दरी ध्यान

श्रीमातस्त्रिपुरे परात्परतरे देवि त्रिलोकीमहा
सौन्दर्यार्णव–मन्थनोद्भव–सुधा–प्राचुर्यवर्णोज्ज्वलम्।
उद्यद्भानुसहस्र नूतन जपा–पुष्पप्रभं ते वपुः
स्वान्ते मे स्फुरतु त्रिकोण निलयं ज्योतिर्मयं वाङ्मयम् ॥1॥
सिद्धारारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरं
तारानायक शेखरा स्मितमुखीमापीन वक्षारुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्नचषक रक्तोत्पलं विभ्रतीम्
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥2॥

तत्पश्चात हाथ में चावल लेकर उसे कुंकुम से रंगकर समस्त यन्त्रों पर थोडे-थोड़े चावल बिखेरते हुए निम्न उच्चारण करें —

अंगू पूजा

ओऽम् उमायै नमः पादौ पूजयामि। ओऽम् गौर्यै नमः
ओऽम् जंघे। ओऽम् पार्वत्यै नमः जानुनो। जगद्धात्र्यै नमः ऊरु।
ओऽम् जगत्प्रतिष्ठायै नमः कटि। ओऽम् शान्तिरूपिण्यै नमः नाभि। ओऽम् देव्यै नमः उदरै। ओऽम् लोकवन्दितायै नमः स्तनो।

ओऽम् काल्यै नमः कण्ठं। ओऽम् शिवायै नमः मुखं। ओऽम् भावान्यै नमः नेत्रे। ओऽम् रुद्राण्यै नमः कर्णौ। ओऽम् शर्वाण्यै नमः ललाटं। ओऽम् मंगलदात्र्यै नमः शिरः पूजयामि।

पत्र पूजा

ओऽम् उमायै नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ओऽम् गौर्यै नमः अपामार्ग पत्रं। ओऽम् पार्वत्यै नमः मालती पत्रं। ओऽम् दुर्गायै नमः दूर्वापत्रं। ओऽम् काल्यै नमः चम्पकपत्रं। ओऽम् भवान्यै नमः करवीरपत्रं। ओऽम् रुद्राण्यै नमः बदरी पत्रं। ओऽम् शर्वाण्यै नमः अर्कपत्रं। ओऽम् चण्डिकायै नमः तुलसीपत्रं। ओऽम् ईश्वर्यै नमः मुनिपत्रं। ओऽम् शिवायै नमः दांडिमपत्रं। ओऽम् अपर्णायै नमः अक्षर पत्रं। ओऽम् धात्र्यै नमः ताती पत्रं। ओम मृडान्यै नमः अगरु पत्रं। ओऽम् गिरिजायै नमः वकुलपत्रं। ओऽम् अम्बिकायै नमः अशोकपत्रं समर्पयामि।

इसके बाद पास में जो सामग्री है, उस सामग्री से पूर्ण पूजन कर और नव दुर्गा युक्त त्रिभुवनमोहिनी माला से मन्त्र जाप सम्पन्न करें। इसमें नित्य 11 माला मन्त्र जाप होना आवश्यक है।

ऊपर चार पर्व समझाए गए हैं। इन चारों पर्वों में पूजा विधान तो समान ही है, जो कि पीछे के पृष्ठों में दिया हुआ है, पर इनके लिए मन्त्र अलग-अलग हैं, जो निम्न प्रकार से हैं —

प्रथम पर्व को सम्पन्न किया जाने वाला मन्त्र —

ओऽम् त्रिपुरसुन्दर्यै लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं ऋणमोचने श्री देहि नमः।

द्वितीय पर्व को सम्पन्न किया जाने वाला मन्त्र —

ओऽम् ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकाम्य सिद्धि त्रिपुरसुन्दर्यै फट्

तृतीय पर्व को सम्पन्न किया जाने वाला मन्त्र –

ओऽम् भगवती त्रिपुरसुन्दरी सर्व कार्य सिद्धि देहि देहि कर्मैश्वर्यै नमः।

चतुर्थ पर्व को सम्पन्न किया जाने वाला मन्त्र –

ओऽम् महाकाल्यै शत्रु संहारय क्लीं
कार्य सिद्धयर्थ त्रिपुरसुन्दर्यै हुं फट् ॥

ये सभी मन्त्र अद्वितीय और महत्त्वपूर्ण हैं। महत्त्वपूर्ण अवसर पर इनका पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक पर्व को मन्त्र जाप करने के बाद इन सभी यन्त्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और नित्य इनके सामने अगरबत्ती व दीपक जलाना चाहिए।

सामग्री उपयोग

साधना सम्पन्न करने के बाद यन्त्रों का प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए – 1. अद्वितीय त्रिपुरसुन्दरी यन्त्र को पूजास्थान में ही रख देना चाहिए। 2. स्वर्णावती यन्त्र को भी अपने कार्यालय में या पूजास्थान में रखना चाहिए। 3. गृहस्थ सुख यन्त्र को घर में किसी स्थान पर लटका देना चाहिए। 4. शिव रुद्राक्ष को किसी शिव मन्दिर में भगवान शिव पर चढ़ा देना चाहिए। 5. त्रिभुवनमोहिनी माला को गले में पहने रखना चाहिए, या जब भी किसी देवता की पूजा करें, तब उसे धारण करें। 6. कल्पवृक्ष साफल्य को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। 7. पारद गुटिका को पूजास्थान में रख दें। 8. सियार सिंगी को दक्षिण दिशा की ओर जाकर ज़मीन में गाड़ दें। 9. मनोवांछा सिद्धि यन्त्र को पूजास्थान में रख दें।

यदि कोई साधक किसी विशेष कारण स्वयं मन्त्र जाप या प्रयोग न कर सके, तो अपने घर किसी योग्य पंडित को बुलाकर भी यह प्रयोग एवं मन्त्रजप सम्पन्न करवा सकता है।

यक्षिणी साधना सिद्धि

'यक्ष' शब्द का तात्पर्य एक ऐसी विशेष जाति से है, जो अपने-आप में धन, ऐश्वर्य, प्रभुता और सम्पन्नता का अधिपति होता है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर हैं, जिनकी पूजा-अर्चना दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी के साथ सम्पन्न की जाती है। कुबेर 'यक्ष' जाति के हैं और रावण ने भी कुबेर साधना सम्पन्न कर ऐश्वर्य प्राप्त किया था।

यक्षिणी साधना भी सम्पन्न की जाती है। अगर सही प्रकार से देखा जाए, तो लक्ष्मी साधना से भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण 'यक्षिणी साधना' है, क्योंकि यक्षिणी साधना से हम वह सब-कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे जीवन का उद्देश्य है। यक्षिणी साधना निम्न पांच कारणों से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण मानी गई है –

1. यह साधना सरल है और इसमें ज़्यादा जटिल विधि-विधान नहीं है।
2. यह साधना कम-से-कम समय की है और इसमें साधक को ज्यादा समय बरबाद नहीं करना पड़ता।
3. यह साधना शीघ्र सिद्धिप्रद और तुरन्त फलदायक मानी गई है।
4. यक्षिणी साधना से साधक को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती, अपितु लाभ ही होता है।
5. यक्षिणी साधना सम्पन्न करने पर यक्षिणी सौम्य रूप में जीवन-भर साधक के वश में बनी रहती है और उसका मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती रहती है।

यक्षिणी स्वरूप

हमारे मन में या विचारों में यक्षिणी का जो रूप, आकृति या बिम्ब है वह ग़लत है। यक्षिणी तो अत्यन्त सुन्दर, सौम्य और सरल स्वभाव की है। यह निरन्तर सोलह वर्ष की यौवनवती सुन्दरी के रूप में सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित साधक के सामने बनी रहती है। यह अपने-आप में चिर यौवनमयी कहलाती है और इसके शरीर से एक अपूर्व गन्ध निकलती रहती है, जो किसी भी पुरुष को सम्मोहित करने के लिए पर्याप्त है। यह स्वभाव से भोली और साधक के प्रति पूर्ण समर्पित होती है और साधक को मनोवांछित कार्य सम्पन्न करने के लिए प्रतिक्षण तत्पर रहती है। साधक के जीवन में यक्षिणी प्रेमिका या प्रिया रूप में ही बनी रहती है और निरन्तर साधक को धन, ऐश्वर्य एवं सुख प्रदान करती रहती है।

यक्षिणी साधना के लाभ

इस साधना के आठ महत्त्वपूर्ण लाभ हैं। इन लाभों को साधकों ने निरन्तर प्राप्त किया है और उनके अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि इस साधना से साधक को ये लाभ प्राप्त होते ही हैं —

1. साधना सिद्ध होने पर यक्षिणी सशरीर सुन्दर-सज्जित वस्त्रों में साधक को मिलती है और उसकी ही बनकर रह जाती है।
2. ऐसी यक्षिणी जीवन-भर साधक की आज्ञा मानती रहती है।
3. आज्ञा प्राप्त होने पर साधक जो चाहता है, वह यक्षिणी प्रदान करती रहती है। इसमें धन, ऐश्वर्य , वस्त्र, स्वर्ण, शारीरिक सुख एवं मानसिक तुष्टि आदि सब-कुछ प्रदान करती रहती है।
4. ऐसी यक्षिणी सलाहकार के रूप में साधक को निरन्तर सलाह देती है एवं मार्गदर्शन करती है। मुसीबत पड़ने पर वह तन-मन-धन से सेवा करती है।
5. यक्षिणी सिद्धि होने पर वह शारीरिक और मानसिक रूप से साधक को तुष्टि प्रदान करती है।

6. ऐसी यक्षिणी दृश्य रूप में और अदृश्य रूप में साधक को दिखाई देती रहती है और कभी भी विश्वासघात नहीं करती।
7. किसी भी प्रकार की साधना या उपासना करने वाला साधक ऐसी साधना को सम्पन्न कर सकता है और इससे किसी प्रकार का कोई दोष व्याप्त नहीं होता।
8. यक्षिणी साधना जीवन में निरन्तर धन और द्रव्य प्रदान करती रहती है। ऐसे साधक को वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती। साधक स्वयं यक्षिणी के प्रभाव से निरन्तर यौवनमय बना रहता है।

यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है और ऐसी साधना को जहां देवताओं ने सिद्ध किया है, वहीं पर योगियों, यतियों और संन्यासियों ने भी सिद्ध कर सफलता पाई है तथा जंगल में मंगल बनाए रखा है। गृहस्थ व्यक्ति भी ऐसी साधना सम्पन्न कर सकते हैं। इसे पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। इसमें किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

यदि यह साधना किसी कारणवश असफल भी हो जाए, तो भी साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती और यदि पहली बार में नहीं, तो अगली किसी साधना में सफलता प्राप्त हो जाती है। कई साधकों को तो पहली बार में ही यह साधना सिद्ध हो जाती है।

साधना मुहूर्त

यह साधना यदि दीपावली के आसपास सम्पन्न की जाए, तो ज़्यादा उचित है। मुहूर्त की दृष्टि से जिस वर्ष प्रतिपदा को स्वाति नक्षत्र और प्रीति योग हो, जो दीपावली के दूसरे दिन हो, उस दिन इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

इस साधना में चार वस्तुओं की ज़रूरत होती है —

1. जलपात्र, कुंकुम, केसर और चावल;

2. हक़ीक़ माला जिसके द्वारा मन्त्र जपा जाए;

3. पीला आसन और पहनने के लिए पीली धोती;

4. दिव्यांगना स्वर्णप्रभा यक्षिणी सिद्धि यन्त्र।

रात्रि को दस बजे के बाद साधक पीला आसन बिछा दे और उस पर शान्त चित्त से बैठ जाए। अपने पास उपर्युक्त सामग्री के अलावा गुलाब के पुष्पों का हार भी रखे, जिससे कि जब यक्षिणी प्रत्यक्ष हो, तब उसके गले में वह हार पहना दिया जाए और उससे वचन ले ले कि वह जीवन-भर उसके वश में रहेगी और जो भी वह आज्ञा देगा उसे पूरा करेगी। ऐसा करने पर साधना सिद्ध मानी जाती है।

यदि गुलाब के पुष्प उपलब्ध नहीं हों, तो किसी भी प्रकार की माला साधना समय से पहले ही लाकर रखी जा सकती है।

साधना विधि

साधक किसी स्टील की थाली में केसर से स्वस्तिक या 'श्री' अक्षर लिखकर उस पर 'दिव्यांगना स्वर्णप्रभा यक्षिणी सिद्धियन्त्र' स्थापित कर दे। इस यन्त्र को पहले किसी अलग पात्र में कच्चे दूध से धो ले और फिर जल से धो-पोंछकर केसर से अंकित 'श्री' पर इस यन्त्र को स्थापित कर दे। यदि सम्भव हो, तो गुलाब का इत्र चढ़ाए, पुष्प समर्पित करे और दूध का बना हुआ भोग लगाए। इसके बाद पास में ही तेल का दीपक एवं अगरबत्ती जला दे। साधक स्वयं उत्तर की ओर मुंह कर बैठे और उसी रात हक़ीक़ माला से मात्र 21 माला मन्त्र जाप सम्पन्न करे।

मन्त्र

ओऽम् ऐं श्रीं ह्रीं दिव्यांगना आगच्छ सिद्धिं देहि–देहि फट्।

मन्त्र जाप पूरा होने के बाद जब यक्षिणी के प्रत्यक्ष दर्शन हों या ऐसा अनुभव हो कि पास में अत्यन्त मधुर सुगन्धयुक्त षोडशी दिव्यांगना आकर

बैठी है, तो उसके गले में वह पहले से ही लाया हुआ हार पहना दे और वचन ले ले कि दिव्यांगना यक्षिणी उसके वश में रहेगी और जीवन-भर जो आज्ञा देगा उसका पालन करेगी।

इस साधना के सम्पन्न होने के बाद वह यन्त्र, जो तावीज़ के आकार का होता है, अपनी बांह पर बांध ले। ऐसा करने पर उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

सात सुख साधनाएं

भारतीय शास्त्रों में एक स्वर से स्वीकार किया गया है कि जीवन का वास्तविक सुख केवल धन संचय करने या प्रभुत्व स्थापित करने में ही नहीं है। एक पक्ष को ही उन्नत करने से मनुष्य का पूर्ण विकास नहीं हो पाता, उसको चाहिए कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्नति करे, सफलता प्राप्त करे और पूर्णता ग्रहण करे।

जब हम अपने परिवार को और समाज के अन्य परिवारों को देखते हैं और गहराई के साथ उनका विश्लेषण करते हैं, तो पता चलता है कि हरेक व्यक्ति थोड़े-बहुत रूप में दुखी हैं ही। कोई अपने शरीर में उत्पन्न रोगों से दुखी है, तो कोई पत्नी की बीमारी से परेशान है, किसी के घर में सन्तान नहीं है, तो किसी के घर में यदि पुत्र है और वह आज्ञाकारी नहीं है, उच्छृंखल हो गया है, तो उसके माता-पिता और परिवार के अन्य लोग दुखी हैं। कोई शत्रुओं के भय से पीड़ित है, तो कोई राज्य के भय से, तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति कहीं-न-कहीं दुखी अवश्य है। उसके अपने जीवन में आनन्द उमंग और सुख नहीं है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति मन के किसी कोने में रिक्तता अनुभव करता रहे।

बहुत ही कम लोग ऐसे होंगे, जो सभी दृष्टियों से पूर्ण सुखी कहे जा सकते हैं। शास्त्रों में भी कहा है कि कुल मिलाकर सात सुख होते हैं। जिसके जीवन में सातों सुख होते हैं, वह अपने-आप में पूर्ण कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति का ही जीवन सुखी और सफल कहा जा सकता है।

पहला सुख : निरोगी काया

यदि जीवन में ज़रूरत से ज्यादा धन, ऐश्वर्य, मान, पद, प्रतिष्ठा और सब-कुछ है, परन्तु यदि बीमारी है, रोग है, तो सारा धन, ऐश्वर्य व्यर्थ हो जाता है। न तो वह सही ढंग से स्वादिष्ट भोजन कर सकता है, न वह घूम-फिर सकता है और न परिवार का सुख ही ले सकता है, इसीलिए शास्त्रों में निरोग शरीर को जीवन का पहला और उत्तम कोटि का सुख माना है।

जीवन में तीन प्रकार के रोग होते हैं — 1. अंग-भंग या शारीरिक न्यूनता, 2. आन्तरिक बीमारियां, 3. मानसिक परेशानियां।

इन तीनों को ही रोग की श्रेणी में माना है। जो इन रोगों से मुक्त हो सकता है, वही अपनी आयु में पूर्ण सुखी और सफल कहला सकता है।

मनुष्य प्रयत्न करता है, परन्तु फिर भी वह इन रोगों से मुक्ति पा नहीं सकता। कोई-न-कोई बीमारी उसे घेरे रहती है। इसके लिए विश्वामित्र संहिता में एक उत्तम कोटि का प्रयोग दिया गया है, जिससे साधक सभी प्रकार के रोगों से मुक्त होकर पूर्ण सुख प्राप्त कर सकता है।

प्रयोग

अपने घर में सफ़ेद आक के गणपति या जिसे शास्त्रों में 'श्वेतार्क गणपति' कहा गया है, बुधवार को उसे अपने घर से पूजास्थान में स्थापित करें। यह गणपति अथर्व मन्त्र से सिद्ध हो।

गणपति को स्थापित कर उस पर एक सौ आठ बार **गं गणपतये नमः** मन्त्र से थोड़ा-थोड़ा करके जल चढ़ाएं और उस जल का पान चरणामृत के रूप में स्वयं करें तथा परिवार के अन्य सदस्यों को भी दें। ऐसा नित्य करें। इस प्रकार के प्रयोग में पन्द्रह मिनट से ज़्यादा नहीं लगते। यह आपके जीवन के लिए तो उपयोगी है ही, आने वाली पीढ़ी के लिए भी गणपति अत्यन्त उपयोगी रहेंगे।

जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि अन्य गणपति विग्रह तो आसानी से मिल जाते हैं, परन्तु सफ़ेद आक के गणपति का प्राप्त होना, तो प्रबल

भाग्योदय से ही सम्भव है। क्यों न हम दीपावली के पूर्व ऐसे अद्भुत, महत्त्वपूर्ण गणपति विग्रह को स्थापित करें और जीवन का आनन्द लें।

यह प्रयोग आपकी अनुपस्थिति में पत्नी, पुत्र या पुत्रवधू कोई भी कर सकता है। इसके लिए विशेष विधि-विधान की ज़रूरत नहीं है। यदि कभी ऐसा प्रयोग न भी कर पाएं, तो भी कोई बाधा नहीं होती।

दूसरा सुख : निरन्तर धन प्राप्ति

जहां शरीर स्वस्थ है, पर घर में धन का अभाव है, तो स्वस्थ शरीर भी काटने को दौड़ता है। जब घर में आर्थिक परेशानियां होती हैं, तो ऐसा लगता है कि मर ही जाएं तो अच्छा। जब हम अपने छोटे-छोटे पुत्रों की इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते, जब हम पत्नी की कामना को पूर्णता नहीं दे पाते, जब हम स्वयं के लिए मकान नहीं बना पाते, तो मन में यह विचार आता है कि ऐसे जीवन से तो मृत्यु ही ज़्यादा श्रेयस्कर है।

यह बात सही भी है कि जीवन में धन की महत्ता है और रहेगी भी। धन प्राप्ति के सैकड़ों प्रयोग हैं, परन्तु इसके लिए दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग अपने-आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

प्रयोग

यूं तो लक्ष्मी साधना, कुबेर साधना, सहस्रलक्ष्मी साधना और अन्य कई साधनाएं हैं, जिनके द्वारा आर्थिक उन्नति होती है, परन्तु इन सबमें दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग अपने-आप में अद्भुत, आश्चर्यजनक और सफलतादायक है।

शंख को लक्ष्मी का ही सहोदर माना गया है। व्यापार वृद्धि, प्रमोशन, आर्थिक उन्नति, निरन्तर धन प्राप्ति और ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए दक्षिणावर्ती शंख की साधना जो कि दीपावली के दिन या किसी भी अमावस्या को सम्पन्न की जा सकती है, या उन दोनों दिन शुरू करनी चाहिए, इसके लिए विशेष मुहूर्त की ज़रूरत नहीं होती। इसमें दो बातें ध्यान में रखने योग्य हैं — पहले तो ऐसा शंख मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो, दूसरे यह शंख दक्षिणावर्ती हो, जिसका मुंह दक्षिण की ओर खुला हुआ हो और तीसरे इस शंख का वज़न

दस तोले से पच्चीस तोले के बीच होना चाहिए। ऐसे ही शंख को उत्तम शंख माना गया है।

तीसरा सुख : आज्ञाकारी पुत्र

यदि किसी प्रकार का कोई रोग नहीं है, घर में सभी निरोग हैं और ज़रूरत से ज़्यादा धन है, परन्तु पुत्र का अभाव है, तो वह धन बेकार चला जाता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर में पुत्र नहीं होता, उसका यह लोक तो बिगड़ता ही है, अगली ज़िन्दगी भी बिगड़ जाती है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का श्राद्ध करने वाला कोई नहीं होता, धन को भोगने वाला भी नहीं रहता। समाज में सैकड़ों ताने सुनने पड़ते हैं, बुढ़ापा बेसहारा हो जाता है।

यदि घर में पुत्र हो और वह कपूत हो, आज्ञा नहीं मानता हो, लड़ाई-झगड़े करता हो, उसमें चोरी, जुआ या शराब पीने की आदत पड़ गई हो तथा वह परस्त्रियों से सम्बन्ध रखता हो या पूरी पढ़ाई नहीं करता हो, आवारागर्दी करता हो, तो ऐसा बेटा दुखदायी होता है। ऐसे पुत्र वाले व्यक्ति को निरन्तर अपमान सहना पड़ता है, लोगों की शिकायतें सुननी पड़ती हैं, घर में लड़ाई-झगड़ा बना रहता है और उसने समाज में जो सम्मान अर्जित किया है, वह बरबाद हो जाता है।

इसीलिए शास्त्रों में तीसरा सुख आज्ञाकारी पुत्र माना है, इसके लिए भी महत्त्वपूर्ण प्रयोग दिया है, जिससे यदि पुत्र नहीं होता हो, तो इस प्रयोग से हो जाता है और यदि घर में कुपुत्र है, तो उसकी आदतें और स्वभाव अनुकूल बन जाता है, वह आज्ञाकारी हो जाता है। यदि पुत्र के जीवन में किसी प्रकार की परेशानी है, तो वह भी इस प्रयोग से दूर हो जाती है।

प्रयोग

इसके लिए शास्त्रों में पारद शिवलिंग का विशेष महत्त्व बताया गया है। वह वानस्पतिक पारद शिवलिंग कहा जाता है। शिवलिंग केवल पारे का ही नहीं बना होता, अपितु इसमें कुछ विशेष वनस्पतियां मिलाकर उसके सहयोग से शिवलिंग का निर्माण किया जाता है।

इस शिवलिंग की पांच विशेषताएं होनी चाहिए, तब ही वह फलप्रद होता है — 1. यह शिवलिंग विशेष वनस्पतियों को पारे में मिलाकर विशेष विधि से निर्मित किया हुआ हो, 2. इसका वज़न कम-से-कम आठ तोले से ज़्यादा हो, 3. यह शिवलिंग मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त हो, 4. यह शिवलिंग सफ़ेद चमकदार हो, 5. ऐसा शिवलिंग रुद्राभिषेक मन्त्रों से पूर्ण हो।

किसी भी सोमवार को अपने पूजा स्थान में इस प्रकार का महत्त्वपूर्ण शिवलिंग स्थापित कर दें और फिर सोमवार को पांच बिल्वपत्र या पांच आक के पत्ते या पांच पुष्प भगवान शिव पर चढ़ाएं। प्रत्येक बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करें —

मन्त्र

ओऽम् पारदैश्वर्य पुत्र सुखं देहि–देहि सह गौर्यै नमः।

इस प्रकार नित्य करें और पुष्प या बिल्वपत्र चढ़ाने के बाद उपर्युक्त मन्त्र उच्चारण करते हुए पानी और दूध मिलाकर पतली-पतली धारा शिवलिंग पर चढ़ाते रहें। ऐसा लगभग पांच मिनट तक करें।

फिर जल को स्वयं पर तथा अपनी पत्नी पर छिड़क दें। यदि आप उचित समझें, तो इस जल को घर में भी छिड़का जा सकता है। ऐसा मात्र तीन महीने तक करने से पुत्र से सम्बन्धित सारी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं और जीवन में पूर्ण आनन्द प्राप्त हो जाता है।

ऐसा शिवलिंग तो दुर्लभ ही कहा जाता है और आपके लिए ही नहीं, अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए भी यह महत्त्वपूर्ण रहेगा।

चौथा सुख : राज्य सम्मान

व्यक्ति की यह आकांक्षा रहती है कि वह अपने जीवन में परिवार, धन, ऐश्वर्य के बाद सम्मान भी प्राप्त करे। उसकी यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि समाज उसे मान्यता दे, उसकी इज़्ज़त करे, उसको प्रतिष्ठा दे, वह राज्य में निरन्तर उन्नति करे, राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हो, परन्तु इसके विपरीत

समय पर उसका प्रमोशन नहीं होता या अवांछनीय स्थान पर स्थानान्तरण हो जाता है, इन्कम टैक्स या सेल टैक्स की तलवार सिर पर लटकी रहती है, हर समय दिल में एक भय बना रहता है कि किसी प्रकार से राज्य की तरफ़ से कोई बाधा या परेशानी उत्पन्न न हो, इसके लिए वह जीवन में धन, पुत्र स्वस्थ शरीर होते हुए भी चिन्तित बना रहता है और जब तक राज्य-भय समाप्त नहीं होता, तब तक यह मानसिक तनाव हटता ही नहीं।

इस साधना से दो लाभ हैं — एक तो अकारण राज्य-भय समाप्त हो जाएगा और दूसरे राज्य की तरफ़ से जो सम्मान और प्रसिद्धि प्राप्त होनी चाहिए, वह प्राप्त होगी।

प्रयोग

यह सियार सिंगी पर प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, जो कि 'अथर्वशीर्ष' से मन्त्रसिद्ध हो, ऐसी ही सियार सिंगी अपने-आप में पूर्ण उपयोगी होती है।

रविवार के दिन रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने किसी पात्र में सियार सिंगी रख दें और उस पर कुंकुम लगाएं, अक्षत (चावल) चढ़ाएं और फिर हक़ीक़ माला से नित्य एक माला मन्त्र जाप करें। यह प्रयोग छः दिन का है। इसमें तेल का दीपक जलाना चाहिए। लाल आसन हो, लाल धोती पहनकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

इस साधना में अन्य सियार सिंगी या हक़ीक़ माला उपयोगी नहीं होती। इस साधना के लिए सर्वथा अलग ही सियार सिंगी और हक़ीक़ माला का प्रयोग किया जाता है, जो कि केवल इसी प्रयोग के लिए होती है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं ऐं विघ्ननाशाय फट्।

जब भी आपको राज्य-भय अनुभव हो या ऐसी आशंका हो कि कोई तकलीफ़ आने वाली है या आप पर कोई विपत्ति आ ही गई है, तो इसी मन्त्र से छः दिन का प्रयोग करने पर विपत्ति टल जाती है।

यदि आप सही स्थान पर स्थानान्तरण चाहते हैं या राज्य सम्मान चाहते हैं अथवा ऐसी ही आपकी कोई इच्छा है, तो वह पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सम्पन्न हो जाती है।

यह साधना किसी भी गृहस्थ व्यक्ति के लिए उपयोगी है और इसको पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, पर जिस सियार सिंगी या हक़ीक़ माला से पुरुष ने मन्त्र जाप या अनुष्ठान कर दिया, तो उस पर वह व्यक्ति जीवन-भर प्रयोग कर सकता है, पर उसकी स्त्री, पुत्र या अन्य व्यक्ति उस पर प्रयोग सम्पन्न नहीं कर सकते, यदि उन्हें प्रयोग करना हो, तो अन्य हक़ीक़ माला और सियार सिंगी का प्रयोग करना चाहिए।

पांचवां सुख : सुलक्षणा नारी

यदि घर में सभी सुख हों, पर पत्नी झगड़ालू, लड़ाई करने वाली या क़दम-क़दम पर पति पर सन्देह करने वाली हो, तो उसका घर नरक के समान बन जाता है। इसी प्रकार यदि विवाह नहीं हो रहा हो, विवाह में बाधाएं आ रही हों, या बार-बार सगाई होकर छूट रही हो अथवा तलाक़ की नौबत आ गई हो और तलाक़ नहीं हो रहा हो, ऐसी सारी स्थितियों में इस प्रयोग को आजमाना चाहिए, यह प्रयोग अपने-आप में महत्त्वपूर्ण है।

घर में लड़की बड़ी हो जाती है और उसका विवाह समय पर नहीं हो पाता या उसमें बाधाएं आ रही हों, तो भी यह प्रयोग उपयोगी है। इसी प्रकार यदि लड़के का विवाह नहीं हो रहा हो, या बहू घर में लड़ाई-झगड़े करती हो अथवा घर में कलह हो, या उसका चाल-चलन ठीक नहीं हो, तो इन सारी स्थितियों में भी यह प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग

इस प्रयोग में एकाक्षी नारियल का उपयोग होता है। यह एकाक्षी नारियल प्रामाणिक हो और 'गौरी मन्त्र' से सिद्ध हो। साथ ही इस पर पूर्ण प्राण प्रतिष्ठा तथा प्राण संजीवनी क्रिया की हुई हो।

शुक्रवार के दिन प्रातः स्नान कर, सफ़ेद धोती पहनें और पूर्व की तरफ़ मुंह कर बैठ जाएं। सामने छोटा-सा पीला कपड़ा बिछा दें। उस पर एकाक्षी नारियल को स्थापित कर दें। स्थापित करने से पूर्व उसे पूरे का पूरा कुंकुम व केसर से या सिन्दूर से रंग देना चाहिए।

इसके बाद उस पर जल चढ़ाएं, केसर का तिलक करें, चावल चढ़ाएं, पुष्प समर्पित करें और दूध का बना हुआ भोग लगाएं, फिर घी का दीपक जला लें और दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

इसके बाद हक़ीक़ माला से मन्त्र जाप सम्पन्न करें। यह हक़ीक़ माला भी एकाक्षी नारियल मन्त्र से सिद्ध हो और देवी चेतना मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो, तभी इसका लाभ मिल सकता है। इसके बाद निम्न मन्त्र की पांच मालाएं जाप करें —

मन्त्र

ओऽम् एकाक्षी नारिकेल सर्व दोषान् त्याज्य मम।
मनोवांछित कार्य सिद्धय सिद्धय ह्रीं ऐं ओऽम् फट् ॥

यह प्रयोग आठ दिन का है। नित्य प्रातः काल ही मन्त्र जाप किया जाना चाहिए। आप, पत्नी, आपके घर का कोई भी सदस्य या कोई ब्राह्मण इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। प्रयोग सम्पन्न होने पर अनुकूल परिणाम होते ही हैं।

छठा सुख : शत्रुमर्दन

जीवन में सभी सुख हों, पर यदि ज़रूरत से ज्यादा आलोचक या शत्रु हों, तो निरन्तर हमें नीचा दिखाने या मारने की फ़िराक़ में रहते हों, या किसी-न-किसी प्रकार से हमें परेशान करने की भावना रखते हों, तो सारा सुख अपने-आप में बेकार हो जाता है।

यही नहीं, अपितु यदि हम पर कोई मुक़दमा चल रहा हो या हमने किसी पर मुक़दमा दायर कर रखा हो, या पड़ोसी अथवा व्यापारी बराबर परेशान

कर रहा हो और हमें आर्थिक-व्यापारिक नुक़सान पहुंचाने की चेष्टा करता हो, तो यह प्रयोग उत्तम है।

इस प्रयोग से शत्रु का नाश होता ही है। धीरे-धीरे शत्रु परास्त होता हुआ अपने-आप में ही बरबाद हो जाता है और पीड़ित व्यक्ति आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करता है।

प्रयोग

यह प्रयोग हत्था जोड़ी पर सम्पन्न होता है। हत्था जोड़ी भी प्रकृति का एक महत्त्वपूर्ण वरदान है, जिसके माध्यम से व्यक्ति जीवन के सारे आनन्द ले पाता है, ऐसी हत्था जोड़ी प्रामाणिक हो और शत्रुस्तम्भन एवं शत्रुमरण प्रयोग से सिद्ध हो।

इस हत्था जोड़ी को मंगलवार के दिन लाल वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दें और इसके दोनों तरफ़ तेल का दीपक जला लें। ख़ुद भी लाल धोती पहनकर रात्रि के समय हक़ीक़ माला अथवा सर्प अस्थियों की माला से मन्त्र जाप सम्पन्न करें, पर ये मालाएं शत्रुमरण प्रयोग से सिद्ध होनी आवश्यक हैं, तभी इसका लाभ मिल सकता है।

इसके बाद नित्य ग्यारह माला मन्त्र जाप रात्रि को सम्पन्न करें। यह केवल छः दिन का प्रयोग है। मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करें। छः दिन के बाद प्रयोग सम्पन्न होने पर उसी लाल वस्त्र में हत्था जोड़ी को लपेटकर आग में जला दें, तो शत्रु का नाश हो जाता है।

मन्त्र

ओऽम् क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं 'अमुक' शत्रु मारय
मारय ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं फट्।

वास्तव में यह प्रयोग महत्त्वपूर्ण है।

सातवां सुख : ईश्वर दर्शन

यदि घर में सब-कुछ हो, पर जीवन का उद्देश्य ही पूर्ण नहीं हो रहा हो या अपने जीवन में ही इष्ट के दर्शन न हों, तो यह सारा जीवन एक प्रकार से बेकार हो जाता है, इसलिए जीवन का अन्तिम सुख अपने जीवन काल में ही प्रभु के दर्शन कर उसके चरणों में अपने-आप को लीन करता हुआ, पूर्ण तनावरहित होकर समर्पित कर देने को ही सातवां सुख कहते हैं।

प्रयोग

यह प्रयोग पांच रुद्राक्ष पर सम्पन्न किया जाता है। सोमवार के दिन इनको सामने रखकर स्फटिक माला, रुद्राक्ष माला या किसी भी माला से पांच लाख मन्त्र जाप करने पर ईश्वर दर्शन होते ही हैं। इस साधना में दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है।

मन्त्र

ओऽम् ब्रह्मात्मने इष्ट दर्शय दर्शय हुं।

जीवन के ये सातों सुख अपने-आप में ही महत्त्वपूर्ण हैं और प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य होना चाहिए कि धीरे-धीरे एक-एक करके इन सभी साधनाओं को सम्पन्न कर देना चाहिए, जिनसे उसके सारे मनोरथ इस जीवन में पूर्ण हो जाएं।

अखंड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग

दीपावली का पर्व पूर्ण 'विजय पर्व' है, इस पर्व का तात्पर्य दरिद्रता पर विजय, कष्टों पर विजय, अभावों, परेशानियों और पीड़ाओं, दुःख, दैन्य और दरिद्रता पर विजय है। यह पर्व ऐसा है, जिसे पूरा भारतवर्ष एक साथ उमंग और उल्लास के साथ मनाता है। विदेशों में भी इस पर्व को विजय पर्व के रूप में मनाते हैं। अफ्रीका के कुछ क़बीलों में इस दिन दरिद्रता को आटे की मूर्ति बनाकर विशेष मन्त्रों से काटकर नदी में प्रवाहित करने की परम्परा है। चीन में दीपावली के दिन घास-फूस का पुतला बनाया जाता है, जो कि भूख और दुख का प्रतीक होता है और फिर उस पर कुछ मन्त्र पढ़कर आग लगा देते हैं, जिसका तात्पर्य है कि हम मन्त्रों से अपने जीवन की भूख और दरिद्रता को मिटा रहे हैं। मॉरिशस में यह पर्व अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया जाता है और पांच दिनों तक लक्ष्मी की विशेष साधना सम्पन्न की जाती है। तिब्बत के बौद्ध मठ तो तान्त्रिक क्षेत्र में विश्वविख्यात हैं। वे पांच दिनों तक विशिष्ट साधना सम्पन्न करते हैं और अपने मठों को अद्वितीय धन-सम्पन्न बना देते हैं।

तिब्बती तन्त्र साधना

मन्त्र-तन्त्र साधना भारतवर्ष की जितनी प्राचीन है, तिब्बत में भी उतनी ही प्राचीन है। तिब्बत के अधिकतर लामा तो इस क्षेत्र में आज भी अद्वितीय हैं। उन्होंने योगबल से और तन्त्र के माध्यम से जो कुछ प्राप्त किया है, वह अपने-आप में अद्वितीय है। उसकी तुलना तो हो ही नहीं सकती।

तिब्बत किसी समय भले ही छोटा-सा देश रहा हो, परन्तु वहां के बौद्ध मठ अपने-आप में पवित्र, दिव्य और उच्चस्तरीय रहे हैं। लक्ष्मी को पूर्णता से प्राप्त करें और घर में स्थायी रूप से निवास कराएं, इसके लिए उन्होंने तन्त्र की विशेष साधना पद्धति ढूंढ़ निकाली, जो अभी तक अपने-आप में गोपनीय और दुर्लभ रही है। यह एक ऐसी साधना है, जिसके माध्यम से हमेशा के लिए दुख, दैन्य और कष्ट समाप्त हो जाता है। यह एक ऐसी साधना है, जिसके द्वारा लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्वजन्म के दोष नष्ट हो जाते हैं और यह एक मात्र ऐसी साधना है, जिससे घर में निरन्तर धन-धान्य, सुख-सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती रहती है।

राहुल सांकृत्यायन का नाम तो विख्यात है। उन्होंने तिब्बत के दुर्लभ मठों की यात्रा की थी और उनका एक मात्र उद्देश्य लक्ष्मी सिद्ध करने की उस विशिष्ट विधि को ढूंढ़ निकालना था, जिसके द्वारा घर में लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके, निरन्तर व्यापार वृद्धि हो सके, घर में सुख-सौभाग्य बढ़ सके, हमेशा के लिए दरिद्रता समाप्त हो सके और कुछ ऐसा प्राप्त हो सके, जिसके द्वारा यह चंचल लक्ष्मी सदा के लिए घर में बनी रह सके, परन्तु राहुल जी को भी उस हस्तलिखित ग्रन्थ या साधना विधि का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका, जो कि वह चाहते थे।

पिछले वर्ष मैं मानसरोवर की यात्रा पर था। मैं तो संन्यासी, फक्कड़-अलमस्त योगी रहा हूं। मुझे न रुपये-पैसे का लालच है और न किसी प्रकार की चाह ही, परन्तु कालतवांग से आगे जाने पर इतने ज़ोर का अन्धड़ और तूफ़ान आया कि मेरे साथ जो भार ढोने वाला तिब्बती था, वह मुझसे बिछुड़ गया और मैं अलग-थलग गिरता-पड़ता एक किलोमीटर दूर छोटी-सी पहाड़ी पर बने हुए बौद्ध मठ में जा पहुंचा। ल्हून बौद्ध मठ की चर्चा पूरे तिब्बत और भारतवर्ष में है। सुनते थे कि यहां पर उच्चकोटि के ग्रन्थ भरे पड़े हैं, जो तन्त्र साधना से सम्बन्धित हैं। यह संयोग ही था कि मैं इस तिब्बती मठ में जा पहुंचा। वहां के रक्षक ने मुझे देखा और ज़ोरों से अन्धड़ और तूफ़ान को अनुभव कर मुझे अन्दर जाने की स्वीकृति दे दी। मैं जब अन्दर पहुंचा, सर्दी के मारे मेरे दांत किटकिटा रहे थे और सारा शरीर थरथरा रहा था। उसने

मुझे गर्म रज़ाई दी और याक पशु का दूध गर्म कर पीने के लिए दिया। इससे मेरी कंपकंपी कुछ दूर हुई और मैं चैतन्य हुआ।

तूफ़ान आया तो ऐसा आया कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था, तीन दिन बीत गए। समय का कुछ पता नहीं चल रहा था। यद्यपि मैंने तन्त्र साधनाएं सिद्ध कर रखी थीं और मुझे अपने जीवन में यह गर्व रहा है कि मैं स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का प्रिय शिष्य रहा हूं। उनके सान्निध्य में ही मैंने तन्त्र की कुछ ऐसी विशेष साधनाएं सिद्ध की थीं, जो मेरे जीवन की धरोहर हैं। उन्होंने ही एक बार चर्चा के दौरान बताया था कि तिब्बत के बौद्ध मठों में 'अखंडलक्ष्मी सिद्धि प्रयोग' से सम्बन्धित कोई ऐसी साधना है, जो अपने-आप में दुर्लभ और कठिन है। मुझे धुंधली-सी याद थी कि उन्होंने पांच-सात बौद्ध मठों का जिक्र किया था, जिनमें ल्हून बौद्ध मठ का नाम भी था। यह संयोग ही था कि मैं इस आंधी-तूफ़ान में इस बौद्ध मठ में आ पहुंचा।

मेरे अत्यधिक अनुरोध करने पर और दो दिन तक तो सर्वथा भूख हड़ताल तथा जल का भी परित्याग कर देने पर मुझे ल्हून बौद्ध मठ के प्रधान लामा से मिलने का अवसर मिला। वास्तव में वह तन्त्र के साक्षात स्वरूप थे और उनके पास असीम सिद्धियां थीं। मैंने उनसे तन्त्र के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासाएं रखीं और तभी मुझे पूज्य गुरुदेव का कथन स्मरण हो आया कि शायद यह दुर्लभ साधना पद्धति इन लामा महोदय को ज्ञात हो। मैंने डरते-झिझकते इस गोपनीय विधि के बारे में चर्चा की, तो उन्होंने दो क्षण के लिए मेरे चेहरे की ओर ताका और फिर अन्दर से छोटी-सी हस्तलिखित पुस्तिका लाकर मेरे सामने रख दी, जिसमें इस पद्धति का पूर्ण विवरण था।

साधना समय

यह साधना वर्ष में मात्र दीपावली के अवसर पर ही सम्पन्न की जा सकती है और यह पांच दिन की साधना है।

साधना मुहूर्त

यह पांच दिन की साधना है, जो दीपावली के दो दिन पहले से प्रारम्भ होती है और दीपावली के दो दिन बाद तक चलती है। इस प्रकार यह प्रत्येक वर्ष

कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतीया तक रहती है। इस अवधि में यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधना कैसे करें

यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर में सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में नित्य केवल तीन घंटे देने होते हैं।

साधना विधि

प्रातःकाल उठकर स्नान कर सफेद आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुंह कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस साधना में स्फटिक या हक़ीक़ माला का प्रयोग किया जाता है, इस माला की विशेषता यह होनी चाहिए कि इस माला का प्रयोग किसी अन्य साधना में नहीं किया हुआ हो। इस माला से केवल इसी साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

इसमें घी का दीपक और तेल का दीपक जलता रहना चाहिए। साधक स्वयं सफ़ेद धोती और सफ़ेद वस्त्र धारण करके बैठे और नित्य ग्यारह माला मन्त्र जाप आवश्यक है। यह साधना प्रातःकाल या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

साधना काल में साधक के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, ज़मीन पर सोवे, वह जिस प्रकार से चाहे, अपनी दिनचर्या व्यतीत कर सकता है।

साधना सामग्री

इस साधना में नौ महत्त्वपूर्ण वस्तुओं की ज़रूरत होती है, जो सभी पवित्र, दिव्य और अखंड लक्ष्मी मन्त्र से सिद्ध हों। मैं एक बार फिर दोहरा रहा हूं कि प्रत्येक सामग्री अखंड लक्ष्मी प्रयोग से सिद्ध हो, तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

1. भगवती महालक्ष्मी का प्रामाणिक, दिव्य और मन्त्रसिद्ध चित्र।
2. सहस्र सिद्धि अखंड लक्ष्मी यन्त्र (जो तावीज़ से वेष्टित हो)

3. लघु नारियल जो विशिष्ट कुबेर मन्त्र से सिद्ध हो।

4. तीन हक़ीक़ पत्थर— (i) महालक्ष्मी, (ii) अखंड लक्ष्मी और (iii) सौभाग्य लक्ष्मी मन्त्रों से पूर्ण चैतन्य हों।

5. गोमती चक्र, जो रावणकृत कुबेर साधना से सिद्ध हो।

6. हक़ीक़ माला, जिसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मन्त्र से चैतन्य हो। यह अस्सी दानों से एक सौ दस दानों की हो सकती है।

7. कल्प वृक्ष मुद्रिका, जो प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ति के लिए रावणकृत प्रयोग से सिद्ध हो।

8. ऋद्धि-सिद्धि पारद गुटिका, जो समस्त दुख-दरिद्रता को समाप्त करने में समर्थ हो।

9. मनोकामनापूर्तियुक्त बिल्ली की नाल, जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में सिद्ध चैतन्य हो।

अन्य सामग्री

इसके अलावा कुछ अन्य सामग्री पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए — 1. आसन, 2. जलपात्र, 3. कुंकुम, 4. चावल, 5. पुष्प, 6. घी का तथा तेल का दीपक, 7. दूध का बना हुआ नैवेद्य।

साधना प्रयोग

प्रातःकाल स्वयं या अपनी पत्नी के साथ शुद्ध शान्त चित्त से आसन पर बैठ जाएं और सामने सारी सामग्री रख दें। भगवती महालक्ष्मी के चित्र को पहले से ही कांच के फ्रेम में मढ़वाकर और हक़ीक़ की माला से मन्त्र जाप सम्पन्न किया जाएगा। इसके अलावा सारी सामग्री किसी चांदी के या स्टील के पात्र में रख दें, फिर **महालक्ष्म्यै नमः** शब्द का उच्चारण करते हुए इस सारी सामग्री को जल से स्नान कराएं, फिर कच्चे दूध से धोएं और पुनः जल से या गंगाजल से धोएं, फिर सबको पोंछकर चांदी, स्टील या तांबे के पात्र में स्थापित कर दें और सब पर कुंकुम या केसर का तिलक करें, फिर इत्र छिड़कें, पुष्प चढ़ाएं

और अगरबत्ती जलाएं, कपूर से लक्ष्मी की आरती करें, इसके बाद हक़ीक़ माला से मन्त्र जाप सम्पन्न करें। यह ग्यारह माला मन्त्र जाप आवश्यक है। पांचों दिन के लिए अलग-अलग मन्त्र हैं।

तिब्बती मन्त्र

प्रथम दिन	**ओऽम् ह्रीं मणिभद्रे हुं।**
दूसरे दिन	**ओऽम् ऐं विराट देव्यै हुं।**
तीसरे दिन	**ओऽम् श्रीं तैवांग भद्रे हुं।**
चौथे दिन	**ओऽम् ऐं श्रीं तनत्वयै फट्।**
पांचवें दिन	**ओऽम् ऐं ह्रीं सवसेव्यै हुं।**

सामग्री उपयोग

साधना सम्पन्न करने के बाद यहां से जो सामग्री भेजी जाएगी, उसका प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए — 1. भगवती महालक्ष्मी के प्रामाणिक चित्र को पूजा स्थान में ही रहने दें, 2. सहस्र सिद्धि अखंड लक्ष्मी यन्त्र पीले धागे में डालकर एक महीने तक अपने गले में धारण किए रहें, 3. कभी-कभी साधना के समय हक़ीक़ माला को धारण कर लें, 4. इसके अलावा बाक़ी सारी सामग्री कार्तिक पूर्णिमा तक पूजा स्थान में ही रहने दें; और इसके दूसरे दिन या तो पूजा में ही रखी रहे या पीले वस्त्र में लपेटकर घर में पवित्र स्थान में रख दें।

अपराजिता सिद्धि

समय के परिवर्तन और चारों तरफ़ के वातावरण से बालकों में कुसंस्कार और कुबुद्धि व्याप्त हो गई है। सिनेमा देखकर, घर-घर में टी.वी. पर असंस्कारित चित्र देखकर बालक कुछ ही समय में धनवान बनना चाहते हैं। मन में स्थिरता, संयम, सन्तोष और धैर्य आने की बजाय उनमें चंचलता तथा कुसंस्कार ज़्यादा व्याप्त होने लगे हैं।

ऐसी स्थिति में पढ़ाई की तरफ़ ध्यान देने, ज़्यादातर गन्दे और असभ्य दोस्तों की संगति में रहने, ग़लत आचरण और लड़कियों से छेड़-छाड़ करने से उनका मन दूषित हो जाता है। साथ ही जब उसे टोका जाता है या मां-बाप प्रताड़ना देते हैं, तो ऐसे बालक घर से भाग जाते हैं।

यही हाल लड़कियों का हो रहा है। छोटी उम्र में इन चलचित्रों की वजह से उनके मानस में सुख और भोग प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत हो जाती है और वे छिपकर ग़लत लड़कों की संगति में पड़ जाती हैं। ऐसी स्थिति में उनको न लोक-लाज का और न मर्यादा का ही ज्ञान रहता है और न अपने भविष्य का। जब उन पर माता-पिता सख़्ती करते हैं, तो वे घर से भाग जाती हैं और अपना जीवन बरबाद कर लेती हैं।

ये दोनों ही स्थितियां मां-बाप को कलंकित करने वाली और घोर कष्ट का कारण बन जाती हैं। वे अख़बारों में इश्तहार छपवाते हैं, कुटुम्बी जनों के यहां पूछ-ताछ करते हैं और चारों तरफ़ भटकते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें बालकों

के बारे में कोई पता नहीं चलता। इससे उनकी मानसिक शान्ति भंग हो जाती है, ज़रूरत से ज्यादा ख़र्च और तनाव भी व्याप्त हो जाता है।

ऐसी स्थिति के लिए शास्त्रों में और साधनाओं में अपराजिता सिद्धि साधना का वर्णन मिलता है। आज के युग में इस साधना का विशेष महत्त्व है और इसके द्वारा उन बालकों का पता लगाया जा सकता है, जो घर से भाग गए हैं। उन लड़कियों को भी ढूंढ़कर लाया जा सकता है, जो ग़लत लड़कों के साथ भाग गई हैं या उन स्थानों का पता चल सकता है, जहां वे होते हैं।

यद्यपि इस साधना को सिद्ध करना अत्यधिक कठिन है, परन्तु यदि यह साधना एक बार सिद्ध हो जाती है, तो सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं।

इस साधना के दो भाग हैं — एक तो साधक इसे सिद्ध कर ले और अपराजिता देवी के माध्यम से उस खोए हुए बालक का पता लगाए अथवा कुछ दिनों के लिए अपराजिता मन्त्र-स्तोत्र का नियमित तीन दिनों तक पाठ करे, तो बालक का पता चल जाता है और वहां जाकर उसे लाया जा सकता है।

इस सम्बन्ध में कई विचित्र अनुभव हैं, जिन पर विचार करना भी उचित है। कई बार खोया हुआ बालक ग़लत लोगों के हाथों में पड़ जाता है। वे असामाजिक तत्त्व उस बालक को अपने चंगुल से छूटने नहीं देना चाहते। इस मन्त्र के प्रभाव से जब उसका मानस बदलने लगता है, तो वे असामाजिक तत्त्व उस बालक पर घेरा ज़्यादा कस लेते हैं और कई बार तो उन लोगों के भेद दूसरों को ज्ञात न हो जाएं, इसलिए उसकी हत्या भी कर डालते हैं।

इस सम्बन्ध में दूसरों की सहायता भी नुक़सानदायक होती है, क्योंकि वे सहायक ही उन असामाजिक तत्त्वों से मिलकर उन्हें जानकारी दे देते हैं और वे उस बालक को और कहीं अन्य स्थान पर लेकर चले जाते हैं या मार डालते हैं।

ऐसी स्थिति में प्रयोग करने वाले साधक को संयम का प्रयोग करना चाहिए। मां-बाप अपने खोए हुए बालक को प्राप्त करने के लिए ज़रूरत से

ज़्यादा उतावले होते हैं और वे चाहते हैं कि दो-चार दिन में ही बालक घर आ जाए। यद्यपि इस प्रयोग के माध्यम से घर आने की प्रक्रिया तो उसके मानस में बन जाती है, उसका मानस परिवर्तन भी हो सकता है और वह घर आने का उपक्रम भी करने लग जाता है, परन्तु साधक को चाहिए कि धीरे-धीरे वह परिस्थितियों को साधना के द्वारा जानकर उस बालक को उन असामाजिक तत्त्वों के चंगुल से निकाले। ऐसी स्थिति होने पर कुछ समय अवश्य लग सकता है, परन्तु इसमें बालक सुरक्षित रूप से घर पहुंच जाता है।

कई बालक ग़लत साधु-संन्यासियों के हत्थे चढ़ जाते हैं और जब साधक को यह ज्ञान होता है कि अमुक साधु वहां पर है और उसके पास वह बालक है, तो मां-बाप या अभिभावक सीधे उस साधु के यहां जा धमकते हैं। कई बार ऐसे साधु अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए या बदनामी न होने देने के लिए बालक को मारकर जंगल में फेंक देते हैं।

कई लड़कियां असामाजिक तत्त्वों के प्रेमजाल में फंसकर घर से भाग खड़ी होती हैं और कुछ महीनों के बाद असामाजिक तत्त्व उसे दलालों के हाथ बेच डालते हैं। अन्ततः वे वेश्यालयों में पहुंच जाती हैं, वहां पर ज़रूरत से ज़्यादा कड़ा पहरा उन पर होता है और वे चाहते हुए भी वहां से बाहर नहीं निकल पातीं। ऐसी स्थिति में भी साधक के सामने कई समस्याएं उठ खड़ी होती हैं।

अपराजिता स्तोत्र मन्त्र सिद्ध करने पर उससे खोए हुए बालक का पता चल जाता है और ऐसी स्थिति में उनके अभिभावकों को यह बता देते हैं कि अमुक बालक या बालिका कहां पर और किस हालत में है।

इस साधना का इतना ही महत्त्व है, पर यदि उन बालकों या बालिकाओं को सकुशल घर लाना है, तो इसमें पांच बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है –

1. बालक या बालिका के दिमाग़ को मन्त्रों के द्वारा परिवर्तित करना है, जिससे कि उनमें घर आने की चाह उत्पन्न हो और वह प्रयत्नशील हो।
2. भैरवी प्रयोग से असामाजिक तत्त्वों को निस्तेज कर दिया जाए, जिससे उस बालक या बालिका को वहां से भागने का अवसर मिल सके।

3. प्रत्यंगिरा साधना के माध्यम से ऐसे वातावरण की सृष्टि कर दी जाए कि वह बालक या बालिका उन असामाजिक तत्त्वों से सकुशल बाहर निकल सके। उनके शरीर को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचे।
4. कात्यायिनी साधना के माध्यम से उस वातावरण को बनाया जाए कि घर आने पर भी वह सकुशल रहे और असामाजिक तत्त्व अपने गोपनीय रहस्यों को उजागर होने की चिन्ता में उस बालक या बालिका की हत्या न कर दें।
5. चंडिका साधना के माध्यम से आगे के समय में वह बालक या बालिका शुद्ध चित्त और मन से माता-पिता की आज्ञा का पालन कर सके और साथ ही उसका जीवन सुखमय हो सके।

ऊपर पांचों प्रयोगों को समझाने की कोशिश की है। ये प्रयोग कुछ ही दिनों में सम्पन्न किए जा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वह साधक या जानकार व्यक्ति इन पांचों विद्याओं में पारंगत हो और सूक्ष्म दृष्टि से बराबर ध्यान रखे कि किस समय, किस अवसर पर उस बालक को वहां से निकालने की भावना का संचार करना है। किस समय उसे मन्त्रों के द्वारा प्रेरित करना है कि वह वहां से बाहर निकल सके और उनके चंगुल से मुक्त हो सके, किस समय किस रास्ते से उसको घर पहुंचने के मार्ग की पहचान का अहसास दिया जाए, जिससे वह आसानी से घर पहुंच सके। इन सबके लिए समय निर्धारण और काल चिन्तन का विशेष महत्त्व है। कभी-कभी ऐसी प्रक्रिया में कुछ महीने भी लग जाते हैं, परन्तु माता-पिता को चाहिए कि ऐसे मामलों में अधीर न हों, अपितु शान्ति से प्रतीक्षा करें, क्योंकि उतावलेपन में खोए हुए बालक या बालिका का पता तो चल सकता है, मगर उसकी हत्या होने की भी सम्भावना हो जाती है और ऐसी स्थिति में उनके हाथ कुछ भी नहीं लगता।

अपराजिता साधना

इस साधना द्वारा केवल बालक का पता चल सकता है कि वह जीवित है या मृत्यु को प्राप्त हो गया है। यदि जीवित है, तो कहां पर है और किस स्थिति

में है। इतनी जानकारी ही इस साधना से प्राप्त हो सकती है, परन्तु यह जानकारी भी बहुत महत्त्व की है, क्योंकि इससे माता-पिता को यह पूर्ण सन्तोष हो जाता है कि मेरा बालक जीवित है और सकुशल है। साथ ही इस साधना द्वारा खोई हुई वस्तु का पता लगाना, चोर के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेना कि अमुक के घर में चोरी किसने की है और अब वह कहां पर है, इसके अलावा अन्य कई रहस्य भी ज्ञात किए जा सकते हैं।

अपराजिता साधना रहस्य

इस साधना को सिद्ध करने के लिए निम्न पांच तथ्यों का पालन आवश्यक है –

1. यह किसी भी अष्टमी या चतुर्दशी से प्रारम्भ की जानी चाहिए।
2. यह रात्रिकालीन साधना है। अतः रात को पीला आसन बिछाकर, पीली धोती पहनकर, सामने तेल का दीपक जलाकर अपराजिता देवी का यन्त्र स्थापित कर हक़ीक़ माला से स्तोत्र मन्त्र के इक्यावन पाठ आवश्यक हैं।
3. यह ग्यारह दिन की साधना है और नित्य इक्यावन पाठ होने आवश्यक हैं।
4. साधना सम्पन्न होने पर वह यन्त्र अपने गले में पहन लें या बांह पर बांध लें, ऐसा होने पर अपराजिता देवी सिद्ध हो जाती है।
5. साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, भूमि शयन करें और एक समय ही भोजन करें।

अपराजिता स्तोत्र मन्त्र

यइमामपराजितां अप्रतिहतां परम वैष्णवी पठति, सिद्धां महाविद्या जपति पठति शृणोति स्मरति ध्यायति कीर्तयति वा न तस्याग्नि भयं वायु वज्रोपलाशनी वर्षा–वर्ष भयं न समुद्र भयं वा नव–ग्रह भयं न सर्व चौर भयं

न श्वापद भयं वा न भवेत्। क्वचिद्रात्रयन्धकार–स्त्री राज–कुल–विष–विषोप–गर–गरद–वशीकरण–विद्वेषणोच्चा–टन मारण–मोहन–स्तम्भन–वध–बन्धन–भयं वा न भवेत्। एतैमन्त्रैह्रद्–गतैश्च सिद्धः संसिद्धि–पूजितै ओऽम् आं ह्रीं क्रीं नमस्ते स्तु अभये अनद्ये अजिते अमितं अमृते अपरे अपरा–जिते श्रीपठित–सिद्धे स्मरति–सिद्धं एको नाशीति–तमे उर्मे ध्रुवे अरुन्धती गायत्री सावित्री जात–वेदसि मानस्तोके सरस्वती धरणी धारिणी सौदामिनी अदिते दिते विनिते गौरी गान्धारी मातंगी कृष्णे यशोदे समुद्रे सत्य–वादिनी ब्रह्म–वादिनी काली कपाली पंचाली काली–महाकाली नित्य भद्रे महेन्द्र महाराजिनी सार्व–भौम–चक्रवर्तिनी सर्व–दुष्ट शमनी सर्व दुःख विनाशिनी सर्व दारिद्र्य प्रशमनी अपमृत्यु–महा–मृत्यु–निवारिणी इन्दिरा कमला लक्ष्मी पद्मै पद्मावती नारायणी सत्योपाय–प्रकाशिनी स्थल–गतं जल–गतं अन्तरिक्ष–गतं वा मा रक्ष–रक्ष सर्वा–पद्रवेभ्यः स्वाहा।

उपर्युक्त साधना क्रम उनके लिए है, जो अपराजिता साधना सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा करने पर उन्हें किसी भी बालक या बालिका का फ़ोटो देखने पर मन्त्र का मात्र एक बार उच्चारण कर देने से ही उसके बारे में ज्ञात हो जाता है कि वह बालक कहां पर और किस स्थिति में है।

साधना क्रम

जो व्यक्ति इस साधना को सिद्ध करना चाहते हैं, उनके लिए भी यह प्रयोग उपयोगी हो सकता है। जिस किसी व्यक्ति का बालक खो गया है और उसके बारे में पता नहीं चल रहा है, तो किसी भी अष्टमी को अपने सामने अपराजिता यन्त्र रखकर पांच तेल के दीपक जला लें और इस स्तोत्र मन्त्र का मात्र पांच बार उच्चारण करें।

इस प्रकार नित्य करे, तो चौदह दिनों में व्यक्ति को स्वयं बालक के बारे में स्वप्न में जानकारी प्राप्त हो जाती है और उस स्थान का दृश्य या बिम्ब जाग्रतावस्था में या स्वप्न में स्पष्ट हो जाता है।

उसे मन्त्रों के द्वारा घर पर बुलाने के अलावा अन्य पांच साधनाएं सम्पन्न करना आवश्यक होती हैं, जिनके साथ चेतना प्रयोग, भैरवी प्रयोग, कात्यायिनी प्रयोग और चंडिका प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, जिससे उस बालक के चारों तरफ़ की समस्याएं दूर हो सकें और वह बालक सकुशल घर आ सके।

पारद शिवलिंग साधना

शिवरात्रि भगवान शिव का प्रिय दिन है। इससे पांच रोज़ पूर्व उच्चकोटि के योगी, साधक, शिष्य और गृहस्थ एक अद्वितीय साधना सम्पन्न करते हैं। वह 'पारद शिवलिंग साधना' कही जाती है। इस साधना को सम्पन्न करने पर जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। आश्चर्य तो इस बात का है कि साधना भली प्रकार से सम्पन्न होते ही उसका आश्चर्यजनक फल उसी क्षण से साधक को मिलने लग जाता है।

चाहे आर्थिक उन्नति हो, चाहे व्यापार वृद्धि, चाहे रोग मुक्ति हो, चाहे पारिवारिक समस्या— सभी कार्यों के लिए यह साधना सर्वश्रेष्ठ एवं अद्वितीय कही गई है। पूरे वर्ष में केवल एक बार इस साधना को सम्पन्न करने का अवसर आता है और जो इस अवसर को चूक जाता है, वह पछताकर रह जाता है।

साधना सामग्री

मन्त्र सिद्धि प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पारद शिवलिंग या लघु पारद शिवलिंग, प्रभंजन गुटिका, तीन रुद्राक्ष के दाने।

इसके अलावा कुंकुम, जलपात्र, दीपक और अगरबत्ती की आवश्यकता होती है।

साधना कैसे करें

शिवरात्रि के दिन उपर्युक्त सामग्री मंगवाकर रख लेनी चाहिए। इसमें मूंगे की या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग होता है। रुद्राक्ष की माला ज्यादा फलप्रद है। अतः पारद शिवलिंग, प्रभंजन गुटिका तथा तीन रुद्राक्ष के दाने प्राप्त कर लेने चाहिए। ये वस्तुएं मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त हों।

प्रातः उठकर स्नान कर पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाएं। सामने सफ़ेद वस्त्र बिछा दें और उस पर किसी चांदी, स्टील अथवा तांबे के पात्र में पारद शिवलिंग स्थापित कर दें। उसके सामने ही प्रभंजन गुटिका तथा तीनों रुद्राक्ष के दाने रख दें।

शुद्ध घृत का दीपक जला दें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दें, फिर केसर-कुंकुम से पारद शिवलिंग, प्रभंजन गुटिका तथा तीनों रुद्राक्ष के दानों पर तिलक करें तथा मन में संकल्प लें कि मैं अपने जीवन को पूर्ण भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

फिर एकनिष्ठ होकर रुद्राक्ष की माला से निम्न मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। यह रुद्राक्ष की माला चैतन्य प्राण-प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए। यदि रुद्राक्ष की माला न हो, तो मूंगे की माला का प्रयोग किया जा सकता है। यह मन्त्र जाप मात्र इक्कीस मालाएं नित्य होना चाहिए। इसमें लगभग तीन घंटे लगते हैं। इस प्रकार पांच दिन तक नित्य इक्कीस माला मन्त्र जाप होना चाहिए।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं तेजसेश्रीं कामसे क्रीं पूर्णत्व सिद्धि।
देहि परादाय क्रीं श्रीं ह्रीं ओऽम्॥

यह साधना प्रातः, दोपहर या रात्रि को किसी समय भी की जा सकती है। यदि ऐसा न हो सके, तो ग्यारह मालाएं दिन को तथा दस मालाएं रात को सम्पन्न कर इस साधना को पूर्णता दी जा सकती है।

यह साधना महाशिवरात्रि के दिन सम्पन्न होती है। इस दिन जब इक्कीस मालाएं पूरी हो जाएं, तो उसी दिन चांदी के तावीज़ में वह प्रभंजन गुटिका डालकर एक तरफ़ धागे में दो रुद्राक्ष के दाने तथा एक तरफ़ एक रुद्राक्ष का दाना पिरोकर वह माला के रूप में गले में धारण कर लें अथवा दाहिनी भुजा पर बांध लें। इसके लिए काले धागे का प्रयोग किया जा सकता है।

इस साधना को सम्पन्न कर आप जिस दिन से प्रभंजन गुटिका डालकर तावीज़ धारण करेंगे, उसी दिन से कार्य सिद्धि हेतु मार्ग प्रशस्त होने लगेगा और जीवन में सफलताएं मिलने लगेंगी, आवश्यकता इस बात की है कि यह साधना पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो।

ब्रह्मांड साधना

गुरुमुख से प्राप्त यह तान्त्रिक रहस्य पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है। ब्रह्मांड साधना से साधक असीम सिद्धियों का स्वामी हो जाता है और एक प्रकार से पूरा ब्रह्मांड उसकी मुट्ठी में आ जाता है।

ब्रह्मांड साधना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है और उच्चकोटि के योगी ही इसे सम्पन्न करते हैं। यह सिद्ध होने पर व्यक्ति को वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती है। वह किसी को भी कोई वरदान या श्राप देता है, तो वह वचन सिद्ध होता ही है। इसके अलावा सारे कार्य उसके मन के अनुकूल होते रहते हैं। स्वतः भोजन बनना, आगन्तुक व्यक्ति के मन की बात जान लेना किसी भी व्यक्ति या स्त्री को देखते ही उसके मन में क्या है, यह समझ लेना तथा आकस्मिक घटनाओं को भली प्रकार से जानने की क्षमता इस ब्रह्मांड साधना में है। यही नहीं, अपितु इस साधना के माध्यम से शून्य में से किसी भी प्रकार के पदार्थ को प्राप्त कर सकते हैं, नए पदार्थ का निर्माण कर सकते हैं और प्रकृति को अपने मनोनुकूल संचालित करने में समर्थ हो सकते हैं। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के बल पर ही यह साधना सम्पन्न होती है।

उपकरण

इसमें तीन प्रकार की सामग्री की आवश्यकता होती है —

1. शिवरात्रि को सिद्ध किया हुआ ऊर्ध्वाधर आकृति वाला 'ब्रह्मांड यन्त्र', 2. दीपावली की रात्रि को भगवती रति की प्राण-प्रतिष्ठायुक्त मातृका

यन्त्र तथा 3. रुद्राक्ष माला, जो लोम-विलोम गति में अनंग मन्त्र व रति मन्त्र से सम्पुटित हो एवं सुमेरु ओंकार संस्कार युक्त ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सरस्वती, लक्ष्मी तथा काली के तन्त्रोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित हो।

इसके अलावा केसर, जलपात्र, शुद्ध घृत का दीपक, लाल आसन, पहनने के लिए पीले वस्त्र, अक्षत, नारियल, पीले पुष्प, फल, प्रसाद, दूध, दही, शहद, शक्कर, लौंग, इलायची आदि।

प्रयोग विधि

यह साधना पांच दिन की है। सारी सामग्री पहले से ही मंगाकर अपने पूजा स्थान में रख लेनी चाहिए। सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चांदी की प्लेट या तांबे का पात्र रखना चाहिए। उसमें 'ब्रह्मांड यन्त्र' तथा 'रति सम्पुटित मातृका यन्त्र' स्थापित कर देना चाहिए, फिर उन्हें जल से अन्य पात्र में धोएं, तत्पश्चात दूध से, दही से, शुद्ध घी से, शहद से तथा शक्कर से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर शुद्ध वस्त्र से पोंछकर उस प्लेट में स्थापित कर दें और केसर घोंटकर तिलक करें, अक्षत चढ़ाएं, पुष्प रखें, सामने फल एवं प्रसाद का भोग लगाएं, अगरबत्ती जलाकर शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित कर दें, यह दीपक पांच दिन तक अखंड रूप से जलता रहे।

साधक पीली धोती पहनकर, उचित समझे तो दूसरी पीली धोती ओढ़कर पूर्व की या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाए। हाथ में जल लेकर अपना नाम उच्चरित करता हुआ संकल्प ले कि मैं समस्त ब्रह्मांड की सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए इस ब्रह्मांड साधना में प्रवृत्त हो रहा हूं। समस्त देवी, देवता, पितृ एवं पूर्वज मुझे शक्ति, साहस एवं सामर्थ्य प्रदान करें, जिससे कि मैं सफलता प्राप्त कर सकूं।

तत्पश्चात गुरु चित्र को स्थापित कर संक्षिप्त गुरु पूजन करें और उनसे मन-ही-मन अनुमति लेकर साधना प्रारम्भ करें।

साधना विधि

रुद्राक्ष माला जैसा कि मैंने ऊपर वर्णित किया है, वैसी ही चैतन्य रुद्राक्ष माला से ही सिद्धि प्राप्त होती है, उसके सुमेरु (मुख्य मनके) को तिलक करें और सफलता की कामना करें, तत्पश्चात उस माला को बाईं हथेली में लेकर दाहिनी हथेली उस पर ढक दें और 21 बार निम्न संजीवनी मन्त्र का उच्चारण करें –

संजीवनी मन्त्र

ओऽम् क्षौं श्रें अं कं चं टं तं पं यं शं क्षे क्षौ ओऽम्

संजीवनी मन्त्र का 21 बार उच्चारण करने के बाद पुनः सुमेरु का केसर से तिलक करें और फिर पूरी आस्था के साथ ब्रह्मांड मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दें –

ब्रह्मांड मन्त्र

ओऽम् ब्रं ब्रह्मांड क्षं त्रैलोक्य चराचर वशमानाया क्षं ब्रं ओऽम्॥

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, उसी क्रम के अनुसार माला मन्त्र का जाप करें। पूरे मन्त्र जाप में बीच में दो बार आधे-आधे घंटे का विश्राम चाहें तो कर सकते हैं।

समापन

साधना मन्त्र जाप पूरा होने पर जो दृश्य देखे हों या जो कुछ शक्ति प्राप्त हुई हो, उसे गुप्त रखें। समाप्ति के बाद कोई इच्छा व्यक्त करें या कोई वस्तु प्राप्त करने की इच्छा करें, यदि वह इच्छा या वस्तु प्राप्त हो जाए, तो संयत एवं शान्त बने रहें। सिद्धियों का प्रदर्शन ज़्यादा उचित नहीं होता।

फिर सायंकाल परिवार के साथ भोजन करें। बहन, बेटी आदि को यथोचित वस्त्र या अन्य उपहार दें।

नियम

1. पूरे साधनाकाल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें और साधना के अलावा अन्य व्यावसायिक कार्यों में भाग न लें।
2. साधना स्थल या जहां आप बैठकर साधना करते हैं, वहां आपके अलावा और कोई न जाए।
3. एक समय भोजन करें और सात्विक आहार लें।
4. यदि साधनाकाल में कोई चमत्कार या अनुभूतियां हों, तो बयान न करें, गुप्त रखें।
5. सर्वथा स्वस्थ व संयत बने रहकर साधना को सम्पन्न करें।

उपसंहार

जीवन में ऐसे अवसर या मुहूर्त भाग्य से ही प्राप्त होते हैं, अतः पूरी निष्ठा, श्रद्धा एवं विश्वास के साथ साधना को प्राप्त करें।

महाकाली साधना

दस महाविद्याओं में श्रेष्ठ महाकाली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायक एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक है। जब जीवन के प्रबल पुण्योदय जाग्रत होते हैं, तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता महिषासुर मर्दिनी, वाक् सिद्धि प्रदायक महाकाली की साधना में रत हो सकता है।

जो साधक इस साधना एवं सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। भोग, मोक्ष दोनों में समान रूप से सम्पन्नता प्राप्त कर वह जीवन में सौ दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

संसार में सैकड़ों-हज़ारों साधनाएं हैं, परन्तु हमारे महर्षियों ने इन सभी साधनाओं में दस महाविद्याओं की साधना को प्रमुखता और महत्त्व दिया है, जो साधक अपने जीवन में जितनी ही ज़्यादा महाविद्या साधनाएं सम्पन्न करता है, वह उतना ही श्रेष्ठ साधक बन सकता है, परन्तु बिना भाग्य के इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण साधनाओं को सिद्ध करने का अवसर नहीं मिलता।

दस महाविद्याओं में भी काली महाविद्या सर्वप्रमुख, महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय कही गई है, क्योंकि यह त्रिवर्गात्मक महादेवियों — महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली में सर्वप्रमुख हैं। शास्त्रों के अनुसार मात्र काली की साधना से ही जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति और मनोवांछित फल प्राप्ति सम्भव होती है। इस सम्बन्ध में यदि हम साधनात्मक ग्रन्थों को टटोलकर देखें, तो

लगभग सभी योगियों, संन्यासियों, विचारकों, साधकों और महर्षियों ने एक स्वर से काली साधना को प्रमुखता और महत्त्व प्रदान किया है। नीचे उनमें से कुछ विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं —

कलियुग में काली साधना के समान अन्य कोई साधना नहीं कही जा सकती, दुर्भाग्यशील साधक ही अपने जीवन में ऐसी साधना सम्पन्न नहीं कर पाते।

— महर्षि वसिष्ठ

यदि जीवन में अवसर मिल जाए, तो प्रयत्न करके भी काली साधना सम्पन्न करनी चाहिए। यदि साधक ऐसा अवसर आने पर चूक जाता है, तो उसके समान कोई दुर्भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता।

— गुरु गोरखनाथ

मैंने साधनाएं तो हज़ार सिद्ध की हैं, परन्तु काली साधना के समान और कोई साधना नहीं, वचन सिद्धि एवं सफलता के लिए यह अद्वितीय साधना है।

— त्रिजटा अघोरी

महत्त्व

दस महाविद्याओं में प्रमुख शीघ्र फलदायक होने के कारण पिछले हज़ारों वर्षों से असंख्य साधक इस साधना को सम्पन्न करते आए हैं और उनके मन में यह तीव्र लालसा रहती है कि अवसर मिलने पर किसी प्रकार से काली साधना सम्पन्न कर ली जाए। इस साधना से अगणित लाभ हैं, फिर भी जिन साधकों ने काली को सिद्ध किया है, उनके अनुसार निम्न तथ्य तो साधना सम्पन्न करते ही प्राप्त हो जाते हैं —

अथ कालीमन्त्रये सद्योवाक्सिद्धिप्राप्यवान्।
आरावितैर्यः सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुविः॥

अर्थात काली साधना से तुरन्त वाक् सिद्धि प्राप्त होती है (जो भी कहा जाए, वह सिद्ध हो जाए) तथा साधक इस लोक में समस्त मनोवांछित फल प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

1. इस साधना को सिद्ध करने से व्यक्ति समस्त रोगों से मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ, सबल एवं सक्षम होता है।

2. यह साधना जीवन के समस्त भोगों को दिलाने में समर्थ है। साथ ही काली साधना से साधक मृत्यु को जीतकर पूर्ण स्वस्थ, प्रबल एवं सक्षम होता है।
3. शत्रुओं का मान मर्दन करने, उन पर विजय पाने, मुक़दमे में सफलता और पूर्ण सुरक्षा के लिए इससे बढ़कर और कोई साधना नहीं।
4. इस साधना से दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या सिद्ध होती है, जिससे सिद्धाश्रम जाने का मार्ग प्रशस्त होता है।
5. इस साधना की सिद्धि से तुरन्त आर्थिक लाभ और प्रबल पुरुषार्थ प्राप्ति सम्भव होती है।
6. 'काली पुत्रो फलप्रद' के अनुसार काली साधना योग्य पुत्र देने व पुत्र की उन्नति, उसकी सुरक्षा और उसे पूर्ण आयु प्रदान करने के लिए श्रेष्ठ कही गई है।

सरल साधना

यद्यपि महाकाली साधना महाविद्या साधना है और महाशक्ति की आधारभूत महाविद्या है, फिर भी यह मन्त्रात्मक साधना होने के कारण अनुकूल शीघ्र प्रभावोत्पादक है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। इसे कोई भी गृहस्थ कर सकता है। योगी और संन्यासी तो कर ही सकते हैं। जो थोड़ा-बहुत भी पढ़ा-लिखा है, अपने जीवन के अभावों को दूर करना चाहता है, उसके लिए यह स्वर्णिम अवसर है। वह नवरात्रि का लाभ उठाकर महाकाली साधना सम्पन्न करे।

प्रत्यक्ष दर्शन

सबसे बड़ी बात यह है कि नवरात्रि में महाकाली साधना करने पर इससे प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव होते हैं, यदि साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ इस साधना को सम्पन्न करे। कई साधकों ने इस बात का अनुभव किया है कि श्रद्धा और विश्वास के साथ यह साधना सम्पन्न होते-होते दर्शन हो जाते हैं। यह कलियुग में हम लोगों का सौभाग्य है कि इस प्रकार की साधना हमारे बीच

है, जिससे भगवती काली के प्रत्यक्ष दर्शन कर हम अपने जीवन को धन्य कर सकें।

शीघ्र प्रभाव

साधनात्मक दृष्टि से यह साधना यदि पूर्ण मनोनुकूल अवस्था में सम्पन्न की जाए, तो इसके शुभ एवं शीघ्र प्रभाव प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। इसके लिए मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त महाकाली यन्त्र और पूर्ण चैतन्य महाकाली चित्र सामने रखकर साधना करनी चाहिए, इसके अभाव में साधना पूर्ण सफलतादायक नहीं होती।

प्रयोग

प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर पूर्व की ओर मुंह करके शुद्ध घृत का दीपक जलाकर तथा महाकाली यन्त्र व चित्र को स्थापित कर उसकी पूजा करें। इसके पूर्व गणपति और गुरु पूजा आवश्यक है।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर हिन्दी में ही संकल्प किया जा सकता है कि मैं अमुक तिथि तक एक लाख मन्त्र जाप अमुक कार्य के लिए कर रहा हूं। आप मुझे शक्ति दें, जिससे कि मैं अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर सकूं, ऐसा कहकर हाथ में लिया हुआ जल छोड़ देना चाहिए। इसके बाद नित्य संकल्प करने की ज़रूरत नहीं है।

फिर निम्नलिखित मन्त्र उच्चारण करें —

शवारूढाम्महाभीमांग्घोरदंष्ट्रा हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजांषड्मुंडवराभयकरां शिवाम्॥1॥
मुंडमालाधरांदेवीं लोलजिह्वांदिगम्बराम्।
एवं सचिन्तयेत्काली श्मशानालयवासिनी॥2॥

ध्यान के बाद निम्नलिखित मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। इस मन्त्र की रुद्राक्ष से नित्य एक सौ पचास मालाएं सम्पन्न होनी चाहिए —

क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिणे कालिके
क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा।

स्वप्नेश्वरी साधना

यह साधना प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है। जो साधक ऊंचे स्तर की साधना नहीं कर पाते या जिन्हें इतना अवकाश नहीं मिलता, उन्हें स्वप्नेश्वरी साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे वे जीवन में स्वयं का तथा दूसरे लोगों का कल्याण कर सकें।

इस साधना के लिए मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त स्वप्नेश्वरी यन्त्र तथा स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र आवश्यक है। यह यन्त्र तांबे के पतरे पर या चांदी के पतरे पर बना हुआ हो। स्वप्नेश्वरी देवी के चित्र को फ्रेम में मढ़वाकर रख लेना चाहिए तथा उस चित्र यन्त्र को मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त चैतन्य कर देना चाहिए, जिससे कि उसका प्रभाव मिल सके। यदि अपने शहर में योग्य पंडित हो तो प्राण-प्रतिष्ठा की जा सकती है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व चावल, कुंकुम या केसर, जल का लोटा, दीपक, अगरबत्ती पहले से ही तैयार करके रख देनी चाहिए। यह साधना सोमवार से प्रारम्भ की जाती है। यह मात्र पांच दिन की साधना है। इससे नित्य 101 मालाएं फेरनी आवश्यक हैं। इस साधना में हक़ीक़ माला का ही प्रयोग किया जाता है। अन्य मालाएं वर्जित हैं। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी की जा सकती है। साधक चाहे तो पचास मालाएं दिन को तथा इक्यावन मालाएं रात्रि को भी फेर सकता है। इस प्रकार दिन-रात में दो बार पूर्ण जाप हो जाना चाहिए।

सोमवार को साधक स्नान कर धोती पहनकर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाए। सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दे और उस पर स्वप्नेश्वरी देवी का यन्त्र व स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र स्थापित कर दे। इसके बाद अलग बर्तन में स्वप्नेश्वरी देवी के यन्त्र को जल से, फिर कच्चे दूध से तथा फिर जल से धो-पोंछकर बाजोट पर रख दे। किसी पात्र में यन्त्र को स्थापित कर दे। यह पात्र ताम्बे का, स्टील या चांदी का हो सकता है, फिर कुंकुम या केसर से तिलक करे। सामने अगरबत्ती व दीपक जलाए, दूध का बना प्रसाद चढ़ाए और फिर एकनिष्ठता से ध्यान करे —

ध्यान

स्वप्नेश्वरी नमस्तुभ्यं फलाय वरदाय च।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शयः ॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र की एक सौ एक मालाएं नित्य जपें —

मन्त्र

ओऽम् क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं स्वप्नेश्वरी ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ओऽम्

इस प्रकार नित्य एक सौ एक मालाएं मन्त्र जाप करे। पांच दिनों तक साधक ज़मीन पर सोए, एक समय भोजन करे।

पांच दिन तक मन्त्र जाप के बाद छठे दिन इसी मन्त्र की मात्र शुद्ध घृत से एक हज़ार आहुतियां दे, फिर पांच कुमारी कन्याओं को भोजन कराए तथा उन्हें यथोचित वस्त्र दान आदि देकर सन्तुष्ट करे। इस प्रकार करने पर साधना सम्पन्न मानी जाती है।

प्रयोग

जब भी कोई समस्या आपके सामने हो और उसका हल नहीं मिल रहा हो, तो इस प्रकार मन्त्र जाप किया हुआ साधक इस समस्या को काग़ज़ पर लिख ले और रात्रि को सिरहाने रखकर सो जाए। रात्रि को स्वप्नेश्वरी देवी स्वप्न में ही इस समस्या का हल स्पष्ट रूप से बता देती है, जिससे कि साधक को निर्णय करने में आसानी होती है।

साधक चाहे तो किसी भी व्यक्ति की समस्या इसी प्रकार हल कर सकता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति का प्रमोशन किस तारीख़ को होगा या मैं अमुक व्यक्ति के साथ जो लेन-देन कर रहा हूं, वह ठीक रहेगा या नहीं – ऐसे प्रश्न स्पष्ट रूप से काग़ज़ पर लिख लेने चाहिए और अपने सिरहाने रात्रि को सोते समय रख लेने चाहिए। तत्पश्चात स्वप्नेश्वरी देवी को मन-ही-मन प्रणाम कर सो जाना चाहिए, ऐसा करने पर उसे रात्रि को ही स्वप्न में उसका प्रामाणिक हल मिल जाता है।

●●●

तन्त्र साधनाएं

तन्त्र साधनाएं व सिद्धियां भी कल्याणकारी होती हैं, ऐसा लाखों लोगों को विश्वास है। 'तन्त्र मन्त्र यन्त्र विज्ञान' शताब्दियों से प्रचलित है। साधक, साधु, सन्त, संन्यासी और योगी इस विद्या को समय-समय पर मानव-मात्र की उन्नति, सम्पन्नता, वैभव, सुख, शान्ति और निरोग जीवन के लिए सिद्ध करते रहे हैं। उन्होंने इसे प्रामाणिकता प्रदान की।

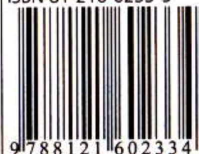
तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ और ज्योतिषाचार्य डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली की इस पुस्तक में तारा महाविद्या साधना, अन्नपूर्णा सिद्धि, श्री बटुक भैरव प्रयोग से लेकर ब्रह्मांड साधना, महाकाली साधना जैसी अनेक विधियां दी गई हैं।

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली इस विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। उन्हीं की अत्यधिक उपयोगी कृति है यह। उन्होंने सरल-सुबोधन ढंग से और रोचक भाषा-शैली में रचा है इसे, ताकि सामान्य व्यक्ति भी उनके अनुभूत प्रयोगों को सीख सके और अपने घर-परिवार, समाज व देश की निःस्वार्थ भाव से कल्याण कर सके।

Rs. 125
तन्त्र–मन्त्र (TANTRA-MANTRA)


हिन्द पॉकेट बुक्स
AHW HPB HINDI SERIES

Please visit
www.atfullcircle.com
www.hindpocketbooks.co.in

ISBN 81-216-0233-5


Rs. 125
